मिथिलाक विभूति

ललित नारायण मिश्र

𑒪𑒪𑒱𑒞 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

डा. मदनेश्वर मिश्र



मैथिली अकादमी, पटना

मिथिला-विभूति

ललित नारायण मिश्र

लेखक

डॉ० मदनेश्वर मिश्र

परामर्शी, समग्र ग्रामीण विकास, विहार; अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना;
भूत पूर्व कुलपति, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।



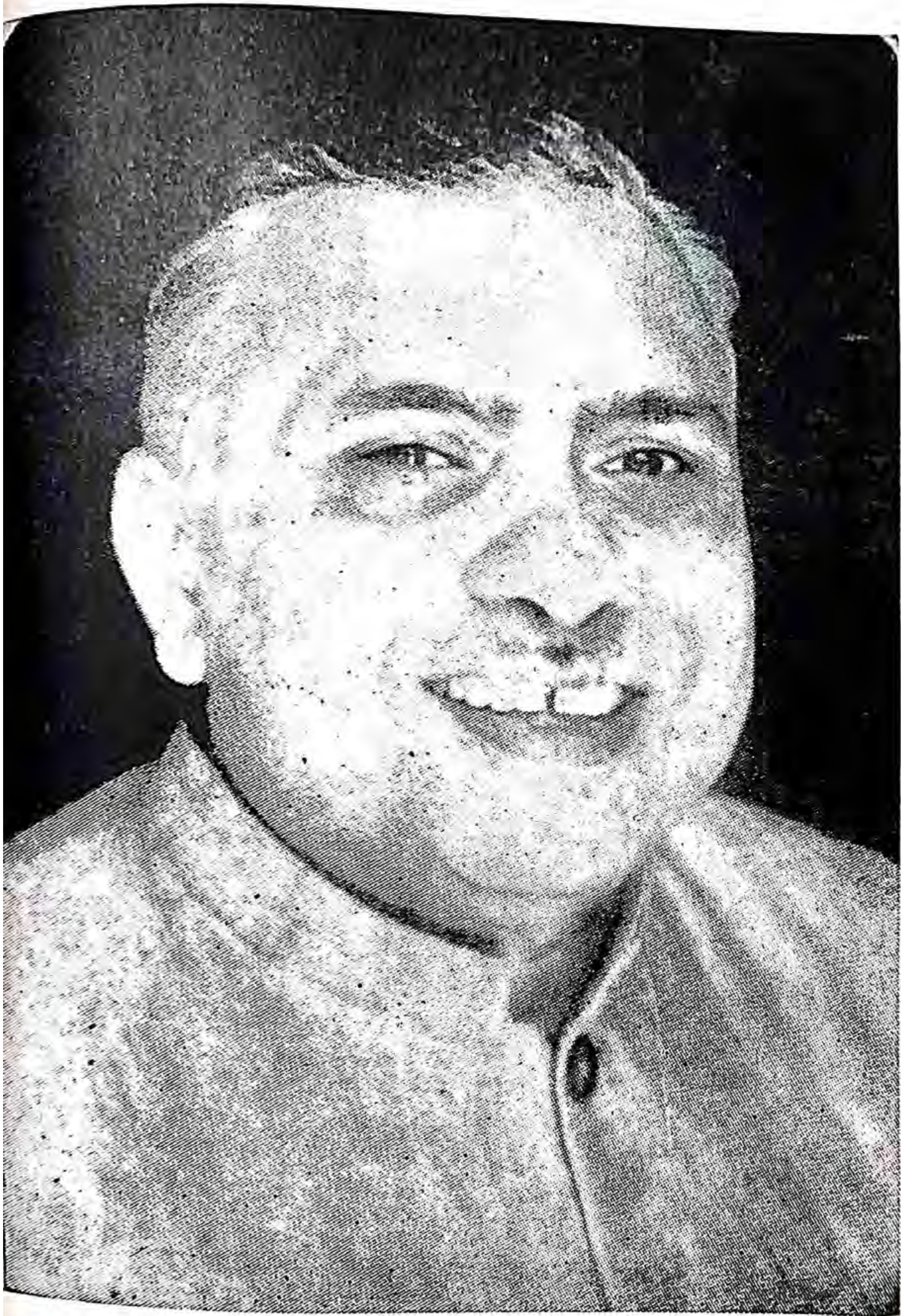
मैथिली अकादमी प्रकाशन—११२
मिथिला विभूति ग्रन्थमाला पुष्प—७

प्रकाशक,
मैथिली अकादमी,
श्रीकृष्णपुरी, पटना-१

प्रथम संस्करण, १९८३
प्रति—११००

मूल्य— {सजिल्द—८.०० / अजिल्द—६.००}

मुद्रक :
मुरलीधर प्रेस,
मुसल्लहपुर; पटना-६



स्व० ललित नारायण मिश्र

१. आरम्भ

मिथिलामे महामहोपाध्याय भवनाथ उर्फ अयाची मिश्रक वंश अत्यन्त गरिमामय एवं उदात्त रहल अछि। एहि वंशमे एकसँ एक विद्वान, नैयायिक मीमांसक एवं अनेक महामहोपाध्याय भेल छथि। एहि वंशक बीजी पुरुष छलाह महामहोपाध्याय रत्नेश्वर आ ओ सोदरपुर (दरभंगा)क वासी छलाह। महामहोपाध्याय रत्नेश्वरकेँ तीन पुत्र छलथिन—हलेश्वर, सुरेश्वर आ जीवेश्वर। इहो तीनू गोटा महामहोपाध्याय छलाह। सुरेश्वरकेँ दू पुत्र छलथिन—सरबय एवं विश्वनाथ आ दूनू महामहोपाध्याय। महामहोपाध्याय विश्वनाथकेँ रविनाथ, रघुनाथ एवं लक्ष्मीनाथ तीन पुत्र छलथिन आ तीनू महामहोपाध्याय छलाह। महामहोपाध्याय रविनाथकेँ सेहो तीन पुत्र—महामहोपाध्याय जीवनाथ, महामहोपाध्याय भवनाथ उर्फ अयाची एवं महामहोपाध्याय देवनाथ। महामहोपाध्याय अयाची मिश्रक सोदर भ्राता महामहोपाध्याय जीवनाथक सन्ततिमे ललित बाबू अबैत छथि। जीवनाथक पुत्र थेघ, थेघक पुत्र राघव, राघवक पुत्र पशुपति, पशुपतिक पुत्र हरिहर, हरिहरक पुत्र सदाशिव, सदाशिवक पुत्र बदली, बदलीक पुत्र गोविन्द, गोविन्दक पुत्र चेतन, चेतनक पुत्र हियभरण, हियभरणक पुत्र सम्पति एवं सम्पतिक पुत्र पं० रमानाथ मिश्र शास्त्री छलाह। रमानाथक पुत्र तोफालाल, जनकलाल, अभयनन्दन, अजयनन्दन, एवं रविनन्दन मिश्र भेलाह। पं० रविनन्दन मिश्रक पुत्र भेलाह ललित नारायण, कमल नारायण (लड्डू बाबू), श्याम नारायण, मृत्युंजय नारायण एवं जगन्नाथ। तोफालालक पुत्र भेलथिन्ह—पं राजेन्द्र मिश्र, भूतपूर्व एम० एल० ए० एवं बिहार प्रदेश काँग्रेसक सभापति। उपर्युक्त वर्णनसँ ई स्पष्ट भ' जायत जे मिथिलाक अत्यन्त सम्मान्य एवं विद्वानक वंशमे ललित बाबू अवतीर्ण भेलाह। हिनकर मूल अछि सोदरपुरिए दिगौन। ई लोकनि सोदरपुरक वासी छलाह आ तदुपरान्त दिगौन ग्राम चल गेलाह। मूलक उपर्युक्त दूनू नाम ग्रामहिक नाम थिक।

पितृपक्षसँ ललित बाबूकेँ विरासतमे विद्या भेटलनि। हिनकर वंश मूल रूपेँ विद्वानक वंश अछि आ बड़ स्वाभिमानी। एहि वंशक महामहोपाध्याय भवनाथ मिश्रक नाम अयाची एहि कारणेँ पड़लनि जे ओ ककरहुसँ कोनो याचना नहि कयलनि। कहल जाइत अछि जे ओ विद्यार्थीकेँ पढ़ाबथि, विद्वान लोकनिसँ शास्त्र-चर्चा करथि आ अपन बाड़ीमे जे किछु साग-पात होइन ताहिसँ प्राण-रक्षा करथि। कतहु किछु याचनाक लेल नहि जाथि। एकटा कथा अछि जे एक बेर अयाची मिश्रक ओहिठाम बंगालक एकटा विद्वान कोनो शंका-समाधानक अभिप्रायसँ शास्त्र-चर्चाक निमित्त पहुँचलाह। आर्थिक दृष्टिएँ महामहोपाध्याय जीक विपन्नावस्था छलनि। परन्तु एकटा दूरदेशी विद्वानक सम्मान सेहो आवश्यक छल। नीक जकाँ हुनका भोजन कराओल जाय ताहि हेतु महामहोपाध्याय जी एक गोट लोटा मोदीक ओहिठाम बंधकी राखि भोजनक सामग्री जुटओलनि—किछु चिक्कसि, घृतादि। पंडिताइन बाड़ीसँ साग तोड़ि अनलनि। परन्तु पाहुनकेँ एकेटा तरकारी कोना देल जाय ? तेँ पंडिताइन बाड़ीसँ खम्हाउर उखाड़य गेलीह। खम्हाउर उखाड़बाक क्रममे हुनका अशरफीसँ भरल एक तमघैल भेटलनि। ओहिमेसँ एकटा अशरफी निकालि पूर्ण विन्याससँ भोजनक व्यवस्था भेल। बंगाली पंडितजी भोजनोपरान्त अपन कार्य सम्पन्न क' चल गेलाह। जखन पंडितजीकेँ अशरफीसँ भरल तमघैल भेटबाक कथा कहल गेल त' ओ बड़ दु:खी भेलाह। ओ कहलथिन जे स्वर्ण जतबा पाबी ओकर द्विगुण दान करी। परन्तु, पंडितजीकेँ तँ द्विगुण दान करबाक सामर्थ्य नहि छलनि। तेँ ओ अपन पुत्र शंकरकेँ अशरफी वाला तमघैल ल' क' राजकोषमे जमा करबाक निमित्त राजाक ओहि ठाम पठओलनि। महामहोपाध्याय जी कोनो तरहेँ ओकरा अपन धन मानबाक लेल तैयार नहि भेलाह। शंकर सेहो अपन कालक अद्वितीय विद्वान भेल छथि —महामहोपाध्याय शंकर मिश्र। राजदरबारमे पहुँचि शंकर राजकोषमे अपन बाड़ीसँ उखड़ल धनकेँ जमा कयलनि आ तकरा बाद राजासँ भेँट कयलनि। राजदरबारमे शास्त्र-चर्चा भेल आ राजा हुनक विद्या आ प्रतिभासँ अत्यन्त प्रभावित भेलाह आ सभसँ अधिक प्रभावित भेलाह एहि वंशक निर्लोभ चरित्रसँ। शंकरकेँ प्रचुर द्रव्य बिदाइमे द' राजा हुनका सम्मानपूर्वक बिदा कयलनि। ओही दिन राजा ईहो निश्चय कयलनि जे शंकरक पिता जे एहन निर्लोभ पंडित छथि हुनकासँ भविष्यमे भेँट कयल जाय। जखन शंकर सब द्रव्यादि आ वस्तुजात ल' गाम पहुँचलाह तँ शंकरक माय महामहोपाध्याय

जीसँ कहलथिन जे शंकर द्वारा आनल धन तँ आब राजकोषमे जमा नहि करय पड़त ? ओ गद्‌गद छलीह जे एके दिनमे हुनक पुत्र हुनकालोकनिक दुःख-दारिद्र्य समाप्त क' देलथिन। परन्तु पंडितजी शंकरक मायकेँ कहलथिन- 'राजकोषमे तँ जमा नहि करय पड़त मुदा शंकरक नार काट्यबाली चमाइनकेँ अहाँ कहने छलियैक जे शंकरक पहिल कमाइ ओकरे होयतैक।' पंडिताइन सेहो एहि प्रसंगकेँ स्मरण कयलनि आ फल ई भेल जे सभ किछु ओहि चमाइनकेँ बजा क' द' देल गेल। जनश्रुति अछि जे ओ चमाइन ओहि द्रव्यसँ एकटा पोखरि खुनओलक आ ओकर नाम पड़ल 'चमैनिआँ पोखरि।' एही वंशक छलाह ललित बाबू। एहन बुझि पड़ैत अछि जे एहि वंशक लेल धनक एके प्रयोजन छल आ ओ छल दान। ललित बाबू अपन कुलक ई कथा नहि सुनने छलाह की ? दान देब तँ हुनक संस्कारमे छल। ओ दान देबाक हेतु जगत्‌विख्यात छलाह। ई संस्कार हुनक वंशक संस्कार छल, ई परम्परा हुनक वंशक परम्परा छल।

ललित बाबूक आतिथ्य विख्यात अछि। हमर मित्र श्री एम० ए० एम० गिलानी, जे सम्प्रति इन्टरमीडिएट शिक्षा परिषद्‌क अध्यक्ष छथि आ पहिने ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयमे प्रतिकुलपति छलाह जखन हम ओतय कुलपति छलहुँ, एक दिन प्रसंगवश कहलनि जे जखन ओ सहरसामे कलक्टर छलाह तँ ललित बाबूक आतिथ्यक भार हुनका सरकार दिससँ देल गेल। ललित बाबू सहरसा आयल छलाह आ राज्य-अतिथि (स्टेट गेस्ट) छलाह। गिलानी साहेब झंझटिमे रहथि जे आतिथ्यमे कोनो त्रुटि ने भ' जाय। परन्तु ललित बाबूक अबितहिँ बात बदलि गेल। ई गिलानी साहेब आ हुनक संगी लोकनिकेँ बलुआ अयबाक निमंत्रण द' गाम चल गेलाह। बलुआ पहुँचलापर गिलानी साहेब एवं हुनका मित्र सभकेँ ललित बाबू अपना हाथेँ परसिक' खोअओलनि। कत' राजकीय अतिथिक भार हुनकापर छलनि आ कत' ओकर बदलामे ओएह बलुआ जाक' ललित बाबूक अतिथि भ' गेलाह। ललित बाबू 'अतिथिदेवो भव'क सिद्धान्तमे विश्वास करैत छलाह। जनिक पूर्वज विपन्नावस्थामे लोटा बंधकी राखि अतिथि-सत्कारसँ नहि चुकलाह, तनिक सन्ततिपर एकर प्रभाव नहि रहय तँ आश्चर्य।

विद्या-प्रेम, विद्यानुशीलन, विद्वानक संगति आ अपन माटि-पानिकेँ चीन्हब ललित बाबूक विशिष्टता छल। पांडित्यपूर्ण वंशमे अवतरित

ललित बाबू ओहि वंशक सभटा गुण ल' क' एहि पृथ्वीपर आयल छलाह। हिनक पितामह पं० रमानाथ मिश्र शास्त्री ओहि पांडित्यपूर्ण परम्पराकें अक्षुण्ण रखलनि आ ललित बाबूकें ई पैतृक सम्पत्तिक रूपमे प्राप्त भेलनि। सरस्वतीक एहि कुलपर सभ दिन कृपा रहल आ ललित बाबू अवतीर्ण भेलाह सरस्वती-पूजहिक (माघ शुक्ल पंचमी) दिन। ई तँ भेल ललित बाबूक पितृकुलक परिचय आ हिनकापर पितृवंशक परम्पराक प्रभाव। हिनक मातृकुलक परिचय सेहो अपने ढंगक अछि।

ललित बाबूक मातृक छनि कुमर बाजितपुर, तत्कालीन जिला मुजफ्फरपुर आ सम्प्रति वैशाली जिला। हिनक मातामह छलथिन पं० परमानन्द कुमर। कुमरजीक मूल भेल ओइनिबार। कर्णाटवंशीय महाराज हरिसिंह देवक बाद मिथिला राज्यक उत्तराधिकारी भेलाह ओइनिबारवंशीय राजपंडित कामेश्वर ठाकुर। हुनका तीन पुत्र छलथिन—राजा भोगीश्वर, महामहत्तक कुसुमेश्वर तथा महाराजाधिराज भवेश्वर। महाराजाधिराज भवेश्वरकें चारि पुत्र—हरिसिंह, पार्णागारिक उदय सिंह, कुमर त्रिपुर सिंह आ समस्त-प्रक्रिया-विराजमान हरिभक्तिपरायण महाराजाधिराज गरुड़नारायण पदांकित देवसिंह। देवसिंहकें दू पुत्र—महाराजाधिराज रूपनारायणपदांकित शिव सिंह आ महाराज पद्मसिंह। महाराज शिवसिंहक दरबारमे विद्यापति रहैत छलाह ई सबकें प्रायः बुझले अछि। महाराज शिवसिंह आ पद्मसिंह दूनू गोटाक निःसंतान रहबाक कारणें राजा भोगीश्वरक पुत्र महाराज गणेश्वर मिथिलाक राजगद्दीपर बैसलाह। हुनका तीन पुत्र—महाराज वीरसिंह, महाराज कीर्तिसिंह आ गोविन्द। एहि गोविन्दक संतान छथि ललित बाबूक मातामह श्री परमानन्द कुमर। ई लोकनि महाराजक सन्तति भेलाक कारणें कुमर कहाबय लगलाह। एहि वंशमे उत्पन्न भेलीह पं० परमानन्द कुमरक पुत्री स्वनामधन्या यमुना देवी, जे ललित सन लालक गौरवशालिनी माता छलीह।

ललित बावूक मातृकुलक एहि संक्षिप्त विवरणसँ ई स्पष्ट अछि जे मातृ-पक्षमे ललित बाबू ओइनिबारवंशीय राजकुलक सन्तान छथि। ओइनिबार वंशीय राजा लोकनि पूर्वमे ओइनी नामक ग्राममे रहैत छलीह। जे पूसाक निकट अछि। एही कारणें ओ लोकनि ओइनिबारवंशीय कहओलनि। ललित बावूक मिथिला आ मैथिल संस्कृतिक प्रति प्रेम, मैथिल मर्यादाक निर्वाह, पोषण-प्रवृत्ति, राजसी विचार आ व्यवहारक मूलमे छल हुनक मातृपक्षक वंश

परम्परा। मिथिलाक शासकवंशमे उद्‌भूत ललित बाबूमे प्रशासकीय परम्परा कोनो नवीन वस्तु नहि छल।

ललित बाबूक पितृपक्षमे छल विशुद्ध पांडित्य-परम्परा—अनेक महामहोपाध्याय, कर्मकांडी, विद्वान शास्त्र-चिन्तन आ अनुशीलनमे संलग्न तँ दोसर दिस मातृपक्षमे महाराज शिवसिंह सन वीर, प्रजापालक, देशरक्षक, मातृभूमिक रक्षार्थ अमरत्व प्राप्त कयनिहार, दानी, विद्या आ विद्वानक संरक्षक। कोनो व्यक्तिक निर्माणमे वंश-परम्परा आ वातावरण दुनूक योग रहैत छैक। उपर्युक्त विवरणसँ हुनक वंश परम्परा स्पष्ट भ' जाइत अछि। आब दोसर पक्ष—वातावरणकेँ देखल जाय।

ललित बाबू २ फरवरी, १९२२केँ अपन मातृक कुमर बाजितपुरमे सरस्वती-पूजाक दिन (माघ शुक्ल पंचमी) एहि धरा-धामपर अयलाह। ओ घर, जतय ललित बाबूक जन्म भेल, हिनक मातृकमे एखनहुँ वर्त्तमान अछि। ई घर वस्तुतः भाग्यशाली अछि। एकरा त' मिथिलाक तीर्थस्थलक रूप देबाक चाही। ई मिथिलाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विद्यापतिहुक जन्म-स्थलपर कोनो भव्य स्मारक नहि बनि सकल। मंडनमिश्रक डीहक स्थान मात्र बराओल अछि, कोनो स्मारक नहि अछि। माँ उग्रताराक कृपासँ लोककेँ ई बुझबामे अबैत छैक जे मंडनमिश्रक डीह ओहि ठाम छलनि। हुनक डीह उग्रतारा-मन्दिरक समीपे अछि। मिथिलाक एहन कतेको महापुरुषक कोनो स्मारक हुनक जन्मस्थलपर नहि अछि। ललित बाबूक जन्मस्थलपर हिनक व्यक्तित्वक अनुरूप स्मारकक निर्माण आवश्यक। के करत ?- वस्तुतः सम्पूर्ण मैथिल समाज, मिथिला आ बिहार वासीक ई कर्त्तव्य थिक।

ललित बाबूक प्रारंभिक शिक्षा कुमर बाजितपुरहिमे भेल। तत्पश्चात् ई बलुआ बाजार मिडिल स्कूलमे अध्ययन कयलनि। मिडिल पास कयलाक उपरान्त ई विलियम हाइ स्कूल, सुपौल (सहरसा) सँ हाइ स्कूलक पढ़ाइ समाप्त कयलनि। हिनक बाल्यावस्थाक किछु काल कुमर बाजितपुरमे आ तदुपरान्त सम्पूर्णतः कोशी क्षेत्रहिमे बीतल। पहिने हिनक परिवार बलुआ बजारमे नहि रहैत छल। ई लोकनि ओतयसँ किछु दूर अवस्थित बसान-पट्टी ग्राममे रहैत छलाह। कोशीक विभीषिकाक कारणेँ हिनका लोकनिकेँ बलुआ बजार आबय पड़लनि। ललित बाबू अपन बाल्यावस्थहिसँ कोशी क्षेत्रक शोक, दुख आ दारिद्र्यसँ परिचित छलाह।

ललित बाबू जखन नेना छलाह तखनहिँ देशमे राजनीतिक हलचल आबि चुकल छल। भारतीय राजनीतिक जीवनक एकमात्र उद्देश्य छल भारतमाताकेँ परतन्त्रताक बेड़ीसँ मुक्त करब। महात्मा गांधी भारतीय राजनीतिक मंचपर आबि गेल छलाह। स्वतन्त्रताक प्राप्तिक हेतु राष्ट्रीय आन्दोलन जन-आन्दोलनक रूप लऽ रहल छल। ओ एहन युग छल जखन भारतीय सपूत स्वतन्त्रता-संग्राममे अपनाकेँ आहुति कऽ रहल छलाह। अमरत्व प्राप्त कऽ रहल छलाह। एहि सभक एकमात्र उद्देश्य छल अंग्रेजकेँ भारत वर्षसँ निष्कासित करब। महात्मा गांधीक नेतृत्वमे स्वतंत्रता आन्दोलन सक्रिय रूप धारण कयलक। पं० जवाहर लाल नेहरू, देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, सरदार पटेल, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस प्रभृति नेतागण भारतीय स्वतन्त्रताक हेतु कटिबद्ध छलाह। ब्रिटिश सरकारक दमनात्मक नीति चलि रहल छल जकर अन्तिम परिणति भेल १९४२क स्वतन्त्रता-संग्राम। वर्तमान शताब्दीक तृतीय दशकमे राजनीतिक आन्दोलनक संगहि विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी सेहो जीवनकेँ जर्जर बना रहल छल। जन-जीवन अस्तव्यस्त छल। एहि समयमे कोशी क्षेत्रक सभसँ पैघ समस्या छलैक कोशीक बाढ़ि। कोशी मिथिलांचलक 'शोक-नदी'क रूपमे अपन प्रलयंकर लीला कऽ रहल छलीह। ओहि क्षेत्रक लोक मलेरिया आ काला जारक कारणेँ अगणित संख्यामे मरि रहल छल। आइ जे भूमि उर्वरा आ शस्यश्यामला छल से अगिले दिन बालुका-राशिमे परिणत भऽ जाय। प्रतिवर्ष कोशीक बाढ़िमे सम्पूर्ण क्षेत्र जलमग्न भऽ जाइत छल। कोशीक धार बदलैत रहैत छल तेँ जे भूमि एहि वर्ष अबंच छल, अगिला वर्ष ओ मरुभूमिमे परिणत भऽ जाइत छल। जेना मरुभूमिमे दूर-दूर तक कोनो गाछ-वृक्ष आ सड़क नहि रहैत अछि, तहिना छल एहि क्षेत्रक रूपरेखा। बीच-बीचमे कोशीक मरना धार सभ। सम्पूर्ण क्षेत्र बंजर, सुनसान, शस्यहीन। रोगी, निर्बल, मलेरिया आ कालाजारसँ आक्रान्त लोकक छोट-छोट जतय-ततय बस्ती। सहस्र धारमे उमड़ैत कोशी हजार-हजार नर-नारीकेँ एक दिनमे उजाड़बाक शक्ति रखैत छल। की मनुष्य आ की पशु-पक्षी, की गाछ-वृक्ष, कोशीक वेगवती बाढ़िक चपेटमे प्रतिदिन धराशायी होइत छल, भासि जाइत छल, नष्ट भऽ जाइत छल। आइ ई काल्पनिक जेकाँ बूझि पड़त परन्तु ई वास्तविकता छल। बाढ़ि गेल आ ओकर बाद आयल मलेरिया, कालाजार आ नाना प्रकारक रोग। असंख्य व्यक्ति अकाल काल-कवलित होइत छल। मुर्दा जरयबाक हेतु लकड़ी नहि भेटैक। श्राद्ध प्रत्येक घरमे

एक अनवरत कर्म भ' गेल छल। कृषियोग्य भूमिमे सवतरि कासक जंगल। शक्तिहीन नर-नारी आ कठिन भूमि। कृषि-कार्य ठप्प। आजीविकाक कोनो साधन नहि। लोक 'त्राहि गोविन्द' क' रहल छल। ललित बाबू नेना छलाह। सभ देखैत छलाह, अनुभव करैत छलाह, संभवतः किछु करबाक संकल्प लैत छलाह।

दोसर बात जे बालक ललितकेँ प्रभावित कयलकनि से छल राजनीति। हिनक परिवारक लोक राजनीतिमे रुचि रखैत छलथिन। ललित बाबूक पिता आ काका तँ राष्ट्रीय आन्दोलनक गतिविधि निकटसँ देखि रहल छलाह। हिनक पितियौत भाए पं० राजेन्द्र मिश्र जी तँ ओहिमे सक्रिय रूपेँ भाग ल' रहल छलाह। हिनक पारिवारिक परिवेश एहन छल जे संवेदनशील बालक ललित अपन बाल्यावस्थहिसँ राष्ट्रीय आन्दोलन आ कोशीक संहार-लीलासँ प्रभावित होमय लगलाह। देश आ समाजक दुःखक कारण हिनका दुइए टा देखबामे अबैत छलनि—भारतपर अंगरेजक आधिपत्य आ कोशीक ताण्डव-लीला। अपन घरक लोकसँ सतत हिनका राजनीति आ सामाजिक क्षेत्रक बात सुनबामे अबैत छलनि आ शनैः शनैः हिनकापर ओ प्रभाव करय लागल। हिनकर परिवेश मूल रूपेँ हिनक बाल्यावस्थहिमे एहन अग्नि सुनगओलक जाहिमे ई अंगरेजी सत्ता आ कोशीक विभीषिकाकेँ भस्मसात् क' देब' चाहैत छलाह। हिनक पिता आ पितिऔत भाए पं० राजेन्द्र मिश्र ललित बाबूक जे व्यक्तित्व बनि रहल छल तकर विकासमे सहायक भेलथिन। पिताक स्वाभिमान, पारिवारक देश-प्रेम आ कोशी अंचलक विपन्नावस्था बालक ललितकेँ त्राताक रूपमे निर्माण क' रहल छल। ललित बाबूक व्यक्तित्वकेँ बुझबाक हेतु एहि पृष्ठभूमिकेँ ध्यानमे राखब आवश्यक।

ललित बाबूमे जे दानशीलताक पक्ष छल सेहो हिनक बाल्यावस्थहिमे जड़ि पकड़लक। ई अपन बाल्यावस्थहिमे देखलनि जे कोशीक बाढ़िसँ झमारल सैकड़ो नरकंकालकेँ कोना हिनक पिता जीवन-रक्षार्थ प्रतिदिन अन्न-दानसँ सहायता करैत छलथिन। हिनक पिता अत्यन्त सम्पन्न लोक छलाह। हजारो बीघाक चास छलनि आ वंश-परम्पराक अनुकूल ई पीड़ित जनताकेँ साहाय्य देब अपन धर्म बुझैत छलाह। भूमि नहि उपजैक आ विभिन्न प्रकारक रोगसँ लोक सीदित-पीड़ित रहैत छल। एहन स्थितिमे अन्न-दाने जीवनयापनक एकमात्र सहारा छलैक। सरकारी ऋण अथवा साहाय्य तँ 'ऊँटक मुहमे जीरक फोरन' छल। हिनक पिताक एहि दानसँ जाहि माइक

बच्चा जीवित रहि जाइत छलैक तकरा सभके आशीर्वाद दैत आ कृतज्ञता प्रकट करैत ललित बाबू देखैत छलथिन आ बाल्यावस्थामे देखल इएह दृश्य सभ हिनक दानशीलताक मूलमे अछि।

कोशीक संहार-लीलाक कारणें हजारो-हजार नर-नारीक करुण क्रन्दन ललित बाबू बाल्यावस्थहिसँ देखैत अबैत छलाह आ इहो देखैत छलाह जे हिनक पिता आ परिवारक लोक सभ कोना द्रवित भ' जन-समूहक दुख निवारणार्थ तत्पर रहैत छलाह। ई मोनहिमोन एहि दुरवस्थासँ जन-समूहक उद्धारक संकल्प लैत छलाह। यातायातक जे कष्ट कोशी अंचलमे रहिक' ललित बाबू देखलनि आ अनुभव कयलनि तकरे प्रभाव छल देशमे यातायातक सुविधा हेतु ललित बाबूक अथक प्रयास। हिनक पिता सपूत ओकरा कहैत छलथिन जे देशमे रेल-मार्गक विस्तार करय, यातायातक सुविधा बढ़ाबय। हुनको ई धारणा कोशी अंचलक दुर्गतिहिक कारणें बनल छल। बालक ललित अपन पिताक भावनासँ पूर्ण परिचित छलाह। कल्पना करू जे कोशीक बाढ़िक कारणें रेलवे स्टेशन जयबाक हेतु ललित बाबूक गामसँ पचीस-पचीस मील धरि कोनो सड़क नहि छल। पुरान रेलवे लाइन कोशीक बाढ़िमे ध्वस्त भ' गेल छल। कोनो सवारी वा यातायातक सुविधा नहि छल। कोना ओहि अंचलक धीया-पुता पढ़बा लेल अथवा लोक आजीविकाक हेतु बहरायत। ललित बाबू ई सभ देखैत छलाह, प्रतिदिन अनुभव करैत छलाह आ भावी जीवनमे किछु करबाक संकल्प लैत छलाह। पिछड़ल अंचलक यातायातक व्यवस्थामे सुधारक निर्णय ललित बाबू रेल-मन्त्री भेलाक पश्चात नहि अपितु बालक ललितक रूपमे ल' लेने छलाह।

हिनक पिता प्रारम्भहिसँ हिनकामे स्वाभिमान आ देश-प्रेम भरि देलथिन। ओ ललित सन नेनासँ अंगरेजक नोकरी करयबाक पक्षमे नहि प्रत्युत हिनका हाथें ओकर साम्राज्य समाप्त करयबाक युक्तिमे छलाह। अत्यन्त सम्पन्न परिवारमे जन्म भेलोपर ललित बाबूकें शहरी जीवनक चटक-मटक आकृष्ट नहि क' सकल। ई ग्रामवासी छलाह आ ग्रामीण वातावरण हिनक पोर-पोरमे भीजल छलनि। हिनक बाल्यावस्था ग्रामीण परिवेशमे बीतल। गामक सुख-दुख आ गामक अर्थनीतिक प्रशिक्षणक हिनका कहिओ आवश्यकता नहि भेलनि। ई कादोक कमल छलाह। भारतक उन्नतिक अर्थ हिनका लेल ग्रामक उन्नति छल। बाल्यावस्थहिमे कोशी क्षेत्रक विपन्न ग्रामीण अवस्थाक जे छाप हिनकापर पड़ल से अमिट

छल। ग्रामीण भारतक उन्नतिक संकल्प ई बाल्यावस्थहिसँ क' लेने छलाह। हिनक परिवेश एहि लेल हिनका बाध्य कयलकनि। गामक जे नक्शा ई बालकपनमे देखलनि ओ हुनक आँखिसँ कहिओ नहि हटल। ई जाति-पाँति, हिन्दू-मुसलमान आ संकीर्ण धर्मान्धतासँ ऊपर छलाह। कोशीक बाढ़िक कारणेँ कोशी क्षेत्रक जे विषम परिस्थिति छल तकरा ललित बाबू अपन बाल्यावस्थहिसँ निकटसँ देखने छलाह, अनुभव कयने छलाह। कोशी क्षेत्र ओहि समयमे की छल—दु:खी प्राणी आ दुखिया परिवार सभक विराट सम्मेलन। जाति-पाँति आ धर्मान्धताकेँ एहिमे कोनो स्थान नहि छलैक। बालक ललित अपनाकेँ एही आर्त प्राणीक समूहक एक सदस्य मानैत छलाह। एकमात्र मानव धर्म हिनक संस्कार भ' गेलनि आ दुखी मानवताक उद्धार करब एकमात्र कर्तव्य। ओहि अवस्थामे संवेदनशील बालक ललितक संस्कार निर्मित भ' रहल छल। धर्मनिरपेक्षताक पृष्ठपोषकक प्रशिक्षण भ' रहल छल। वातावरण आ परिवेश हिनका भावी जीवनक लेल तैयार क' रहल छल।

कोशी क्षेत्रमे जंगल, कास, बनैआ सुगर आ अन्यान्य हिंसक जन्तुक राज्य भ' गेल छल। लोक निष्प्राण आ नेतृत्वविहीन। एहन विषम परिस्थितिमे लोक त्राता ताकि रहल छल। लोकक दुखसँ उद्धार करयबाला वीर सपूतक आगमनक कामना क' रहल छल। कमला-बलान आ कोशीक बाढ़िसँ मिथिलांचल सैकड़ो वर्षसँ पीड़ित छल परन्तु एहिसँ उद्धार करयबाला केओ नहि छलैक। जन-जीवन आर्तनाद क' रहल छल। ओहि समयक मिथिलांचलक ओहि क्षेत्रक जन-मानसक परिचय एहिसँ सुन्दर रूपेँ नहि देल जा सकैत अछि :—

कखन हरब दुख मोर, हे भोलानाथ। कखन हरब दुख मोर।
दुखहिँ जनम भेल, दुखहिँ गमाओल, सुख सपनहु नहि भेल,
हे भोलानाथ।

भोलानाथ मिथिलावासीक आओर अधिक आर्तनाद नहि सुनय चाहैत छलाह। विद्यापतिहिक समयसँ मिथिलावासी भोला बाबाक प्रार्थना क' रहल छलाह। महादेव सन्तुष्ट भेलथिन। युगपुरुष ललित बाबूकेँ ओ चिर कालसँ पीड़ित मिथिलावासीक दुख हरण करबा लेल पठओलनि।

●

२. शिक्षा

विलियम्स हाइ स्कूल, सुपौलसँ ललित बाबू पटना विश्वविद्यालयक मैट्रिकुलेशन परीक्षामे नीक अंकसँ उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि। ओहि समयमे बिहारमे मैट्रिकुलेशनक परीक्षा पटना विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित होइत छल। प्रवेशिका परीक्षा पास कयलाक उपरान्त उच्च शिक्षाक हेतु सी० एम० कालेज, दरभंगामे नाम लिखओलनि। ओतहिसँ ई आइ० ए० क परीक्षा पास कयलनि। एक बेर तँ ई १९४१ ई०मे स्वतन्त्रता-संग्रामक आन्दोलनक क्रममे गिरफ्तार भेलाह। पुनः १९४२क अगस्त क्रान्ति प्रारम्भ भेल। 'करू वा मरू' बाला ई क्रान्ति छल। ललित बाबू एहिसँ कोना पृथक रहितथि? ई एहि आन्दोलनमे पूर्ण उत्साहसँ कूदि पड़लाह। आन्दोलनक क्रममे हिनका पयरमे गोली सेहो लागल छल आ जखन पकड़ल गेलाह तँ चारि वर्षक कारावासक दण्ड हिनका देल गेल। किन्तु एहि घटनासँ ने हिनक पिता विचलित भेलथिन आ ने स्वयं ललित बाबू। हिनक पिता बरोबरि जेलमे ललित बाबूसँ भेँट करथिन। ई पटना जेलमे राखल गेल छलाह। हिनक पिता अंगरेज सरकारसँ क्षमा-प्रार्थना क' ललित बाबूकेँ जेलसँ मुक्त करयबाक पक्षमे नहि छलाह। ओ उच्च न्यायालयमे मोकदमा लड़िक' किछु दिन सजाय कटलाक बाद हिनका जेलसँ मुक्त करओलनि। स्वतन्त्रता-सेनानीक शिक्षा लेल ताहि दिन जेल एक अपूर्व प्रशिक्षणालय भ' गेल छल। ललित बाबू एहि प्रशिक्षणालयक अनुभव प्राप्त कयलनि। जेलसँ मुक्त भेलाक बाद ई पुनः उच्च शिक्षा दिस ध्यान देलनि। पिता सेहो एहिपर जोर देलथिन। हिनक पिताक दृढ़ धारणा छलनि जे बिना उच्च शिक्षा प्राप्त कयने हुनक पुत्र हुनक इच्छाक अनुरूप सफल राष्ट्रकर्मी नहि भ' सकताह।

आन्दोलनक प्रथम चरणक बाद १९४३ई०क उत्तरार्द्धमे ई तेज नारायण जुबली (आब बनैली) कालेज, भागलपुरमे बी० ए० आनर्स (अर्थशास्त्र)

कक्षामे नाम लिखओलनि। हमहूँ ओही वर्ष ओही कक्षामे ओतहि नाम लिखओलहुँ आ तहिएसँ हमरालोकनि सहपाठी भेलहुँ, मित्र भेलहुँ। हमरालोकनि कालेजक छात्रावासमे रहैत छलहुँ। हमरालोकनिकेँ भागलपुरमे कएकटा प्राध्यापकक विशेष स्नेह प्राप्त भेल। अर्थशास्त्रमे स्वर्गीय प्रो० गिरिधर चक्रवर्त्ती आ प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसादक हमरालोकनि ऋणी छी। प्रो० चक्रवर्त्ती बादमे गणेश दत्त कालेज, बेगूसराय आ पुनः मुरारका कालेज, सुलतानगंजक प्रधानाचार्य भेलाह। प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसाद बादमे बेतिया कालेजक प्रधानाचार्य भेलाह। ओ हमरा दुनू गोटापर बहुत स्नेह रखैत छलाह आ बरोबरि अपना ओहि ठाम पढ़बा लेल बजाबथि। आनन्द बाबू भागलपुर शहरमे मुन्दीचक मुहल्लाहमे रहैत छलाह आ हमरालोकनि छात्रावासमे। ई दूरी लगभग तीन मीलक छल। हम दुनू गोटा बिचारलहुँ जे टमटमसँ जयबामे बहुत समय लागि जाइत अछि। ओहि समयमे भागलपुरमे टमटमक अतिरिक्त हाथसँ खींचयबाला रिक्शा चलैक जाहिमे आओर अधिक समय लगैक आ ललित बाबू तँ ई कहिक' जे मनुष्यपर मनुष्य कोना सवारी करत ओहिपर कहियो नहि चढ़लाह। अन्ततोगत्वा सवारीक हेतु साइकिल किनबाक हमरालोकनि विचार कयलहुँ। ई द्वितीय विश्वयुद्धक काल छल। आवश्यक सामग्रीपर नियंत्रण भ' गेल छल। मुश्किलसँ दोकानदार एक हरक्युलिस साइकिल बेचब गछलक। हमरा लोकनिक विचार भेल जे दुनू गोटे एके साइकिलसँ काज चलायब। ओहिमे कैरियर लगबओलहुँ आ साइकिल कीनि लेलहुँ। आब प्रोफेसर साहेबक ओहि ठाम अथवा आनो ठाम हमरालोकनि साइकिलपर जाइ। एहिसँ समयक बचत होअय। जखन दुनू गोटाकेँ एके संग कतहुँ जयबाक होअय तँ ललित बाबू साइकिल चलाबथि आ हम कैरियरपर बैसी। हम कतबो हिनका कहिअनि जे हमरा साइकिल चलाबय दिय' आ अहाँ कैरियर पर बैसू, परन्तु ओ से नहि मानथि। बात ई छल जे ई कैरियरपर बैसबा लेल बनले नहि छलाह। वस्तुतः देशक हमरा सन-सन असंख्य प्राणीक भार वहन करबाक लेल भगवान हिनक रचना कयने छलथिन। अस्तु। हमरा लोकनिक दोसर कम्बिनेशन छल प्रधान हिन्दी। हमरालोकनि ई निश्चय कयने छलहुँ जे हिन्दी घरमे कहिओ नहि पढ़ब। क्लासैक पढ़ाइसँ काज चलायब आ समयक उपयोग अर्थशास्त्रक लेल करब। हम दुनू गोटे सैह कयल आ बढ़ियाँ अंकसँ हिन्दीमे सफलता प्राप्त कयल। ओहि समयक एक प्रसंग मन पड़ैत अछि। हिन्दी विषयमे एकटा कहानीक पुस्तक सेहो कोर्समे छलैक। ओकर

एक कहानीमे दू मित्र वार्तालापक क्रममे भावी जीवनपर विचार करैत छल। हम दुनू गोटा एके संगे ओहि कहानीकेँ पढ़ि रहल छलहुँ। हम ललित बाबूकेँ पुछलिअनि जे अध्ययन समाप्त कयलापर ओ की करताह। कहानीवाला एक मित्र कहने छलैक जे ओ धन कमयबाक हेतु पश्चिम दिस जायत। ललित बाबू कहलनि—"हम ज्ञानार्जनक हेतु देश-विदेशक पर्यटन करब आ राष्ट्र-सेवामे लागि जायब।" हमरा ओहिना मोन अछि। खाली कक्षामे बैसिक' हमरालोकनि ई वार्तालाप कयने छलहुँ। तखन हमरालोकनि चतुर्थ वर्षमे पढ़ैत छलहुँ सन् १९४४ ई०मे। ई सभ बातचीत गप्पेशप्पमे भेल छल परन्तु ललित बाबू सत्य कहने छलाह। जे ओहि समयमे ई बजलाह सैह भावी जीवनमे कयलनि। राष्ट्र-सेवाक कार्य तँ ई विद्यार्थिए जीवनमे प्रारम्भ क' चुकल छलाह।

अंग्रेजीक अध्यापक प्रो० सत्येन्द्र दत्त, प्रो० बृजगोपाल गुप्त आ प्रो० निशाकान्त सरकार ललित बाबूकेँ खूब मानैत छलथिन। हिनक हस्तलिपि सुन्दर नहि कहल जा सकैत छल परन्तु सुस्पष्ट रहैत छल। कहियो-कहियो प्रो० गुप्त हिनका आओर सुन्दर अक्षर लिखबाक हेतु प्रेरित करैत छलथिन। हमरालोकनिपर प्रो० आनन्द कृष्ण प्रसादक बड़ कृपा रहैत छलनि। प्रो० प्रसाद जखन बादमे बेतिया कालेजक प्रधानाचार्य भेल छलाह तँ ललित बाबू हमरा पुछने छलाह जे बधाइक तार पठओलियनि कि नहि। हम नहि पठओने छलिअनि। एहिपर ई हमरा तुरन्त तार पठयबाक आग्रह कयलनि। एहिमे हिनक दर्शन छल जे ककरो उपलब्धिपर प्रसन्नता व्यक्त कयलासँ ओहि व्यक्तिकेँ प्रोत्साहन भेटैत छैक आ ओ उत्साहित भ' आओर अधिक काज करबाक प्रेरणा प्राप्त करैत अछि। ई 'बधाइ' बाला बात हम ललिते बाबूसँ सिखलहुँ। प्रो० निशाकान्त सरकार अंगरेजीक प्राध्यापक छलाह आ अंगरेजी 'लिटरेरी युनियन'क अध्यक्ष। ललित बाबू ओही समयसँ वाद-विवाद अथवा विभिन्न परिषदक कार्यक्रममे भाग लैत छलाह तेँ ओ विशेष रूपेँ हिनकापर प्रसन्न रहैत छलथिन। हमरालोकनिक प्रधानाचार्य स्वर्गीय हरलाल दास गुप्तकेँ ई ज्ञात छलनि जे ललित बाबू 'आनर्स सेमिनार लाइब्रेरीसँ बरोबरि किताब ल' क' पढ़ैत छलाह, तेँ ओ हिनकापर विशेष प्रसन्न रहैत छलथिन। देखू ओ युग जे प्रधानाचार्यकेँ ई ज्ञात रहैत छलैक जे कोन छात्र लाइब्रेरीक व्यवहार करैत अछि आ कोन नहि। ललित बाबूक सम्बन्धमे हुनका जानकारी रखबाक एक विशेष कारण इहो छल जे हुनका

ई आशा छलनि जे विश्वविद्यालयमे 'आनर्स'मे नीक स्थान प्राप्त क' ई कालेजक प्रतिष्ठा बढ़ओताह। प्रधानाचार्यक एहि आशाक ई पूर्त्ति कयलनि। भागलपुरहुमे ललित बाबू राजनीतिसँ अलग नहि छलाह। एतय हम हिनका विशेषतः कांग्रेसक संगठनादि पर विशेष विचार करैत देखिअनि। १९४२क आन्दोलनमे भाग लेवयवाला जे हिनक संगी-साथी जेलसँ छुटिक' अबैत छलथिन हुनकालोकनिक पुनर्वासपर ई विशेष रूपेँ विचार करथि। ओहि समयमे हिनका हम बीच-बीचमे सहरसाक श्री कामता प्रसाद गुप्तसँ कांग्रेसक संगठनादिपर विचार करैत देखिअनि। १९४५ ई०मे बी० ए० आनर्स (अर्थशास्त्र)क परीक्षामे नीक स्थान पावि एम० ए०मे ओहि वर्ष पटना कालेजमे अर्थशास्त्रमे नाम लिखओलनि। हमहूँ ओतहि ओही विषयमे नाम लिखओलहुँ। ललित बाबू रानीघाट स्थित पोस्ट ग्रेजुएट होस्टलमे रहैत छलाह।

पटना कालेजमे हमरालोकनिक प्राध्यापक छलाह स्व० प्रो० गोरख नाथ सिंह, प्रो० सचीन दत्त, प्रो० विश्वनाथ मुखर्जी, प्रो० दिवाकर झा (जे बादमे पटना विश्वविद्यालयमे अर्थशास्त्रक विभागाध्यक्ष भेलाह) आ प्रो० एच० लाल। हमरालोकनिक विभागाध्यक्ष छलाह प्रो० ज्ञानचन्द। ललित बाबूक स्पेशल ग्रुप छलनि 'अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति' आ हमर छल 'इण्डियन फाइनान्स'। प्रो० सचीन दत्त, जे बादमे भारतीय प्रशासनिक सेवामे चल गेलाह, हमरालोकनिकेँ राजनीतिशास्त्र पढ़बैत छलाह। गोरख बाबू आ सचीन दत्त ललित बाबूकेँ बड़ मानैत छलथिन। राजनीतिशास्त्रमे हिनक सूझबूझ आ सुन्दर अभिव्यक्तिए एकर कारण छल। किछु दिन डा० अमृतधारी सिंह, डा० ज्ञानचन्दक विदेश चल गेलापर, हमरालोकनिकेँ पढ़ओने छलाह। गोरख बाबू जीवनक अन्तिम दिन धरि हिनका मानैत रहलथिन। ललित बाबू सचीन दत्तक पढ़यबाक कलाक प्रशंसक छलाह। डा० ज्ञानचन्दक समाजवादी विचारधारासँ ई प्रभावित छलाह। प्रो० अमृतधारी सिंह जी ललित बाबूक ज्ञान-पिपासासँ प्रभावित छलाह। ओ बरोबरि ललित बाबूकेँ प्रश्न लिखबाक लेल दैत छलथिन। समाजसेवीक रूपमे सेहो ओ ललित बाबूसँ प्रभावित छलाह। आ तेँ ललित बाबूकेँ प्रो० सिंहक स्नेह प्रचुर मात्रामे प्राप्त छलनि। ललित बाबूकेँ सामान्यतः भागलपुर एवं पटनामे सब शिक्षकक प्रति आदरभाव छलनि आ हुनकालोकनिक हिनका स्नेह प्राप्त छलनि। राजनीतिमे लागल रहितहुँ हम ललित बाबूकेँ बरोबरि अध्ययनक प्रति जागरूक देखिअनि।

पटना कालेजमे श्री बलिराम भगत, श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा प्रभृति हमरालोकनिक संगहि पढ़ैत रहथि। ललित बाबूकेँ श्री बलिराम भगतसँ बड़ दोस्ती छलनि। दुनू गोटे पढ़ितहुँ काल कांग्रेसक सक्रिय राजनीतिमे छलाह। एक दिनुक प्रसंग अछि। मौलाना अबुल कलाम आजाद पटना विश्वविद्यालयक दीक्षान्त-समारोहमे भाग लेबाकलेल आयल छलाह। ललित बाबू आ बलिराम बाबू ई निश्चय कयल जे 'स्टूडेन्ट काँग्रेस' दिससँ हुनका मानपत्र देल जाय। ललित बाबू स्टूडेन्ट काँग्रेसक संगठन-कर्त्तामेसँ रहथि। ओ दुनू गोटा मिलिक' मानपत्र तँ लिखि लेलनि परन्तु ओकर लिखावट हुनकालोकनिकेँ पसिन्न नहि छलनि। समय बहुत कम छलैक आ किछुए कालमे मानपत्र पढ़बाक छलैक। एही बीचमे ओकरा शीशामे सेहो मढ़यबाक छलैक। एहि दुनू गोटाकेँ काजमे संलग्न देखि हमहुँ हिनकालोकनिक लग गेलहुँ। ललित बाबू तँ लगभग हमर खुशामद कयलनि जे अक्षर नीक भेलाक कारणे हम यथाशीघ्र मानपत्र लिखि हुनकालोकनिकेँ द' दिअनि। हम लिखि देलिअनि आ दुनू गोटा बड़ प्रसन्न भेलाह। हमर लिखावट कोनो सुन्दर नहि कहल जा सकैत अछि परन्तु ललित बाबूकेँ पसिन्न छलनि।

एही समयमे पं० जवाहरलाल नेहरू पटना आयल छलाह आ ललित बाबू, बलिराम भगत, तारकेश्वरी सिंहा, राम लखन सिंह यादव प्रभृति स्टुडेन्ट काँग्रेस दिससँ समारोहपूर्वक हुनक स्वागत कयने छलथिन। विराट आयोजन भेल छल। हजारो विद्यार्थी उपस्थित छल। विद्यार्थी-जीवनहिमे ललित बाबूमे संगठनक अपूर्व क्षमता आबि गेल छलनि। पं० नेहरू एहि समारोहसँ खूब प्रसन्न भेल छलाह आ ललित बाबूक प्रसन्नताक त' कोनो ठेकाने नहि छल। ई हिनकर संगठन-सफलता छल। भागलपुरमे हम विद्यार्थी संगठनमे हिनका ओतबा अभिरुचि नहि देखने छलिअनि जतबा पटनामे स्टुडेन्ट काँग्रेसक संगठनमे। एहिमे त' ई जी-जान अरोपि देने छलाह। हमरा एखनहुँ धरि ओ चित्र आँखिक सामनेमे अछि जाहिमे साइन्स कालेजक मैदानमे माइकपर विद्यार्थी काँग्रेसक सभामे ललित बाबू जोरदार भाषण कयने छलाह।

स्टुडेन्ट काँग्रेसक अधिवेशन तँ सफल भेल परन्तु एहि सफलताक रहस्य सभकेँ नहि बूझल छैक। बलिराम बाबू प्रभृति अधिवेशनक निश्चय तँ क' लेलनि परन्तु एहि कार्यक लेल द्रव्यक आवश्यकता छैक। विद्यार्थीलोकनिकेँ

साधनक अभाव छल आ एहि कारणें हिनकालोकनिमे किछु क्षण लेल विचार-विमर्शक क्रममे हतोत्साहिता आब' लागल। परन्तु ललित बाबू सभकें आश्वस्त कयलनि। ई कहलथिन जे आवश्यक कोषक उपाय ई करताह। चिन्ताक कोनो विषय नहि। ललित बाबू एहि समयमे कमाइत नहि छलाह। पितासँ एहि कार्यक हेतु धन मङबामे संकोच छलनि। परन्तु धन प्राप्त करब तँ अनिवार्य छल; नहि तँ अधिवेशन कोना होइत? ललित बाबू अपन सासुर बिदा भेलाह आ अपन पत्नीसँ हुनक मूल्यवान आभूषण ल' बन्धकी राखि स्टुडेन्ट कांग्रेसक अधिवेशनक हेतु द्रव्य जुटओलनि। हिनक पतिपरायणा धर्मपत्नी ई बात ककरहु नहि कहलथिन। जखन सासुर गेलीह आ ओत' आभूषण-विहीन देखि हुनका लोक पूछय लगलनि तखन अन्ततोगत्वा ललित बाबू एहि रहस्यक उद्‌घाटन कयलनि।

हमरा मोन अछि जे ओहि समयमे जखन आजुक अपेक्षा मूल्य स्तर बहुत नीचाँ छल, ललित बाबू अपन पितासँ पाँच सय रुपैया प्रति मास पढ़बाक हेतु खर्च लैत छलाह। सामान्य रूपें पचहत्तरि रुपैया तक हमरालोकनिकें एक मासमे खर्च लगैत छल। ललितो बाबू सामान्ये रूपें रहैत छलाह परन्तु हिनक शेष रुपैया कांग्रेस कार्यकर्त्ता आ संगठनक सहायता आ नव पुस्तक सभ किनबामे खर्च होइत छल। हिनका पुस्तक पढ़बाक खूब सौख छलनि। हमरालोकनि अपनामे सामयिक प्रकाशन सभपर खूब चर्चा करी।

१९४५ ई० मे यू० एन० ओ०क स्थापना भ' गेल छल। ललित बाबू बीच-बीचमे हमरा पूछथि जे यू० एन० ओ० मे कोनो काज पाबि क' जायब उचित होयत कि नहि। हम बरोबरि हिनका कहिअनि जे एम० ए० पास कयलाक बादे आओर किछु सोचल जाय। एक विषयक आओर ई जिज्ञासु छलाह जे बिहार सरकारकें कोशी-पीड़ित जनसमूहक उद्धार लेल कोना प्रभावित कयल जाय। ई तखनुका गप्प थिक जखन हमरालोकनि एम० ए०क विद्यार्थी छलहुँ। एहि सभक पाछाँ हिनक एके उद्देश्य छल जे ई कोनो एहन स्थानपर पहुँचथि जतयसँ युग-युगसँ कोशीक विभीषिकासँ आक्रान्त मिथिलाक उद्धार क' सकथि।

१९४७ ई० मे हमरालोकनिकें एम० ए०क परीक्षा देबाक छल। एही वर्ष १५ अगस्तकें देश स्वाधीन भेल। १४ तारीखक रातिमे हमरालोकनि सुतलहुँ नहि। बारह बजे रातिएसँ शंखध्वनि आ नारासँ सम्पूर्ण पटना

गुंजायमान छल। हमरालोकनिक एम० ए०क परीक्षा शीघ्रे प्रारम्भ होमय बाला छल। एहि सभमे ललित बाबू आ बलिराम बाबू सन विद्यार्थीक पढ़ब तँ हर्ज भेले छलनि, हमरो सन विद्यार्थीक अध्ययनमे स्वतंत्रताक उल्लासक कारणे बाधा भेल छल। ललित बाबूक नेतृत्वमे हमरालोकनि ३०-४० छात्र पटना विश्वविद्यालयक तत्कालीन कुलपति सर सी० पी० एन० सिंह (सम्प्रति उत्तर प्रदेशक राज्यपाल)क ओहिठाम माङ ल' क' उपस्थित भेलहुँ। सलौनी पूर्णिमाक दिन छल आ प्रस्ताव ई भेल जे पहिने हुनका राखी बान्हि देल जाय, जकर भार हमरे देल गेल, आ पश्चात् अध्ययन लेल समय भेटय तज्जन्य परीक्षाक तिथि बढ़यबाक माङ कयल जाय। सर सी० पी० एन० ध्यानपूर्वक हमरा लोकनिक बात सुनलनि आ ओ तिथि बढ़ायब स्वीकार नहि कयलनि; परन्तु, दू पत्रक परीक्षाक बीच समय देबाक आश्वासन देलनि जे वस्तुतः भेटबो कयल। हमरालोकनि अध्ययनमे लागि गेलहुँ।

एहि समयक एक घटना मन पड़ैत अछि। एक दिन ललित बाबूसँ अशोक राजपथ स्थित पिन्टू होटल (आब ई ओतय नहि अछि) लग भेंट भेल। खूब हड़बड़ीमे छलाह। कहलनि जे हमरहि तकैत छलाह आ हमरा आग्रह कयलनि जे हम हुनका संगहि हुनक डेरा (आर ब्लाक) चली, जतय हुनक अग्रज पं० राजेन्द्र मिश्र रहैत छलथिन। ओ इहो कहलनि जे दस दिन ओ ओतयसँ हमरा आब' नहि देताह। हम ओहि समयमे बी० एम० दास रोड स्थित 'पैगोडा' लौजमे रहैत छलहुँ। ओ हमरा कोनो सामान नहि लेब' देलनि आ हम हुनका संगहि हुनक निवास स्थानपर गेलहुँ। ललित बाबूक उद्देश्य छल एम० ए०क परीक्षाक तैयारीक योजना बनायब। हम दुनू गोटे किछु दिन ओतहि एके संगे अध्ययन कयल आ प्रत्येक पत्रक लेल किछु प्रश्नक उत्तर तैयार कयलहुँ। एहिमे एक प्रश्न छल 'हाइ कमान्ड' (आला कमान) सँ सम्बन्धित, आ ई राजनीतिशास्त्र बाला पत्रमे अपेक्षित प्रश्न छल। ओहि दिन धरि हमरा 'हाइ कमान्ड'क विषयमे स्पष्ट ज्ञान नहि छल। ललित बाबू पहिले-पहिल हमरा 'हाइ कमान्ड'क रूप-रेखा, कार्य आ ओकर आवश्यकताक सम्बन्धमे बतओने छलाह आ पुनः विशद रूपसँ काँग्रेस 'हाइ कमान्ड'क सम्पूर्ण पहलू पर प्रकाश देने रहथि। ओहि समयमे हमरा की बूझल छल जे एक दिन स्वयं ई काँग्रेस 'हाइ कमान्ड'क सदस्य होयताह। अस्तु, परीक्षाक तिथि सेहो आबि गेल आ

सम्पन्नो भेल। ललित बाबू नीक अंकसँ एम० ए० परीक्षामे विश्वविद्यालयमे उच्च स्थान प्राप्त कयलनि।

परन्तु एखनहुँ हुनक ज्ञान-पिपासा बनले छलनि ओ पीएच० डी० कर' चाहैत छलाह। एकरा हेतु पटना विश्वविद्यालयमे अपन नामो पंजीकृत करओलनि। हुनक व्यक्तित्वक अनुरूपे हुनक शोधक विषय छल 'उन्नैसम शताब्दीमे ब्रिटिश साम्राज्यक औपनिवेशिक नीति'। एहिपर ओ बहुत किछु सामग्रियो एकत्र कयने छलाह। हुनका पीएच०डी०क उपाधिसँ ओतेक प्रेम नहि छलनि जतबा एहि विषयसँ। १९४८-४९ मे पटनामे बिहारक प्रथम इकोनोमिक कनफरेन्सक आयोजन कयलनि। ओहि समयमे ओ पटना विश्वविद्यायलक सीनेटक सदस्य छलाह। बिहार राज्य कॉंग्रेस समितिक अर्थ एवं खाद्य विकासक सचिवक रूपमे ओ जूट उत्पादन पर सेहो शोध कयने छलाह। राजनीतिमे लागल रहितहुँ ओ बरोबरि नीक अंकसँ विश्वविद्यालयीय परीक्षा सभमे उत्तीर्णता प्राप्त कयलनि। एक लेखमे ललित बाबू स्वयं शिक्षाक परिभाषा कयने छथि जे निम्नलिखित अछि :—

"शिक्षाक वास्तविक अर्थ अछि मस्तिष्क आ शरीरक एहन प्रशिक्षण जे परिवर्तनशील परिस्थितिक अनरूप अपनाकेँ ढारबा योग्य संतुलित व्यक्तित्व उत्पन्न क' सकय।"

वस्तुतः ललित बाबू अपन शिक्षणकालमे एहि बातकेँ स्मरण रखने छलाह आ हुनक शिक्षा हुनका एहि योग्य बना देने छलनि जे अपनाकेँ कोनो स्थिति विशेषक अनुरूप बना लैत छलाह। हुनक भावी जीवन-दर्शनक बीज-वपन हुनक बाल्यावस्थहिमे भ' चुकल छलनि आ हुनक शिक्षण-प्रशिक्षण एकर समुचित विकासक हेतु अनुकूल वातावरणक रचना कयलक।

३. राजनीति

एम० ए०क परीक्षाफल १९४८मे प्रकाशित भेलाक बादे ललित बाबूकें टी० एन० जे० कालेज (आब टी० एन० बी० कालेज) भागलपुरमे अर्थशास्त्र विषयमे प्राध्यापकक पदपर नियुक्तिक हेतु पत्र भेटलनि। हुनका एहि काजमे ममत्व आ अभिरुचि छलनि किन्तु हुनक पिताकें ई स्वीकार नहि छल जे ओ नोकरी वृत्ति करथि। एकबेर ओ ललित बाबूकें कहने छलथिन जे 'सपूत त' ओ देशक काज आबय, जे कोशीकें बन्हबाबय आ रेल चलबाबय।' कोशी क्षेत्रमे कोशीक जे प्रचंड उत्पात छल आ यातायातक जे दुरवस्था छल ओहिमे हुनक पिताक एहन सोचब अत्यन्त उचित छल जे उपर्युक्त कोटिक कार्य करयबाला वस्तुतः सपूत थिक। एहि सपूतत्वक कामना ओ अपन पुत्र ललिते बाबूमे कयने छलाह। ललित बाबू एहि तीनू बातकें गिरह बन्हने छलाह। जाहि पिताक ई आकांक्षा छलनि से कोना अपन पुत्रकें नोकरी वृत्तिमे—चाहे ओ अध्यापने कार्य किएक ने हो—जयबाक सहमति दितथि। ललित बाबूमे परदुःखकातरता, कर्मठता आ समाज-सेवाक भावना देखि क' ओ विश्वस्त छलाह जे ई एक दिन अपन परिवार आ देशक नाम उजागर करताह। तें ओ ललित बाबूकें कहलथिन जे "अध्यापन-कार्यमे अहाँकें जतबा वेतन भेटत ओकर द्विगुण हम अहाँकें देब। अहाँ कैंचाक चिन्ता छोड़ि राष्ट्रीय आ सामाजिक कार्यमे लागि जाउ।" पुनः दोसर अवसर आयल। बिहारक तत्कालीन मुख्यमन्त्री डॉ० श्रीकृष्ण सिंह निश्चय कयने छलाह जे ललित बाबूकें संयुक्त राष्ट्र संघमे कोनो उच्च पदपर पठाओल जाय। किन्तु ललित बाबूक पिता एहिमे अपन सहमति नहि देलथिन। ओ तँ ललित बाबूकें देशक सेवक बनाबय चाहैत छलाह। ओ कटिबद्ध छलाह ललित बाबूकें राष्ट्र-सेवाक हेतु अर्पित करबाक लेल! अस्तु, ललित बाबूक पिता ने हुनका प्रोफेसर बनय देलथिन आ ने यू० एन० ओ० मे जाय देलथिन। ललित बाबू स्वयं पिताक इच्छाक अनुरूप राष्ट्र-सेवाक व्रत विद्यार्थिए जीवनमे ल' चुकल छलाह। पिताक सम्पूर्ण सहयोग आ प्रेरणाक फलस्वरूप ओ एहि पथपर आरूढ़ रहलाह।

१९४० ई० मे जखन ललित बाबू स्कूलक विद्यार्थिए छलाह तखनहिँ ओ थाना कांग्रेस कमीटीक अध्यक्ष निर्वाचित भेल छलाह। हम उपर कहि आयल छी जे १९४२क आन्दोलनमे ओ सोत्साह स्वतन्त्रता-संग्राममे कूदि पड़लाह। एक बेर १९४१ ई०मे सेहो ओ राष्ट्रीय आन्दोलनक क्रममे गिरफ्तार भेल छलाह। १९४२क आन्दोलनमे हुनका पैरमे गोली लागल छलनि आ चारि वर्षक कठिन कारावासक दण्ड भेटल छलनि। १९४६ ई०मे ओ अखिल भारतीय छात्र परिषद्क सदस्य निर्वाचित भेल छलाह। १९३७ ई०मे अखिल भारतीय छात्र कांग्रेसक अधिवेशन पटनामे आयोजित कयलनि जकर चर्चा भ' चुकल अछि। १९४६ ई०सँ १९४८ ई० धरि ओ एहि संस्थाक अध्यक्ष रहलाह। १९५० ई०मे हुनके प्रयाससँ पटनामे प्रथम बिहार आर्थिक सम्मेलन भेल छल आ एहि संस्थाक ओ सचिवो रहलाह। एहि कालमे ओ पटना विश्व-विद्यालयक सिनेटक सदस्य सेहो छलाह। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमीटीक आर्थिक आ खाद्यान्न विभागक सचिवक रूपमे ओ बिहारमे जूट उत्पादन आ खाद्यान्नक स्थितिपर शोधपूर्ण आलेख तैयार कयने छलाह। १९५० ई०मे ओ सहरसा जिला कांग्रेस कमीटीक सदस्य सेहो निर्वाचित भेल छलाह। एही समयमे ओ जूट उत्पादक संघक अध्यक्ष सेहो छलाह।

राष्ट्रीय नेताक रूपमे हुनक विकास १९५० ई०मे अखिल भारतीय कांग्रेस समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाक पश्चात् प्रारम्भ भेल। १९५२ ई०मे ओ सहरसा क्षेत्रसँ संसदीय चुनावमे लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह। एहि सम्बन्धमे डा० जगन्नाथ मिश्र (वर्त्तमान मुख्यमंत्री)क उक्ति देखू :—

"१९५० ई०मे पहिल बेर ललित बाबू अखिल भारतीय कांग्रेस समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाह। ललित बाबूकेँ अपना इलाकामे एक होनहार व्यक्तिक रूपमे ओही समयसँ देखल जा रहल छल। ओना तँ बिहारे पिछड़ल छल किन्तु हमर इलाका सहरसा आओरो पिछड़ल छल। ई इलाका निरन्तर कोशीक क्रूरताक शिकार रहि चुकल छल। ओहि क्षेत्रक सामान्य जनता गरीबीक बीभत्स दृश्यकेँ छोड़ि आओर देखनहि की छल? अभावक दारुण वेदनाकेँ छोड़ि आओर भोगनहि की छल? सहर्पा (सहरसा) जे गुणक विपरीत नाम पड़ल छल, तकरा नामानुकूल करबाक आन्तरिक अभिलाषासँ जेना लोक सभ ललित बाबूकेँ अपन अगुआ चुनलक। लोककेँ होइक जे आइ ने काल्हि दुख-दर्दक एहि नरकसँ ओ ओकरा सभक त्राण

करथिन आ ललित बाबू एहन छलाह। हुनका हृदयमे दीन-दुखियाक लेल बहुत दर्द छलनि। खाहे ककरो कपड़ा फाटल होइक, मैल होइक, खाहे कपड़ा आ देहसँ दुर्गन्ध निकलि रहल हो, ललित बाबू जखन ओकरासँ भेंट करैत छलाह तँ लगैक जेना ओ अपना सहोदरसँ भेंट क' रहल होथि। ककरोसँ कोनो दुराव नहि। जखन केओ आर्थिक सहायता माँगय आबय तँ ओ शक्ति भरि ओकर सहायता करबासँ नहि चूकथि। एही सभ कारणसँ ओहि इलाकाक लोक हुनका पाछाँ पागल रहैत छल। ललित बाबूक इएह स्नेहीस्वभाव हुनका १९५२ ई० क संसदीय चुनावमे भारी मतसँ विजयी बनओलक।"

एम० ए० पास कयलाक बादे ओ निर्मलीमे कोशी पीड़ितक सम्मेलन कयने छलाह। क्षेत्रक हेतु स्नेह, किछु करबाक संकल्प आ कोशी क्षेत्रक कायाकल्प करबाक निश्चयक परिणाम छल ई। संसदमे ओ प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू तथा देशक आन वरिष्ठ नेतालोकनिक ध्यान कोशीक समस्या दिस आकृष्ट कयलनि। पुन: डा० जगन्नाथ मिश्रक शब्दमे "लोक-सभामे ललित बाबू उपेक्षिता निर्बन्धा शोक-सरिता कोशीक एतबा चर्चा कयलनि जे ओ संसदीय क्षेत्रमे 'कोशी मिश्र'क नामे विख्यात भ' गेलाह।" १९५४ ई०मे कोशीक बाढ़िक ताण्डव-नृत्य ओ पं० जवाहर लाल नेहरू आ डा० श्रीकृष्ण सिंह, तत्कालीन मुख्यमंत्री, बिहारकेँ देखओलनि। लोक-सभामे तँ ओ प्रयास करिते छलाह। हुनक एहि प्रयत्न सभक फलस्वरूप भारतक प्रथम पंचवर्षीय योजनामे कोशी-योजना सेहो सम्मिलित कयल गेल। स्मरणीय अछि जे प्रथम पंचवर्षीय योजना १९५१ में प्रारम्भ भ' गेल छल। कोशी परियोजनाक प्रारम्भ जन-सहयोगसँ भेल। पं० नेहरू आ श्री गुलजारी लाल नन्दाक परामर्शपर ललित बाबू एहि योजनाक कार्यान्वयनमे जन-सहयोगक प्रयोग कयलनि। ललित बाबूक प्रारम्भिक राजनीतिक जीवन 'भारत सेवक समाज'सँ सेहो सम्बन्धित छल। कालान्तरमे ओ एहि संस्थाक सचिवक पद सेहो प्राप्त कयलनि। भारत सेवक समाजक कार्यकर्त्ता आ पदाधिकारीक रूपमे ओ बिहारक अविस्मरणीय सेवा कयलनि। कोशी परियोजना प्रारम्भ भेलापर ललित बाबूक नेतृत्वमे भारत सेवक समाजक सहयोगसँ कोशीक १४० मील लम्बा तटबन्धक निर्माण संभव भेल। एहि समयमे संसदमे ओ विशेष रूपेँ कोशी क्षेत्रक यातायातक समस्या, रेलवे लाइनक पुनर्निर्माण आ जूट उत्पादन कर' वाला गृहस्थक समस्याक चर्चा

करैत छलाह। जूटक दाम बड़ घटि गेल छलैक आ कृषकक अवस्था खिन्न भ' गेल छलैक। कोशी सँ चर्चाक विषय रहबे करय। लोक-सभामे १९५५-५६ ई०मे हुनका प्राक्कलन समितिक सदस्य बनाओल गेल आ १९५६-५७ ई०मे ओ कोशी योजनान्तर्गत भारत सेवक समाजक सार्वजनिक सहकारिता-कार्यक प्रभारी रहलाह।

१९५७ ई० मे ओ पुनः लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह। एहि बेर ओ केन्द्रीय श्रम आ रोजगार मन्त्रालयमे संसदीय सचिव नियुक्त कयल गेलाह। १९६०मे श्रम योजना आ रोजगार मन्त्रालयक उपमंत्री भेलाह। एही कालमे जेनेवामे अन्तरराष्ट्रीय श्रम-संघटनक ४२म अधिवेशनमे भारतीय प्रतिनिधिक रूपमे ओ भाग लेलनि। कोइला आ लोहा उद्योगक श्रम सम्बन्धक अध्ययनार्थ ओ अमेरिकाक यात्रा कयलनि। मजदूर आन्दोलनमे हुनका रुचि छलनि। १९६२-६४क अवधिमे ओ 'नेशनल प्रोजेक्ट कन्सट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेड'क अध्यक्ष आ भारत सेवक समाजक सचिव भेलाह। 'भारतीय लौह कामगार फेडरेशन'क सेहो एहि कालमे सचिव छलाह। ओ बिहार आइ० एन० टी० यू० सी०क कार्य-समिति आ आल इण्डिया जनरल काउन्सिल, आइ० एन० टी० यू सी०क कार्य-समितिक सदस्य छलाह। ओ 'कांग्रेस फोरम' पत्रिकाक सफलतापूर्वक सम्पादन कयलनि।

१९६२ ई०मे लोक-सभाक सदस्यताक लेल ओ प्रत्याशी छलाह परन्तु निर्वाचित नहि भ' सकलाह। परन्तु, एकर विरुद्ध जे ओ चुनाव याचिका दायर कयलनि ताहिमे सफल रहलाह। हमरा ओहिना मोन अछि जे ओ एहि याचकाक प्रसंगे हमर जेठ भाइ पं० कपिलेश्वर मिश्रसँ, जे ओहि समयमे पूर्णियामे पब्लिक प्रोसेक्यूटर छलाह, सतत विचार-विमर्श करथि। बहुत दिन ओ संसदसँ बाहर नहि रहलाह। १९६४ ई०मे ओ राज्य-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह आ कालान्तरमे श्रम उपमंत्री, नियोजन उपमंत्री, गृह उपमंत्री, वित्त उपमंत्री एवं सम्पूर्ण उत्तरदायित्वक सहित राज्य स्तरीय विदेश व्यापार मंत्री बनाओल गेलाह।

२६ फरवरी, १९६४ कें ललित बाबू केन्द्रीय गृह उपमंत्री नियुक्त भेलाह। २३ जनवरी, १९६६कें वित्त उपमन्त्री बनाओल गेलाह। एही वर्ष कराचीमे कोलम्बो योजना सम्मेलनमे भाग लेलनि। १३ मार्च, १९६७ कें ओ श्रम एवं पुनर्वास मन्त्रालयमे उपमन्त्री नियुक्त भेलाह। अक्टूबर १९६७मे

जेनेवामे आयोजित अन्तरराष्ट्रीय श्रम संघटनक प्रशासी समितिक अधिवेशनमे भाग लेलनि जकर चर्चा पहिनहुँ कयल गेल अछि। १५ नवम्बर, १९६७ कें ओ प्रतिरक्षा उत्पादन मन्त्री बनलाह। जखन ओ प्रतिरक्षा मन्त्रालयमे छलाह तँ अस्त्र-शस्त्र निर्माणक काज बड़ कुशलतासँ चलओलनि। एकरे फल छल जे जखन १९७१ ई०मे पाकिस्तान भारतपर भीषण आक्रमण कयलक तँ ओकरा मुँहतोड़ जवाब द' पराभूत करवामे ललित बाबूक योगदान अविस्मरणीय रहल। ललित बाबू एहि मन्त्रालयक ढाँचामे आमूल परिवर्तन क' देशकें आयुधक सम्बन्धमे आत्मनिर्भरता दिस बढ़ओलनि। एहि मन्त्रालयमे जे हुनकर जे काज भेल ताहिसँ हुनक योग्यता आ प्रतिभाक प्रमाण भेटैत अछि। विदेश व्यापार आ रेल मन्त्रालयमे हुनक कार्य-कलापक लेखा-जोखा भिन्न-भिन्न अध्यायमे कयल जायत।

ललित बाबूमे संगठनक अद्भुत क्षमता छल। एकर प्रत्यक्ष प्रमाण ओहि समयमे देखबामे आयल जखन १९६९मे कांग्रेसमे दरारि पड़ल। कांग्रेस दू भागमे बँटि गेल। बिहारक लगभग सभ शीर्षस्थ नेता सिंडिकेटक पक्षमे चल गेलाह। एकसरे ललित बाबू इन्दिरा जीक संग रहलथिन। १९७१क मार्चमे सामान्य चुनाव भेल जाहिमे श्रीमती इन्दिरा गान्धीक कांग्रेसक प्रत्याशी सभकें अप्रत्याशित सफलता भेटलैक। इन्दिरा कांग्रेसकें लोक-सभामे ३५० स्थान भेटलैक। कांग्रेस टुटलाक बाद इन्दिरा कांग्रेसमे जतबा सदस्य छल ओहिसँ १२० स्थान अधिक ओकरा १९७१मे भेटलैक। ललित बाबू एहि चुनावमे अपने ठाढ़ नहि भेलाह। ओ चुनावक संगठनमे रहिक' इन्दिरा कांग्रसक हेतु अजेय बहुमत प्राप्त करबाक प्रयासमे छलाह। एहिमे हुनका पूर्ण सफलता भेटलनि। १९७२मे ओ दरभंगासँ संसदक चुनावमे ठाढ़ भेलाह आ अजेय बहुमतसँ सोसलिस्ट पार्टीक श्री रामसेवक यादवकें पराजित क' संसद-सदस्य भेलाह।

नेहरूक पश्चात ललित बाबू सभ दिन अपन राजनीतिक जीवनमे इन्दिरा जीक संग देलथिन। ओ कहैत छलथिन जे हमर माथ दुइएक आगाँ झुकैत अछि – एक ईश्वरक आ दोसर इन्दिरा जीक। दुःखक कालमे जखन सिंडिकेट वाला इन्दिरा जीक विरोधमे रहय तखनसँ जीवन पर्यन्त ललित बाबू इन्दिरा जीकें निष्ठापूर्वक संग देलथिन।

बिहारमे ओ कांग्रेसक स्थिति सुदृढ़ कयलनि। जखन कांग्रेसक विभाजन भेल छल आ तकर बादे जे बम्बइमे अधिवेशन भेल छल ओहिमे बिहारक अधिकाधिक डेलीगेटकेँ भाग लेबा लेल ललित बाबू स्वयं पत्र लिखने रहथिन। ओहि समयमे कैक गोटा अपनाकेँ गौरवान्वित बूझि आ हमरा ललित बाबूक मित्र बूझि हुनक हाथक लिखल पत्र देखओने छलाह। हुनक चुम्बकीय व्यक्तित्व राजनीतिमे हुनका लेल बहुत सहायक भेलनि।



४. विदेश-व्यापार मंत्री

जून, १९७०मे ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्री नियुक्त भेलाह। ४ फरबरी, १९७३ तक ओ एहि पदपर रहलाह। एहि अवधिमे निर्यात-विकास तथा विदेश-व्यापारमे भारतक हिस्सेदारीगे पर्याप्त वृद्धि भेलैक। ललित बाबू चिलीक सेन्टयागो नगरमे आयोजित अधिवेशनमे भारतीय शिष्टमंडलक नेतृत्व कयलनि। पश्चात् लीमा ओ पेरूमे आयोजित सतहत्तरि देशक सभाक अध्यक्षता कयलनि। एशिया '७२ नामक तृतीय एशियाई व्यापार-मेलाक आयोजन सेहो हिनके नेतृत्वमे भेल। इंगलैण्डमे व्यापार प्रेफरेन्सपर ब्रिटिश सरकारसँ समझौता-वार्ता कयलनि। पेरिसमे फ्रेंच सरकारसँ भारत तथा यूरोपीय आर्थिक समुदायक बीच आर्थिक सम्बन्धपर समझौता-वार्ता कयलनि। ई रूस, युगोस्लाविया, रूमानिया आ हंगरी सरकारसँ सेहो व्यापार-वार्ता कयलनि। व्यापार-वार्ताक क्रममे ई पाकिस्तान, स्विटजरलैण्ड, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, हांगकांग, वेल्जियम तथा आन-आन देशक भ्रमण कयलनि।

विदेश-व्यापार मन्त्रित्व कालमे ललित बाबू कतेको एहन काज कयलनि जे चमत्कारपूर्ण छल। मधुबनीक चित्रकला एहि अवधिमे विश्वप्रसिद्ध भ' गेल। काल्हि धरि जे कला मधुबनीक लग-पासक गामक धूरामे पड़ल सड़ि रहल छल, आइ ओ अन्तरराष्ट्रीय बजारमे आकर्षणक केन्द्र बनल अछि। मधुबनी क्षेत्रक सैकड़ो लोक एहि कलाक बलें अपन जीविकोपार्जन क' रहल छथि। जयन्ती जनता एक्सप्रेसकें मधुबनी चित्र कलासँ सजायब ललिते बाबूक काज छल जकरा चलैत देश-विदेशक यात्रीकें एकरा देखबाक अवसर प्राप्त भेलैक। मधुबनी चित्रकलाक प्रचार-प्रसार आ प्रोत्साहनक मूलमे छथि ललित बाबू। बिहारक लेल ई बिहारहिमे निर्यात-निगमक स्थापना करओलनि जाहिसँ बहुत वस्तुक निर्यातमे बिहारकें सुविधा भ' गेलैक। विदेश-व्यापार मन्त्री रहितहुँ ई मिथिलांचलक किंवा देशक आन समस्या

केँ बिसरैत नहि छलाह। विदेश-व्यापार मन्त्रीक हैसियतिसँ जखन ई नेपालक संग व्यापारिक समझौता करैत छलाह तखनहि बहुत दिनसँ लम्बित पश्चिमी कोशी नहरि योजनाक स्वीकृति नेपाल सरकारसँ करओलनि। फलस्वरूप ३० जनवरी, १९७४केँ पश्चिमी कोशी नहरिक निर्माण प्रारम्भ भ' गेल। हिनके मन्त्रित्व-कालमे जूट निगमक स्थापना भेल आ जूटक न्यूनतम मूल्य निर्धारित भेल। जूट उत्पादकक हेतु ई एक पैघ काज भेलैक। न्यूनतम मूल्य निर्धारणक पश्चात् कृषकगण किछु आश्वस्त भेलाह। ई निर्यात अभिवृद्धिक नीतिकेँ व्यावहारिक रूप प्रदान कयलनि आ भारतीय अर्थ-व्यवस्थाकेँ सुदृढ़ कयलनि। हिनक प्रयत्नक फल ई भेल जे विदेश-व्यापारक सन्तुलन भारतक पक्षमे मोड़ल जा सकल। ई अर्थशास्त्रक गम्भीर विद्वान तँ छलाहे संगहि व्यावहारिक पक्षमे सेहो बड़ कुशल छलाह। भारतीय विदेश व्यापारकेँ ई दिशा-निर्देश देलथिन। अन्तरराष्ट्रीय व्यापारक पेंचीदगीकेँ सोझरयबामे जाहि वणिक-बुद्धिक आवश्यकता पड़ैत छैक ताहिमे ललित बाबू ककरोसँ पाछाँ नहि छलाह।

जखन ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्रीक रूपमे नियुक्त भेलाह तँ दिल्लीक शीर्षस्थ क्षेत्रमे ई आशंका छल जे विदेश-व्यापार सन विशेषज्ञता वाला क्षेत्रकेँ श्री मिश्र सन राजनीतिक व्यक्ति समुचित दिशा नहि द' सकथिन। पुनः ई सोचल जाइत छल जे एहि मंत्रालयमे अफसरशाहीक बोलबाला पहिनहिसँ छल। की ललित बाबू हुनकालोकनिक चाँगुरसँ निकलि सकताह? की अफसरलोकनिकेँ मनमाना करबाक छूट नहि भेटि जयतनि? ललित बाबू अढ़ाय वर्षसँ उपर एहि मन्त्रालयमे मंत्री रहलाह आ अपन कार्य-पद्धतिसँ एहि सभ आशंकाकेँ निर्मूल क' देलनि। हिनक मन्त्रित्व-कालमे ई मन्त्रालय जाहि सफलतासँ काज कयलक से सिद्ध करैत अछि जे ललित बाबू सर्वाधिक योग्य विदेश-व्यापार मंत्री छलाह। हिनकर दृष्टि बड़ सूक्ष्म छलनि आ एहि मन्त्रालयक काजकेँ ई सफलतापूर्वक सम्हारलनि तथा विदेश-व्यापारकेँ सर्वथा नव भूमिका देलनि।

हिनकर मन्त्रित्व-कालमे अनेक निगमक स्थापना भेल। सार्वजनिक क्षेत्रक उद्योगक क्षमतामे हिनका पूर्ण आस्था छलनि आ इएह कारण छल जे ई कतेको एहन काज कयलनि जाहिसँ देशक अन्तरराष्ट्रीय व्यापारमे एहि क्षेत्रक प्रमुखता हो। ई भारतीय रूइ निगमक स्थापना करओलनि। एहि निगम

द्वारा प्रति वर्ष १०० करोड़ रुपैयासँ अधिक मूल्यक तूरक आयातक कार-बार होइत छल। दोसर महत्वपूर्ण निगम छल भारतीय काजू निगम जे प्रति वर्ष ४० करोड़ रुपैयाक मूल्यक कच्चा काजूक निर्यात करैत छल। भारतीय जूट निगमक एहि उद्देश्यसँ स्थापना कयल गेल जे मध्यवर्त्ती लोकनिकेँ हटाक' जूटक निर्यात बढ़ाओल जा सकय। एही प्रकारेँ भारतीय चाय व्यापार निगमक स्थापना एहि उद्देश्यसँ कयल गेल जे भारतीय चाहक बिक्री अधिक मूल्यपर कयल जा सकय। विदेशमे भारतीय मशीनक निर्यात बढ़यबाक उद्देश्यसँ भारतीय प्रायोजना तथा उपकरण निगमक स्थापना भेल। भारतक विशाल समुद्री खाद्य साधनक निर्यातकेँ बढ़यबाक हेतु सामुद्रिक उत्पाद विकास प्राधिकरणक स्थापना भेल। नव-नव वस्तुक निर्यातकेँ बढ़ा क' निर्यात व्यापारकेँ नव दिशा प्रदान करबाक उद्देश्यसँ व्यापार विकास प्राधिकरणक स्थापन भेल। फिल्मक आयात-निर्यात हेतु एक एजेन्सीक स्थापना भेल। एहि सभक फल ई भेल जे ललित बाबूक विदेश-व्यापार मन्त्रित्व-कालक अन्तिम चरणमे ८० प्रतिशत आयात आ २५ प्रतिशत निर्यात व्यापार सार्वजनिक क्षेत्रक संस्था द्वारा होमय लागल। ललित बाबूकेँ सार्वजनिक क्षेत्रक संस्थामे पूर्ण आस्था छलनि। आयात-निर्यात व्यापारक क्षेत्रमे जे एकाधिकार जकाँ बनल छल तकरा ई सार्वजनिक क्षेत्र द्वारा तोड़बाक सफल प्रयास कयलनि। हिनक धारणा छलनि जे बिचौलिया सभक कारणे कच्चा रबड़, जूट आ तूरक समुचित मूल्य उपजाबयबालाकेँ नहि भेटैत छलनि जखन कि एहि नगदी फसिलसँ उत्पादित वस्तुक दाम उपभोक्तालोकनिकेँ बहुत अधिक देबय पड़ैत छलनि। हिनकर उद्देश्य छलनि जे वास्तविक उपभोक्ताकेँ उपर्युक्त वस्तुक लाभकर मूल्य भेटैक। एक आओर महत्वपूर्ण कार्य जे ई अपन मन्त्रित्व-कालमे कयलनि से छल गरीबक लेल सूती मिल द्वारा सस्त वस्त्रक निर्माणमे वृद्धि। गरीबक लेल वस्त्रक निर्माणक प्रक्रिया पहिनहिसँ प्रारम्भ छल परन्तु नहि बनओलापर मिलकेँ किछु जुर्माना देबय पड़ैत छलैक। मिलसभ सामान्यतः सस्त वस्त्र निर्माणक अपेक्षा जुर्माना देब अधिक लाभप्रद बुझैत छल। ललित बाबू एहि स्थितिक अध्ययन क' मिल सभक लेल ई अनिवार्य क' देलथिन जे ओकरा सभकेँ कन्ट्रोलवाला वस्त्र अधिक परिमाणमे बनाबय पड़तैक। इएह कारण छल जे हिनक मन्त्रित्व-कालमे सस्त कपड़ाक उत्पादन दस गुण अधिक भ' गेल। जतबा दूर मूल्यवृद्धिक प्रश्न छल ई सस्त कपड़ाक मूल्य बढ़यबाक

रहवे नहि चलाह। ई एह कारणे मूल्य-वृद्धिक पाछाँ नहि धराह जे मुद्रा-स्फीतिक घोषित संघर्ष एहिसँ दुर्बल भ' जाइत।

हिनकर मंत्रित्व-कालमे सोवियत संघ आ अन्य समाजवादी देशक संग भारतक व्यापार कइगुणा भ' गेल। हिनके कार्यकालमे सोवियत संघ अपना देशक संग व्यापार करबाला देश सभमे सर्वप्रमुख भ' गेल। हिनकर प्रमुख उद्देश्य छल भारतक विदेश-व्यापारक असंतुलनकें हटायब आ ताहिमे हिनका पूर्ण सफलता भेटलनि। १९६५-६६मे भारतक व्यापार-संतुलनक प्रतिकूलता ९०० करोड़ रुपैआक छल जे १९७०-७१मे घटिक' १०० करोड़ रुपैआसँ सेहो कम भ' गेल। १९७१-७२मे ७३ करोड़ रुपैयाक आ १९७२-७३मे एहिसँ पछिला वर्षक अपेक्षा ३६३ करोड़ रुपैयाक अधिक निर्यात भेल। एहि तीनू वर्षक अवधिमे निर्यातमे भेल सम्पूर्ण वृद्धि चतुर्थ पंचवर्षीय योजनामे राखल गेल लक्ष्यसँ ७ प्रतिशत अधिक छल। विदेश-व्यापार मंत्रीक रूपमे हिनकर सफलताक अंकन एहिसँ स्पष्ट भ' जाइत अछि। विदेश-व्यापारक इतिहासक ई काल भारतक लेल प्रशंसनीय एवं उल्लेखनीय अछि। विभिन्न पाश्चात्य देशमे यथा रूस, पोलैण्ड, अमेरिका, चेकोस्लोवाकिया आदिमे, हुनके द्वारा मिथिलाक चित्रकलाक प्रचार-प्रसार भेल। एहिसँ हमारा लोकनिक सांस्कृतिक क्षेत्रमे तँ विकास भेबे कयल, संगहि अधिक मात्रामे विदेशी मुद्राक अर्जन सेहो भेल। एतबे नहि, एहिसँ मिथिलांचलक सैकड़ो नर-नारीक रोजी-रोटीक समस्याक समाधान भेल। ललित बाबूक शब्दहिमे विदेश-व्यापारसँ सम्बन्धित हुनक विचार देखू :—

"अन्तरराष्ट्रीय बाजार की प्रवृत्ति बदल रही है। बेचनेवाले, खरीदनेवाले और माल तीनों बदल रहे है। हम कब तक जूट की गड्डी और चाय की डिब्बी लिए हाटमें बैठे रह सकते हैं ? सफल होने के लिए हमें कच्चे मालों के अलावा बना-बनाया माल बाहर भेजना होगा—इंजीनियरी का सामान, मशीनों के कल-पुर्जे, पंखे, एयरकंडीशनर, सभी कुछ। हमें लातानी अमरीका, अफ्रीका, मध्य एशिया और पूर्वी यूरोप हर जगह अपनी मंडी बनानी होगी। अपने ग्राहकों के मन में भारतीय माल के प्रति विश्वास पैदा करना होगा। हमने काफी नई जमीन तोड़ी है, हम सुदूर कोनों में भी पहुँचे हैं—हमारे विदेश व्यापार की संभावना बहुत अधिक है।"

देखू ललित बाबूक दूर दृष्टि आ हिनक विश्वास। औद्योगिक दृष्टिएँ आगाँ बढ़ल राष्ट्र सभके ई स्पष्ट शब्दमे कहैत छलथिन जे भारतके भिक्षा-दान नहि चाही, भारत रचनात्मक साझेदारी चाहैत अछि। भारत एक विकासशील देश अछि आ ललित बाबूमे ओकरा एक सशक्त नेता भेटलैक।

एक अन्य अवसरपर हुनक उक्ति देखू :—

"आपको अन्तरराष्ट्रीय लेन-देन में अपना संतुलन बनाए रखना है, आयात के लिए विदेशी मुद्रा अर्जित करनी है, अपने सुरक्षित कोष को मजबूत बनाए रखना है—इस सबके लिए जरूरी है कि आप अंदरूनी खपत को नियंत्रित कर अन्तरराष्ट्रीय मंडीमे अपने माल को बेचें। आजके गर्दन तोड़ मुकाबले के युग में यह तभी संभव है जबकि एक ओर आपका माल ऊँचे दरजे का हो और दूसरी ओर आप एक कुशल व्यापारी हों।"

उपर्युक्त विचारहिक कारणे हमरालोकनि जनैत छी जे ललित बाबूक कार्यकालमे भारतक विदेश-व्यापार अभूतपूर्व गति, प्रगति आ दिशा प्राप्त कयलक। ई एक बातमे स्पष्ट छलाह जे भारतीय व्यापारीके उत्पादित वस्तुक गुण आ प्रकार उत्कृष्ट कोटिक राख' पड़तैक आ व्यापारिक ढंगमे कुशलता आन' पड़तैक। विदेश-व्यापारमे सफलताक हेतु हिनकर दृष्टिमे ई दुनू गुण आवश्यक छल आ तें ई विकसित देशसभसँ भिक्षादानक नहि प्रत्युत रचनात्मक हिस्सेदारीक अपेक्षा रखैत छलाह। नेपालक संग प्रतिदिन भेल जाइत कठिनतर व्यापारक सम्बन्धकें सोझराक' ई जाहि प्रकारक नेपाल-भारत व्यापार समझौता कयलनि से हिनक कौशल आ राज-नीतिक सूझ-बूझक परिचय दैत अछि।

ललित बाबू जाही कोनो मन्त्रालयमे रहलाह, मिथिलांचलक अथवा देशक आन समस्याकें बिसरैत नहि छलाह। हम पहिनहि कहि आयल छी जे कोना ई पश्चिमी कोशी नहरिक निर्माणक स्वीकृति नेपाल नरेश महाराज महेन्द्रसँ प्राप्त कयलनि जखन ई व्यापार-संधिपर हस्ताक्षर करबाक लेल काठमांडू गेलाह। एहि काजक हेतु कतबा दिनसँ राज्य सरकार आ केन्द्रीय सरकार प्रयत्नशील छल परन्तु काज आगाँ नहि बढ़ैत छलैक। ललित बाबू अपन चुम्बकीय व्यक्तित्वसँ अनायास ई काज क' लेलनि। एहने दोसर उदाहरण अछि। विदेश व्यापार मन्त्रित्व कालमे ई दरभंगामे मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करओलनि।

ललित बाबू विदेश-व्यापार मन्त्रित्व-कालमे मास्कोक यात्रापर गेल छलाह आ घुमबाक क्रममे लेनिन लाइब्रेरी सेहो देखलनि। ओहि ठाम देबालपर लिखल एक वाक्य हिनका बड़ आकृष्ट कयलक आ ओ छल— "यातायातक सुविधा आ बिजलीक उपलब्धि विकासक मूलमन्त्र थिक।" हिनक अनुज श्री मृत्युंजय नारायण मिश्र हमरा कहलनि जे एकटा इहो कारण छल जे ललित बाबू हर्षपूर्वक रेल मन्त्रालयक भार स्वीकार कयलनि आ अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रकें बिहारमे बिजली विभागक भार स्वीकार करबाक हेतु अभिप्रेरित कयलथिन।



५. रेल मंत्री

५ फरवरी, १९७३ के ललित बाबू रेल मंत्रीक पदभार ग्रहण कयलनि। पदभार ग्रहण कयलाक मात्र दू सप्ताहक भीतर २० फरवरीके हिनका पार्लियामेन्टमे रेलवे बजट प्रस्तुत करबाक छलनि। रेल द्वारा निर्माण कार्यक व्यय आ कर्मचारीपर होमय वाला खर्चमे लगातार वृद्धि भ' रहल छलैक। दोसर दिस जन-साधारणक आर्थिक स्थिति सेहो खराब छलैक। एहने स्थितिमे ललित बाबूके पार्लियामेन्टमे रेलवे बजट प्रस्तुत करबाक छलनि। रेलवेक परिचालनात्मक तथा अन्याय प्रकारक व्ययक वृद्धिके पूरा करबाक एके उपाय छल महसूलमे वृद्धि। जखन-जखन किराया-भाड़ामे वृद्धि होइत छैक, एकर कटु आलोचना होइत अछि आ विशेष रूपें जखन मूल्य-वृद्धिक कारणे जनताक आर्थिक स्थिति खराब हो। एहिसँ जन-साधारणमे आक्रोश उत्पन्न होयब स्वाभाविक अछि। परन्तु रेलवेके घाटासँ बचयबाक हेतु ललित बाबूके बाध्य भ' क' रेल महसूलमे वृद्धिक निर्णय लेअय पड़लनि। ई अर्थशास्त्री छलाह आ सभ स्थितिके सोझांमे राखि एहि रूपें किराया बढ़-ओलनि जे जन-साधारण अधिक भारक अनुभव नहि करय। मालक किरायामे सेहो वृद्धि भेलैक परन्तु दैनिक उपयोगक अनिवार्य वस्तु यथा खाद्यान्न, नोन, मटिया तेल, चीनी, दूध, फल, हरियर तरकारी सभके ओहि वृद्धिसँ मुक्त राखल गेल। यात्रीक महसूलमे विशेष रूपें उच्च श्रेणीक किरायामे वृद्धि कयल गेल। प्रथम तथा वातानुकूलित श्रेणीपर भार पड़लैक। द्वितीय श्रेणीक यात्रीके सामान्यतः दूरगामी मेल अथवा एक्सप्रेसक किरायाक वृद्धिक भार सह' पड़लैक। वस्तुतः ललित बाबू समाजवादी विचारक छलाह आ सामान्य जनके यथासंभव भार देबाक पक्षमे नहि छलाह। ई १९७४-७५क रेलवे बजटमे १४० करोड़ रुपैयाक अतिरिक्त राजस्वक व्यवस्था कयलनि आ रेलवेक वित्तीय स्थितिके सुदृढ़ कयलनि।

ललित बाबूक रेल-मंत्रित्व-कालक जे अविस्मरणीय घटना अछि से थिक मइ, १९७४क आम हड़ताल। ओना तँ अपन सम्पूर्ण कार्यावधिमे हिनका रेलवे कर्मचारी द्वारा कार्यस्थगन आ हड़तालक सामना करय पड़लनि परन्तु आम हड़ताल एक अभूतपूर्व घटना छल। ई हड़ताल यदि सफल भ' जाइत तँ रेलवेक चक्का जाम भेलाक संगहि विकासो कार्य ठप्प भ' जाइत, राष्ट्रक सभ प्रगति स्थगित भ' जाइत। परन्तु ललित बाबू पूर्ण मानवीयतासँ डटिक' एहि हड़तालक मोकाबला कयलनि। रेलगाड़ीक आवागमन जारी रहल, हड़तालो जारी रहल आ अन्ततोगत्वा हड़ताल समाप्त भेल। एहि अवधिमे ई कर्मचारीलोकनिकेँ स्पष्ट रूपेँ कहलथिन—

"रेलवे प्रशासन अपनी ओर से सदैव प्रयत्नशील रहेगा कि कर्मचारियों का असंतोष दूर हो और गम्भीर रूप होने से पूर्व ही समस्या हल हो जाये। इस समय जबकि राष्ट्र आर्थिक कठिनाइयों के बीच से गुजर रहा है, हम किसी प्रकार भी हड़ताल को सहन नहीं कर सकते क्योंकि इससे एक के बाद दूसरी प्रतिक्रिया होगी और आवश्यक सामग्री के परिवहन में भी बाधा पड़ेगी।"

रेल हड़तालक समाप्ति पर जे प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी हुनका पत्र लिखने छलथिन तकरा हम नीचाँ उद्धृत करैत छी :—

"पिछले कुछ दिनों से आप, रेल मंत्रालय और रेलवे बोर्ड सभी को बड़े ही कष्टप्रद वातावरण में काम करना पड़ा है। मैं मानती हूँ कि रेलवे ने स्थिति को बहुत ही अच्छे ढंग से और विवेकपूर्वक संभाला है। हड़ताल की समाप्ति से हमारी कठिनाइयों का अन्त नहीं हो जाता। वास्तव में यह तो कुछ अन्य परेशानियों की शुरुआत है। हमें रेल कर्मचारियों से सीधा सम्पर्क स्थापित करना चाहिए, जिससे हम उनकी समस्याओं को बखूबी समझ सकें इन्हें दूर कर सकें। हमने उनके साथ जो भी वायदे किये हों, उन्हे बिना विलम्ब किये, अमल में लाया जाना चाहिए।

भारतीय रेलों—वस्तुतः समूचे देश – के लिए पिछले कुछ सप्ताह बहुत ही दबाव और तनाव भरे रहे। लेकिन शुक्र है कि आपके द्वारा स्थिति के कुशलतापूर्वक संचालन और रेल कर्मचारियों की कर्तव्यपरायणता के कारण हम इस परीक्षापूर्ण घड़ी में खरे उतरे और राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था को अंधकार में गिरने से बचाया जा सका।"

रेल भवनमे हड़तालक समाप्तिक बाद महाप्रबन्धक लोकनिक बैसकमे ललित बाबू स्वयं कहने छलथिन :—

''हड़ताल समाप्त हो गई है, लेकिन कई समस्याएँ हैं जिन्हें सुलझाना है। उन्हें तुरत और गम्भीरता से सुलझाना है। साथ ही यह याद रखिए कि कर्मचारियों की शिकायतें यदि ध्यानपूर्वक सुनी और समय पर दूर कर दी जाती हैं और उनके लिए कल्याण-व्यवस्थाएँ समयपर कर ली जाती हैं तो ऐसे आन्दोलनों की संभावना कम हो जाती है।''

छैक कतहु बदलाक भावना किंवा सामन्ती तेवर? कर्मचारी आ अधिकारीमे कटुताक भावना नहि आबय तकरा लेल ई अधिकारीगणकेँ बेर-बेर 'क्षमा करू आ बिसरि जाउ'क सिद्धान्त अपनयबाक हेतु चेतावनी देलथिन। ई अछि एक ज्वलन्त उदाहरण मानवतावादी श्री ललित नारायण मिश्रकेँ चिन्हबाक।

ललित बाबू अपन पिताक एहि बातकेँ कखनहुँ नहि बिसरैत छलाह जे 'सपूत ओ जे रेल चलाबय'। हिनकर कार्यकालमे अनेक नव रेल लाइन बनल, अनेक छोटी आ मीटर लाइनक परिवर्तन बड़ी लाइनमे भेल, अनेक नव लाइन पिछड़ल अंचलमे बनल। १९७३-७४क रेल-बजट प्रस्तुत करैत काल ललित बाबू पिछड़ल इलाकासभमे नव लाइनक निर्माणक सम्बन्धमे नव दृष्टिकोण अपनयबाक संकेत कयलथिन। हिनक दृढ़ धारणा छलनि जे पिछड़ल इलाकामे रेल-यातायातसँ प्रारम्भिहिसँ लाभक आशा नहि करबाक चाही। एहि इलाका सभमे आरम्भहिसँ ओतबा माल आ यात्री भेटब संभव नहि जाहिसँ रेल-यातायात लाभप्रद भ' जाय। परन्तु रेल लाइनक निर्माणोपरान्त एहन क्षेत्रसभ विकसित भ' जायत आ पश्चात् रेलवेकेँ लाभ होमय लगतैक। एहि घोषित नीतिक अनुसार देश भरिमे हिनक कार्यावधिमे पिछड़ल इलाका सभमे नव रेल लाइन बनयबाक हेतु सर्वेक्षण कयल गेल। एहिमे मध्य प्रदेशक बस्तर जिलामे डिल्ली-रजहरा-जगदलपुर लाइन, उड़ीसामे जामपुरा-बाँसपानी आ महाराष्ट्र एवं कर्नाटकक मंगलौर-आष्टा लाइन, आन्ध्र प्रदेशमे नड़ी-कुड़ी-बीबी नगर लाइन, त्रिपुरामे धरमनगर-उनखौरा-सबरुम लाइन, मणिपुर राज्यक सिलचर-जीरीबाम लाइन, हिमाचल प्रदेशक नांग-तलबाड़ा लाइन आ पश्चिम बंगालक माल्दा-बेलुर घाट लाइन विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि।

ललित बाबूक ध्यान विशेष रूपें छोटी आ मीटर लाइनकें बड़ी लाइनमे परिवर्तित करबाक दिस गेलनि। ओ नीक जकाँ जनैत छलाह जे मीटर अथवा छोटी लाइनसँ यात्री वा मालकें बड़ी लाइनपर उतारबा आ चढ़यबामे बड़ कष्ट होइत छैक। हुनका इहो बुझल छलनि जे छोटी आ मीटर लाइनक मालगाड़ीक डिब्बासँ मालक चोरी सर्वाधिक होइत छैक। हुनक निश्चय छलनि जे छोटी आ मीटर लाइनकें शनैः शनैः देश भरिसँ समाप्त क' ओकरा बड़ी लाइनमे परिवर्तित क' देल जाय आ इहो जे एहि कार्यमे पिछड़ल इलाकाकें प्राथमिकता देल जाय। तदनुसार न्यू बंगाई गाँव—गुवाहाटी-बंगलुर-गुन्तकल-एर्नाकुलम-त्रिवलों, अहमदाबाद-दिल्ली, बरौनी-कटिहार, गुंटूर-मचरला, समस्तीपुर-दरभंगा आ मुरादाबाद-रामनगर आदि खंडपर छोटी अथवा मीटर रेल लाइन सभकें बड़ी रेल लाइनमे बदलबाक निश्चय कयल गेल। फलस्वरूप पूर्वोत्तर रेलवेपर ६०४ कि०मी० लम्बा बाराबंकी-समस्तीपुर मीटर लाइनकें बड़ी लाइनमे बदलबाक कार्य सर्वाधिक महत्त्वक अछि। एकर उद्घाटन २१ अप्रैल, १९७३कें प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कयल गेल। एहि लाइनक परिवर्तनपर लगभग ४६.३४ करोड़ रुपैया खर्चक अनुमान छल। उत्तर प्रदेशमे मुरादाबाद आ रामनगरक बीच ७८ किलोमीटर लम्बा मीटर रेल लाइनकें बड़ी लाइनमे बदलबाक शुभारम्भ २० जनवरी, १९७४कें स्वयं प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी कयलनि। एकर पूर्व ९ जनवरी, १९७४कें उत्तर प्रदेशमे रामपुर काठ गोदामक बीच ९८ किलोमीटर लम्बा बड़ी लाइनक उद्घाटन प्रधानमंत्रिये द्वारा सम्पन्न भेल।

कतेको बन्द लाइन सभकें ललित बाबू चालू कयलनि। पश्चिम बंगालमे हावड़ा-आमता-चम्पाडांगा रेल लाइनकें ओकर प्रबन्धक मार्टिन लाइट रेलवेज द्वारा १ जनवरी, १९७३ कें बन्द क' देल गेल छल। एहि लाइनक बन्द भेलासँ जनताकें बड़ कष्ट होइत छलैक। ललित बाबू एकरा तँ चालू करबे कयलनि संगहि एकरा बड़ी लाइनमे परिवर्तित करबाक सेहो आदेश देलथिन। १६ जुलाइ, १९७४ कें ७३·५३ कि० मी० लम्बा एहि लाइनक निर्माण कार्यक शुभारंभ प्रधान मंत्री कयलनि। १९०७मे स्थापित १७३ कि० मी० लम्बा शाहदरा-सहारनपुर छोटी लाइन सेहो घाटा लगबाक कारणें बन्द क' देल गेल छल। एकरहु बड़ी लाइनमे बदलबाक कार्य प्रारंभ क' देल गेल। एतबे नहि, रेल लाइन सभक पुनर्स्थापनाक काज सभपर सेहो विशेष रूपें ध्यान देल गेल। उत्तर प्रदेशक छितौनासँ बिहारक बगहा धरि

२१·४१ कि० मी० लम्बा मीटर लाइनक पुनर्स्थापना आ गंडक पुलक निर्माण-कार्यक शुभारंभ २२ अक्टूबर, १९७४ कें गेल। ५ करोड़ रुपैयाक लागतसँ बनयबाला काशी रेलवे स्टेशनक उद्घाटन १४ जनवरी, १९७४कें श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा कयल गेल।

रेलवेक विकास आ उन्नतिक हेतु श्री ललितनारायण मिश्रक मंत्रित्व-कालमे जतबा काज कयल गेल तकर वर्णन संक्षेपमे एतय प्रस्तुत कयल जा रहल अछि। १४ अप्रैल, १९७३ कें जानकी एक्सप्रेसक उद्घाटन क' सम्पूर्ण मिथिलांचल एवं नेपाल तराइमे द्रुतगामी रेल सेवाक सुविधा प्रदान कयल गेल। समस्तीपुर-बाराबंकी बड़ी लाइनक निर्माणसँ बिहारक जनता कलकत्ता दिल्ली आ बम्बइ आदि नगर सभमे सुविधापूर्वक जा सकैत छथि। १८ जून, ७३ के सरायगढ़ तथा प्रतापगंजक बीच २३ कि० मी० नव रेल लाइनक निर्माण द्वारा सहरसा जिलाक सुदूर क्षेत्र सभमे सम्पर्क कयल गेल। १८ सितम्बर, ७३ कें प्रतापगंज तथा फारबिसगंजक बीच ४९ कि० मी० लम्बा नव रेल लाइन सेवाक उद्घाटन क' सहरसा तथा पूर्णिया जिलाक सुदूरतम क्षेत्रक बीच सम्पर्क स्थापित कयल गेल। २ अक्टूबर ७३ कें रेल सेवा आयोग, मुजफ्फरपुरक कार्यालयक उद्घाटनसँ बिहारी युवकलोकनिकें रेल सेवामे सुविधापूर्वक प्रवेश करबाक अवसर प्राप्त भेलनि। ३१ अक्तूबर, ७३ कें बड़ी लाइनपर चल'बाला जयन्ती जनता एक्सप्रेसक उद्घाटन क' दिल्लीसँ मिथिलाक सीधा सम्पर्क स्थापित भेल। एहि गाड़ी द्वारा मिथिलाक चित्रकलाक सेहो खूब विज्ञापन भेल। ९ जनवरी, १९७४ कें उत्तर प्रदेशक रामपुर एवं हल्द-वानीक बीच ९१.७३ कि० मी० लम्बा बड़ी लाइनक निर्माण-कार्यक उद्घाटन द्वारा सम्पूर्ण नैनीतालक तलहटी क्षेत्रक लेल पूर्ण विकासक मार्ग प्रशस्त कयल गेल। १० जनवरी, ७४ कें मुरादाबाद तथा रामनगरक बीच ७८ कि० मी० लम्बा बड़ी लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल। २२ फरबरी, ७४ कें सकरी आ हसनपुरक बीच ७५ किलो मीटर लम्बा नव रेल लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल। एहि रेल लाइनसँ एहि क्षेत्रक जनताकें कृषि उत्पादन अधिक लाभकर भ' जयतैक आ संगहि प्रसिद्ध तीर्थस्थान कुशेश्वर-नाथक मंदिरसँ सम्पर्क भ' जयतैक। १५ जून, १९७४ कें झंझारपुर आ लौकहा बजारक बीच नव रेल लाइनक निर्माणक उद्घाटन कयल गेल। १६ जून, ७४ कें सरायगढ़ तथा प्रतापगढ़क बीच नवनिर्मित रेल लाइनपर रेल

सेवाक उद्घाटन कयल गेल। २ जनवरी, १९७५ कें समस्तीपुरसँ मुजफ्फरपुर वाला बड़ी लाइनक उदघाटन स्वयं ललित बाबू कयलनि जाहिमे ओ अपन प्राणदान सेहो कयलनि। बिहारक सेवामे ई हिनकर अन्तिम कार्य छल। एहि अवसरपर भाषण करैत ओ जे बजलाह से परिचायक अछि हुनकर रेलवे विकासक नीतिक।

"रेल मंत्रालय ने पिछड़े हुए इलाकों में नयी रेलवे लाइनें बिछाने के लिए योजना आयोग से २२५ करोड़ रुपये की मांग की है। योजना आयोग ने इस काम के लिए केवल १०० करोड़ रुपये देने की स्वीकृति दी है। लेकिन इतनी कम राशि से हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाएँगे। हमने कल्याणकारी राज्य की स्थापना की है। इसलिए हम केवल उसी योजना को लागू करना नहीं चाहते जिससे हमें आर्थिक लाभ हो। हमें तो यह भी देखना होगा कि किस प्रकार हम लोगों को अधिक से अधिक सुविधा दे सकें, किस प्रकार उद्योग-धंधों को गाँव-गाँव में फैला सकें और किस प्रकार हम पिछड़े हुए इलाकों तक समृद्धि और विकास की रोशनी पहुँचा सकें। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखकर हमने देश के कई इलाकों में, विशेषकर पिछड़े हुए इलाकों एवं पहाड़ी क्षेत्रों में नयी रेल लाइन बिछाने के कार्यक्रम की शुरुआत की है। चूँकि बिहार यातायात की दृष्टि से हमारे देश में काफी पिछड़ा राज्य रहा है, इसलिए हम इस बात की भरसक कोशिश कर रहे हैं कि यहाँ अधिक से अधिक नयी रेलवे लाइनें बनाई जायँ और मौजूदा छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में बदला जाय। बिहार में इस समय जिन नयी रेलवे लाइनों को बनाने और छोटी लाइनों को बड़ी लाइनों में बदलने का काम चल रहा है उनपर लगभग साढ़े सैंतीस करोड़ रुपये खर्च होंगे।"

ललित बाबूक दृढ़ धारणा छलनि जे बिहारक पिछड़ापनकें दूर करबाक हेतु एतय रेलवेक विकास आवश्यक अछि। हुनक इहो कहब छलनि जे कोइला आ खनिज पदार्थक प्राचुर्य रहितहुँ बिहार राज्य आर्थिक दृष्टिसँ उपर नहि उठि सकैत अछि। रेलवेक विस्तार द्वारा ओ बिहारक विकासक हेतु कटिबद्ध छलाह। एहि सभ बातकें ध्यानमे रखैत हुनके शब्दमे हुनक योजनाक रूपरेखा देखू। ई ओ समस्तीपुर वाला अपन भाषणमे कहलथिन :—

"....कई और योजनाओं के सम्बन्ध में भी सर्वेक्षण किए जा रहे हैं। इसमें मुख्य हैं—समस्तीपुर-रक्सौल, राँची-लोहरदगा और बरौनी-

कटिहार के मीटर लाइन खंडों को बड़ी लाइन में बदलने के लिए किए जाने वाले सर्वेक्षण। इन तीनों लाइनों पर लगभग तेइस करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। हमारा यह प्रयास है कि हम पूरे विहार राज्य में रेलवे लाइनों का जाल बिछा दें और इसलिए हम बिहार के कई अन्य क्षेत्रों में मीटर और बड़ी लाइन बनाने जा रहे हैं। इनमें से कुछ पर काम हो रहा है और कुछ पर अगले वर्ष काम शुरू कर दिया जायगा। ये लाइनें हैं—मन्दार हिल से दुमका के रास्ते सैंथिया तक नयी बड़ी लाइन, भीमगंज से बख्तियारपुर तक मीटर लाइन, मधेपुरा से सिंहेश्वर स्थान तक मीटर लाइन, डेहरी आन सोन से पिपराडीह तक बड़ी लाइन, राँची से कोरबा तक बड़ी लाइन, गया से राजगीर तक बड़ी लाइन, सोनपुर से पहलेजाघाट और दरौंदा से महाराजगंज तक की मीटर लाइन को बड़ी लाइन में बदलना और निर्मली से सरायगढ़ के खंड को फिर से चालू करना। बाराबंकी से समस्तीपुर के बीच छोटी लाइन को बढ़ी लाइन में बदलने का काम भी शुरू हो चुका है, जिसका एक महत्वपूर्ण हिस्सा यानी समस्तीपुर से मुजफ्फरपुर के बीच की बड़ी लाइन आज तैयार हो गयी है। इस इलाके के यातायात के इतिहास में आज एक नया अध्याय शुरू हो रहा है।"

एही भाषणक क्रममे ओ कहलथिन जे पटना लग गंगा नदीपर एक रेलवे पुल बनयबाक सेहो निश्चय कयल गेल अछि आ एकर सर्वेक्षण कार्य सेहो प्रारम्भ भ' गेल अछि। हुनक आशा छलनि जे पाँचम पंचवर्षीय योजना कालमे ई काज आरम्भ क' देल जायत। परन्तु आइ तँ छठम पंचवर्षीय योजनाक सेहो दू वर्षसँ अधिक बीति रहल अछि मुदा गंगापर रेलपुलक कार्य प्रारम्भ नहि भेल। के कराओत? जाहि संकल्प आ तीव्रतासँ ललित बाबू योजनासभक कार्यान्वयन करैत छलाह से आब प्रायः कल्पनातीत अछि। एकर अतिरिक्त विशेष रूपें विहारमे किछु स्टेशन सबपर नव भवन बनयबाक किंवा वर्तमान भवनक विस्तारक कार्य सेहो ओ प्रारम्भ करओलनि। सुपौल, झंझारपुर, दरभंगा, मधुबनी, सकरी, सहरसा प्रभृति स्टेशनसभ पर भवन निर्माण अथवा भवन विस्तारक काज हुनके प्रारम्भ कराओल छल। समस्तीपुरक भाषणमे ओ कहने छलथिन जे उपलब्ध साधनसँ विहार राज्यक स्टेशन सभपर यात्री सम्बन्धी अधिक सुविधा प्रदान कयल जायत। एहि उद्देश्यसँ किछु स्टेशनपर विश्रामालय आ प्रतीक्षालयक विस्तारक कार्य सेहो प्रारम्भ कराओल गेल छल।

नव रेलवे लाइनक निर्माण, पुरान लाइनक पुनस्थापना आ गेज परिवर्तनक अतिरिक्त यात्री-सुखसुविधा सँ सम्बन्धित अनेकानेक कार्य ललित बाबूक मंत्रित्वकालमे भेल। सवारी गाड़ी सभसँ तृतीय श्रेणीक लोप क' क' ओ जन-साधारणकें तृतीय श्रेणीक यात्री कहयबाक अभिशापसँ मुक्त कयलनि आ द्वितीय श्रेणीक यात्रीक सुख-सुविधामे वृद्धि कयलनि। गाड़ीमे भीड़-भड़क्का कम करबाक हेतु गोहाटी मेल, अवध एक्सप्रेस, जानकी एक्सप्रेस आ जयन्ती जनता सन अधिक आरामदायक आ दूरगामी सवारी गाड़ी सभक व्यवस्था कयलनि। एहि गाड़ी सभक साज-सज्जा चित्ताकर्षक आ कलात्मक बनाओल गेल। सवारी गाड़ीक डिब्बा सभमे प्रकाशक उत्तम प्रवन्ध कराओल गेल, नीक शौचालय आ छत सभ अधिक गरम नहि हो तकर हेतु विशेष व्यवस्था कराओल गेल। प्लेटफार्म सभपर छतक, पानिक नलक आ टिकट घरक पर्याप्त व्यवस्था कराओल गेल। रेलमंत्री होयबाक तीन-चारि मासक अभ्यन्तर ललित बाबू दिल्ली आ कलकत्ताक बीच नित्य चलयबाला सुपर पार्सल एक्सप्रेस गाड़ी चलयबाक आदेश पारित कयलनि जाहिसँ व्यापारी वर्गकें खूब सुविधा भेलैक। ई गाड़ी सभ दिल्लीसँ कलकत्ता मात्र ३४ घंटामे पहुँचि जाइत अछि।

ललित बाबू हिन्दीकें रेलवे प्रशासनमे राजभाषाक रूपमे पूर्ण गरिमाक संग प्रतिष्ठित कर' चाहैत छलाह। रेलवेमे राजभाषा हिन्दीक निदेशालय स्थापित भ' चुकल छल। ललित बाबू निदेशक श्री शिवसागर मिश्रसँ परामर्श क' रेल मंत्रालयमे रेलवे हिन्दी सलाहकार समिसिक गठन कयलनि। एहिमे रेल मंत्रालयक प्रमुख अधिकारीक अतिरिक्त गैर-सरकारी सदस्यक रूपमे संसद-सदस्य, विधायक, पत्रकार आ साहित्यकारकें सेहो राखल गेल। स्वयं रेल मंत्री एहि समितिक अध्यक्ष आ निदेशक, राजभाषा एकर सचिव नियुक्त भेलाह। 'हिन्दी कार्यान्वयन समिति'क नामसँ सभ क्षेत्रीय रेलपर एहि प्रकारक समितिक गठन कयल गेल। क्षेत्रीय रेलपर हिन्दीक प्रगतिक समीक्षाक हेतु पाँच सदस्यबाला एक उच्च स्तरीय समितिक नियुक्ति कयल गेल। रेलवेसँ सम्बन्धित एक विशेष शब्दकोष निर्माणक हेतु 'रेलवे शब्दावली समिति'क सेहो गठन कयल गेल। हिन्दीभाषी क्षेत्रमे स्थित रेलवे कार्यालय आ रेलवे बोर्डक बीच हिन्दीमे सेहो पत्र-व्यवहार हो, एहि आशयक परिपत्र जारी कयल गेल। रेल सेवा आयोगक परीक्षाक माध्यम हिन्दी सेहो हो तकर प्रयास कयल गेल। ई हुनके प्रयासक फल अछि जे हिन्दीभाषी क्षेत्रमे

प्रायः सभ प्रमुख स्टेशनपर अधिकांश कार्य हिन्दीमे होइत अछि। एक बेर सलाहकार समितिक बैसकक अध्यक्षता करैत ललित बाबू कहने छलथिन जे कर्मचारीक संख्या आ जनतासँ प्रत्यक्ष सम्पर्कक कारणेँ हिन्दीक प्रचार-प्रसारमे रेल मंत्रालयक विशेष दायित्व अछि। आ तेँ जनहितकेँ ध्यानमे रखैत ओ रेलवे अधिकारीलोकनिसँ हिन्दी सिखबाक आ रेलवेक काजमे ओकर अधिकसँ अधिक प्रयोग करबाक अनुरोध कयने छलथिन। एहि प्रकारेँ रेलवेमे ओ हिन्दीक गरिमाकेँ प्रतिष्ठित कयलनि। ओ उच्चकोटिक देशभक्त छलाह आ राष्ट्रभाषा हिन्दीक प्रति हुनका पूर्ण अनुराग छलनि। ओ कार्यालयमे किंवा अन्यत्र अपन आत्मीय जनसँ तँ मातृभाषा मैथिलीमे वार्तालाप करैत छलाह, मुदा संविधानमे हुनक अटुट आस्था छलनि आ तेँ रेलवेमे हिन्दीकेँ ओ समुचित पदपर प्रतिष्ठित करबाक हेतु सतत प्रयत्नशील रहलाह।

रेल सेवामे हरिजन एवं जनजाति सभक हितक रक्षाक हेतु ओ विशेष ध्यान देलनि आ हुनकालोकनिक नियुक्तिपर सतत निगरानी रखबाक हेतु रेलवे बोर्डमे एक वरीय पदाधिकारीक अधीन एक निगरानी कक्षक स्थापना कयलनि। आदिवासीलोकनिक सुविधाक हेतु रेलवे सर्विस कमीशन, कलकत्ताक एक शाखा आदिवासी-क्षेत्र राँचीमे स्थापित कयल गेल।

समाजमे शिक्षित युवकक बेरोजगारी दूर करबाक हेतु आ समाजमे श्रमक प्रतिष्ठा स्थापित करबाक हेतु स्टेशनसभक बुक स्टाल आ दोकान सभक बन्दोवस्ती शिक्षित बेरोजगारकेँ देबाक घोषणा कयल गेल आ बहुत गोटाकेँ ई काज देलो गेल।

रेल सुरक्षा दलक कार्य सन्तोषजनक नहि छल। ललित बाबू एकरा मूलमे जा एहि समस्यापर विचार कयलनि। रेलवेमे चोरी आदिक कारणेँ क्षतिपूर्तिक दावाक संख्यामे प्रतिदिन वृद्धि भेल जाइत छल। जुलाइ, १९७३ क' रेल सुरक्षाक वार्षिक समारोहक अवसरपर ओ एहि समस्यापर विशेष रूपेँ विचार कयलनि। एहिपर सम्यक रूपेण विचारार्थ ओ एक उच्चस्तरीय समितिक नियुक्ति कयलनि। रेलवे सुरक्षा दलक कर्मचारीकेँ केन्द्रीय रिजर्व पुलिस सन वर्दी आ वेतन देबाक ओ अनुशंसा कयलथिन। हुनक विश्वास छलनि जे एहिसँ ओकरा लोकनिमे चुस्ती आ कार्यशीलता अओतैक। मकान, बैरेक, भोजनालय तथा प्रोन्नति आदिक विशेष सुविधाक हेतु ओ आदेश निर्गत कयलनि। परन्तु संगहि ओ हुनकालोकनिकेँ इमानदारी आ अनुशासनक हेतु सेहो अभिप्रेरित कयलथिन।

ललित बाबू जखन रेल मंत्रालयमे योगदान कयलनि तखन रेलवेमे प्रबन्धक आ कर्मचारीक सम्बन्ध मधुर नहि छल। ओ दयालु प्रकृतिक छलाह। श्रमिक कल्याणक भावनासँ ओत-प्रोत छलाह। कर्मचारी सभसँ वार्तालाप द्वारा ओ भरिसक एहि समस्याक समाधान करबाक प्रयत्न कयलनि। जतबा दूर धरि संभव छल हुनकालोकनिक माँग मानि लेल गेल। हुनकालोकनिक 'संवर्ग-समीक्षा'क माँग सेहो ओ मानि लेलथिन। मुदा जखन ओ देखलनि जे ई सभ कयलो उत्तर स्थितिमे सुधार नहि भ' राष्ट्रहितक विरोधे दिस बात जा रहल अछि तँ अपन रुखिमे कड़ापन अनलनि। प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी किंवा राष्ट्र अथवा रेलक विरोधीकेँ ओ बर्दास्त नहि क' सकैत छलाह। हुनक कहब छलनि जे कार्यकुशल एवं प्रभावकारी प्रशासनक लेल सभसँ पहिल आवश्यकता अछि अनुशासनक। जखन हुनका ई बुझबामे आबि गेलनि जे रेल हड़तालक पाछाँ राष्ट्रविरोधी तत्व आबि गेल अछि तखन ओ १९७४क हड़तालकेँ समाप्त करबाक हेतु कठोर रुखि अपनओलनि। अनुशासनक पालन कयनिहार कर्मचारीगणकेँ ओ विविध प्रकारक सुविधा द' प्रोत्साहन देबाक घोषणा कयलनि जाहिमे अग्रिम वेतन-वृद्धि, सेवा-निवृत्तिक स्थितिमे कार्य-कालमे एक वर्षक वृद्धि किंवा परिवारक कोनो सदस्यकेँ नौकरी देब सम्मिलित छल। अनुशासनहीनता हुनका वरदास्त नहि छलनि। ओ आम रेल हड़ताल केँ राष्ट्रविरोधी बूझैत छलाह आ राष्ट्रहितकेँ सर्वोपरि राखि ओ एकर समाधान कयने छलाह। मुदा 'कर्मण्येवाधिकारस्ते'क सिद्धान्तसँ ओ कर्म-निष्ठ योगीक रूपमे एहि घटनाकेँ लेने छलाह। हुनका एहिमे कोनो प्रति-शोधक भावना नहि छलनि। राष्ट्र आ देशसेवा हुनका लेल सर्वोपरि छल आ एकरहि सर्वोपरि राखि ओ रेल हड़तालक समस्याक समाधान कयलनि। आइ धरि सम्पूर्ण देशक लोक ललित बाबूकेँ रेलमंत्रीक रूपमे श्रद्धापूर्वक स्मरण करैत अछि। अपन कमे दिनुका कार्यकालमे रेलक विकासक हेतु जे ललित बाबू कयलनि से आन कोनो रेलमंत्री नहि क' सकलाह। बिहार आ देशक दुर्भाग्य अछि जे रेलक विकासहिक कार्यक्रमक कार्यान्वयनमे हुनक प्राण गेल।

६. जन-नायक

१९६५ ई०क बाद देशक राजनीतिमे आ विशेष रूपें बिहारक राजनीतिमे ललित बाबूक रचनात्मक योगदान स्मरणीय रहत। एक निष्ठावान राजनीतिज्ञक रूपमे जीवन पर्यन्त देशक स्थिरता आ देशक नेतृत्वकें सुदृढ़ करबामे हुनक महत्वपूर्ण भूमिका रहल अछि। भूतपूर्व रेल-मंत्री श्री कमलापति त्रिपाठीक शब्दमे—'श्री ललितनारायण मिश्रको भारत के इतिहासमें एक योद्धा राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, वफादार कार्यकर्त्ता और नेक सहृदय इंमान के रूपमे स्मरण किया जायगा।' ललित बाबू निपुण राजनीतिज्ञ आ प्रशासक तँ छलाहे परन्तु हुनकामे सबसँ पैघ विशेषता छलनि हुनक आत्मीयता। भेंट कर'वालाक प्रति हुनक व्यवहार एतेक स्नेहपूर्ण आ मधुर होइत छल जे भेंट कयनिहार हुनका लगसँ एक मधुर स्मृति लइए क' बिदा होइत छल। हुनकामे एक विशिष्ट आकर्षण छल, इएह कारण छल जे जे केओ हुनका लग आयल, हुनकर भ' गेल। परिवारक अर्थ हुनका लेल अपन पत्नी आ संतान तक सीमित नहि छल। ओ हुनकेलोकनिक सुख-सुविधापर ध्यान राखथि ई तँ कहिओ नहि भेल। परिवारक अर्थ हुनका दृष्टिमे छल ओ सब मनुष्य जे हुनक सम्पर्कमे आयल। ओ कोनो जातिक हो, कोनो धर्मक हो, सब हुनकर आत्मीय। एहि प्रसंगमे श्री शिवसागर मिश्र, निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालयक विचार देखू—

"निःसन्देह कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो तर्क की कसौटी पर कसी नहीं जा सकतीं। ललित बाबू के जीवन की भी कुछ बातें ऐसी ही हैं। कुछ लोग ललित बाबू को निपुण राजनीतिज्ञ मानते थे। मेरी दृष्टिमे ललित बाबू अत्यधिक भावुक और पारिवारिक व्यक्ति थे। उनकी दृष्टिमे उनका परिवार अपनी पत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ और दामाद तक ही सीमित नहीं था। धर्मपत्नी, पुत्र, पुत्रियाँ और दामादके अतिरिक्त ललित बाबू ने अपने भाइयों, भाइयों के सगे सम्बन्धियों और मित्रों तथा मित्रों के निकटतम व्यक्तियों को भी अपने परिवार का अंग माना। हित-चिन्ता करते समय वे पहले भाइयों और मित्रों को प्राथमिकता दिया करते थे; धर्मपत्नी,

पुत्र और पुत्रियों को बाद में। वास्तविकता तो यह है कि ललित बाबू ने अपने निजी परिवार की समृद्धि की बात कभी सोची ही नहीं।"

ललित बाबू देवता तँ नहि परन्तु मानवोचित मूल्यसँ सम्पन्न पूर्ण मानव छलाह। ओ एक आस्थावान पुरुष छलाह। जीवितावस्थामे ककरो गुण ओहि रूपेँ नहि बुझाइत छैक जेना मरणोपरान्त। ललित बाबू बहुत नम्र आ सरल प्रकृतिक लोक छलाह। ककरहुसँ अपनत्व जोड़बामे हुनका कनेको देरी नहि होइत छलनि। ओ सतत जागरूक आ सफल राजनीतिज्ञ होइतहुँ उदारताकेँ कहिओ नहि छोड़लनि। कार्य-संकुल रहितहुँ निर्लिप्त भावसँ जीवन व्यतीत करैत छलाह। आत्मीयता हुनक स्वभाव छल। एहिमे कोनो प्रकारक कृत्रिमता नहि छले। हुनका मात्र परिवारे लेल नहि वरन् सम्पूर्ण देश लेल आत्मीयता छलनि आ तेँ हिमालयसँ कन्या कुमारीकेँ रेलसँ जोड़बा लेल ओ व्यग्र छलाह जाहिसँ समस्त भारतक परिवारमे पारिवारिक सम्बन्ध घनिष्ठतर भ' सकय। हुनक राष्ट्र-प्रेम आ देश-भक्तिक पृष्ठभूमिमे इएह आत्मीयता व्यापक अर्थमे छल। एही आत्मीयताक कारणेँ हुनक कीर्तिगाथा हुनक नश्वर शरीरक संगहि समाप्त नहि भेल। श्री शंकर दयाल सिंह, भूतपूर्व संसद-सदस्य कहैत छथि—

"यह सही है कि आज ललित बाबू नहीं हैं लेकिन उनकी जीवन्तता, उनकी दरियादिली, उनका मृदु स्वभाव एवं हर किसी को मदद करने की उनकी अपनी प्रवृत्ति कोई भुला नहीं सकता। दोस्त हो या दुश्मन, प्रति-पक्ष का कोई सदस्य हो या सत्तारूढ़ दलका, उनसे हर किसी का सम्बन्ध रहता था और शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो जब उनके ९ नम्बर अकबर रोड में कोई-न-कोई पार्टी या बड़ा समारोह नहीं होता हो। उनकी आंखों में वह शील था, जिसे ढूँढ़ पाना कठिन है।"

'हम स्वयं जखन कखनहुँ दिल्ली गेलहुँ, ललित बाबू भोजनक आग्रह अवश्य कयलनि आ कमसँ कम एक संध्या भोजन तँ हुनका ओहिठाम करहि पड़ल। ओ प्रेममूर्त्ति छलाह आ स्नेहक पुंज छलाह। ललित बाबूक मरणोपरान्त जे पहिल बेर दिल्ली गेलहुँ तँ हमरा लागल जेना आब हमरा दिल्लीमे केयो अछिए नहि। एहि प्रसंगमे श्रीमती अरुणा आसफ अलीक विचार देखू—

"My association with him was not of a formal nature. He always regarded me as his elder sister and used to confide in me as one does to a member of one's family Some times I had to give him unpleasant advice but I was never misunderstood for telling him what I thought was wrong. He was a large hearted person and Lalit Narayan's real

strength was not his affluence as some persons were made to believe. He was loved for his accessibilty and his genuine qualities as a friend.

वस्तुत: ललित बाबू अपन सम्पन्नताक कारणे नहि, प्रत्युत सुलभतासँ सभकें उपलब्ध होयबाक कारणे लोकप्रिय छलाह।

ललित बाबू भारतीय संस्कृतिक कट्टर उपासक छलाह। भारतीय कला, संस्कृति आ साहित्यक श्रीवृद्धिक हेतु ओ सतत प्रयत्नशील रहलाह। मधुबनी चित्रकलाकें पुनर्जीवित करबाक हुनकहि श्रेय अछि। आइ के नहि जनैत अछि जे एहिसँ लाखो रुपैयाक विदेशी मुद्रा हमरालोकनि अर्जित करैत छी आ मिथिलांचलक सैकड़ो स्त्रीगणक हेतु ई जीविकोपार्जनक साधन अछि। ललित बाबूक स्वर्गीय भेलापर एहि सभ घरमे चूल्हि नहि जरल छल। लोक शोक-मग्न छल आ बुझि पड़ैत छलैक जे आब जेना कियो ओकरालोकनिकें देखनिहार नहि रहि गेलैक। देशमे आ विशेष रूपें मिथिलांचलक जन-मानसमे दोसर कोनो जन-नायक ललित बाबू सन प्रवेश नहि क' पओलनि। स्वदेश आ मिथिलाक कला-संस्कृतिक प्रति हुनका जे प्रेम छलनि से हुनके शब्दमे देखू। ई अंश समस्तीपुरमे देल गेल हुनक अंतिम भाषणसँ उद्धृत अछि –

"समस्तीपुर को मिथिला का प्रवेश द्वार कहा जाता है। मिथिला की संस्कृति और कला आज संसार में प्रसिद्धि पा रही है। यहाँ की कला और दस्तकारी आज विदेशी मुद्रा अर्जित कर रही है। अमर महाकाव्य रामायण की प्रेरणा-बिन्दु बनने का गौरव इसी मिथिला-भूमि को प्राप्त है। विद्यापति के भक्ति-भावना से भरे हुए गीतों की गूँज आज भी मिथिला की माटीमे सुगन्ध बिखेर रही है। दूसरी ओर वैशाली का गौरवपूर्ण ऐतिहासिक वैभव आज संसार के विद्वानों को अपनी ओर आकर्षित करता है। आज से लगभग २५ सौ वर्ष पूर्व, जबकि संसार में सभ्यता और राजनीतिक परम्पराओं का अर्थ तक मालूम नहीं था, तब यहाँ लिच्छवियों ने एक सुनियोजित गणतंत्र की पद्धति को अपनाकर सफलतापूर्वक अपने राज-काज को चलाया था। मुजफ्फरपुर से ३५ किलोमीटर दूर वैशाली की अभिषेक-पुष्करणी, राजा विशाल के खंडहर और तीर्थंकर महावीर का जन्मस्थान आज देश के कोने-कोने से यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। अँगरेजी हुकूमत के दमनचक्र के नीचे पिसकर यहाँ की वह भूमि जर्जर हो चुकी थी जिस भूमि पर कभी सुख, समृद्धि और सभ्यता-संस्कृति के प्रतीक राजा जनक, सिंह सेनापति, तीर्थंकर महावीर, बुद्ध, बाल्मीकि, अष्टावक्र, विद्यापति, विधि व्यवस्थापक गौतम, मंडन मिश्र आदि विचरण किया करते थे। महिमामयी

नारियों जैसे गार्गी, मैत्रेयी, भारती, कात्यायनी तथा लखिमा के तेजमय व्यक्तित्व से प्रकाशित यहाँ की धरती ने स्वर्ग का रूप धारण कर लिया था। लेकिन सबसे बड़ा पाप है गुलामी, जिसने ऐसी पवित्र भूमि को भी धन-सम्पदा से हीन बना दिया।"

ललित बाबू भूमि-पुत्र छलाह ओ अपन माटि-पानिकें कहियो नहि बिसरलाह। मिथिलाक गरिमामय इतिहास सदति हुनक आँखिक सोझामे रहैत छल। देश आ मिथिलांचलक पुनरुद्धारक लेल हुनका हृदयमे आगि जरैत रहैत छल। मिथिलांचलमे रेलक विकासक कार्यक्रमहिमे ओ अपन प्राणक आहुति देलनि। मिथिलामे यातायातक विकास, हस्तशिल्प आ चित्रकलाक विकास एवं शिक्षाक विकास सब दिस हुनक ध्यान छलनि। ई सभकें ज्ञात छैक जे ५ अगस्त, १९७२ कें श्री केदारपाण्डेय जीक मुख्यमंत्रित्वकालमे ओ मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना करओलनि। एक दिन हुनका हम ओहि विश्वविद्यालयक कुलपतिक हैसियतिसँ कहलिअनि जे पूर्णिया-सहरसा क्षेत्रक लोककें विश्वविद्यालयक मुख्यालय धरि अयबामे बड कष्ट होइत छैक। ओ उत्तर देने छलाह जे यथा-शीघ्र हम एहन ट्रेनक व्यवस्था करबैत छी जे अहाँक विश्वविद्यालयक सम्पूर्ण क्षेत्रमे एकहि ट्रेनसँ यातायातक सुविधा भ' जायत। वस्तुतः ई ओ करओलनि। जानकी एक्सप्रेस भ' गेलाक उपरान्त लोकक ई असुविधा दूर भ' गेलैक। हुनक चरित्रक ई विशेषता छलनि जे शीघ्रातिशीघ्र निर्णय ल' कोनो योजनाकें कार्यान्वित करबा लेल कटिबद्ध भ' जाइत छलाह। मिथिला विश्वविद्यालयक नामकरण हुनक मृत्युक उपरान्त श्री अब्दुल गफूरक मुख्यमंत्रित्वकालमे ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय कयल गेल जकरा श्री कर्पूरी ठाकुरक मुख्यमंत्रित्वकालकमे पुनः मिथिला विश्वविद्यालय क' देल गेल। एहू समयमे हमहीं ओतय कुलपति छलहुँ आ एहि नाम परिवर्तनक कारणें हम कुलपति पदसँ इस्तीफा द' देल। परन्तु पुनः वर्तमान मुख्यमंत्री डा० जगन्नाथ मिश्रक कार्यकालमे ई ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय भ' गेल। कोनो राष्ट्रीय नेताक मृत्युक पश्चात् नाम हटयबाक ई संभवतः प्रथम उदाहरण अछि। एहिसँ एकरो परिचय भेटैत अछि जे किछु वर्गकें ललित बाबूक नामहुँसँ कतेक भय होइत छल। परन्तु ओ तँ जीवनहिसँ, मुइलाक बादक कोन कथा, वीतराग छलाह। एहन काज सभक प्रभाव हुनकापर, हुनक जीवनकालहुमे नहि पड़ैत छल। ललित बाबू एहनो लोक सभकें, जे संसदक भीतर आ बाहर हुनक विरोध करथि, सहायता

देलथिन आ एहि सम्बन्धमे ओ ककरहु किछु नहि कहलथिन। हुनक जमाय डा० गौरीशंकर राजहंस एहि सम्बन्धमे लिखैत छथि—"जब उनपर (ललित बाबू पर) विपक्ष से आक्रमण हो रहा था, तब एक बार मैंने दबी जबान से कहा था कि वे यह क्यों नहीं बताते कि विपक्ष के अमुक-अमुक आदमियों को उन्होंने कब-कब मदद की है, ताकि वे बेनकाब हो सकें। इस पर ललित बाबू ने हँसकर कहा था कि राजनीतिमें हर लोग एक दूसरे के विरुद्ध हो सकते हैं, लेकिन व्यैक्तिगत जीवनमें विपत्तिग्रस्त मित्र की यदि कभी सहायता की जाय इसकी चर्चा जबानपर लाना अशोभनीय है।" देखू ललित बाबूक महानता, मित्र-प्रेम आ परोपकारिता !

ओ महान पितृभक्त छलाह। हम पहिनहि कहि आयल छी जे एक बेर हुनक पिता हुनका कहने छलथिन जे सपूत ओकरा कहल जाइत छैक जे देशक काज आबय, जे कोशीकेँ बन्हवाबय आ रेल चलाबय। ई तीनू बात ललित बाबू आजीवन स्मरण रखलनि। देशक काज करबाक उद्देश्येँ ओ नौकारी-चाकरी किंवा आन कोनो वृत्ति नहि कयलनि। स्कूलमे जहिया पढ़ैत छलाह तहिया जे ओ देश-सेवाक व्रत लेलनि तकरा जीवनक अन्तिम दिन धरि नहि छोड़लनि। कोशी क्षेत्रक बच्चा-बच्चा जनैत अछि जे ललित बाबू यदि नहि होइतथि तँ कोशी नहि बान्हल जाइत। १९७२मे श्रीमती इन्दिरा गांधी हुनका पुछने छलथिन जे कोन मंत्रालय हुनका देल जाय। अनायास ओ कहने छलथिन—'रेल'। पिताक वचन हुनका मोन छलनि—'सपूत ओ जे रेल चलाबय।' ललित बाबू भारतीय रेलक विकासमे कोन भूमिकाक निर्वाह कयने छथि तकर विवरण पहिनहि देल गेल अछि। सम्भवतः आधुनिक भारतमे कोनो रेल-मन्त्री दुइ वर्षक अवधिमे एतबा काज नहि कयने छथि। केहन साहसिकता आ शालीनतासँ रेल हड़ताल आदिक समस्याक समाधान कयलनि, इतिहास एकर साक्षी अछि आ एहू बातक साक्षी अछि जे ओ केहन उदात्त चरित्रक लोक छलाह। पिताक वचनक ओ अक्षरशः पालन क' क' देखा देलनि। हुनक पिताक मृत्यु पूर्वहिं भ' चुकल छल। दुख एहि बातक जे ओ अपन कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्रक सभटा बात नहि देखि सकलाह।

ललित बाबूक एक विशिष्ट गुण ई छलनि जे एक बेर ओ जकरा अपना लेलनि ओकरा फेर छोड़' नहि जनैत छलाह। पं० जवाहरलाल नेहरू हुनक राजनीतिक गुरु छलथिन। जखन एक बेर ओ जवाहरलाल जीकेँ कोनो वृत्तिक प्रसंगमे विदेश जयबाक विषयमे पुछलथिन तँ ओ उत्तर देने छलथिन—

"देशमे रहकर काम करो।" ललित बाबू एकरा शिरसा धारण कयलनि। आजीवन ओ नेहरू जीक प्रति निष्ठा एवं आस्था रखलनि। एक स्थानमे ललित बाबू अपनहिं लिखने छथि जे रामगढ़ कांग्रेसमे ओ सुभाष चन्द्र बोसकें कांग्रेस अध्यक्षक हेतु एहि कारणे भोट देने छलाह जे नेहरू जी सैह चाहैत छलाह। जाबत नेहरू जी जीलाह, हुनका प्रति ललित बाबूक आस्था अटल रहल।

हुनक मृत्युक बाद इन्दिरा जीक प्रति जे सम्बन्ध ओ एक बेर जोड़लनि से आ जीवन अक्षुण्ण रहल। १९६७मे चतुर्थ निर्वाचनक बाद जखन आन आन राज्यक संग बिहारहुमे कांग्रेसक स्थिति गड़बड़ा गेलैक त ललित बाबू चुप नहि बैसल रहलाह। उत्तर बिहारक कोन कोनमे ओ भ्रमण कयलनि। कांग्रेस जनमे नव-जीवनक संचार कयलनि। १९५९क निर्वाचनमे ललित बाबू जाहि संगठन शक्ति आ चातुर्यक परिचय देलनि आ कांग्रेसक मर्यादाकें प्रतिष्ठित कयलनि से कठिन परीक्षामे सूझ-बूझसँ काज करबाक हुनक परिचय दैत अछि। १९६९मे बंगलोर कांग्रेसक बैसकक पश्चात् ओ भारतक प्रमुख राजनीतिज्ञक रूपमे सुप्रतिष्ठित भेलाह। हुनक एहि कालक कार्यकलापमे एक बात आओर अछि। ओ इन्दिरा गांधीक पक्षधर भ' चुकल छलाह आ आब ओ हुनकर पक्षकें सबल बनायब अपन कर्त्तव्य बुझैत छलाह। आ इएह कारण छल जे एही समयसँ प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी निकटसँ निकट राजनीतिक समस्यापर विमर्श करबाक क्रममे सभसँ अधिक महत्व ललित बाबूकें दैत छलथिन। ओ हुनकर वफादारी आ संगठन-क्षमताकें बुझैत छलीह आ हुनका पर निर्भर रहैत छलीह। अन्तिम दिन धरि ओ श्रीमती गांधीक संग नहि छोड़लनि। श्रीमती गांधीकें एक निर्भीक सहयोगी भेटलथिन। ओ हिनक अद्भुत संगठन-शक्ति एवं राजनीतिक कौशलसँ अत्यन्त प्रभावित छलीह आ हिनकर आस्थाक कारणे ओ हिनकापर कतिपय कार्य लेल अवलम्बित छलीह। ललित बाबू जीवन पर्यन्त हुनक संग देलथिन।

ललित बाबूक व्यक्तित्वक सम्बन्ध मे श्रीमती गांधीक विचार हुनकहि शब्दमे देखू :—

"श्री ललित नारायण मिश्र का सारा जीवन जनता की सेवामें समर्पित था। उन्होंने अपने छात्र जीवन से ही देश के प्रति निष्ठा दिखाई। उनमें अपूर्व साहस था। उन्हें व्यक्तिगत हितों के बजाय देश के व्यापक हितों की ज्यादा चिन्ता थी। उन्होंने जिस पद पर काम किया लगन और मेहनत से

किया और यही कारण है कि वे एक लोकप्रिय राजनीतिज्ञ हुए। उनमें मनुष्यता और भारतीयता कूट कूट कर भरी थी। उन्होंने अपनी सहृदयता के कारण बहुत लोगों का दिल जीता। उनका विश्वास था कि एकता और अनुशासन से ही देश आगे बढ़ सकता है। वे राष्ट्रहित के लिए मजबूत कदम उठाने में कभी नहीं हिचके।"

ललित बाबूक व्यक्तित्वक जे मूल्यांकन श्रीमती गांधी कयने छथि से शत-प्रतिशत ठीक अछि। ललित बाबूक देशभक्ति आ प्रतिभाशाली व्यक्तित्वक विषयमे फिल्म जगतक ख्यातनामा कलाकार श्री सुनील दत्त कहैत छथि—

"एक कट्टर कांग्रेसी नेता होने के नाते उन्होंने बिहार प्रान्त को कई बार संभाला और बिहार के नेताओं का पथ प्रदर्शन किया। वह कभी भी नहीं घबड़ाते थे। मौत भी उनके लिए कुछ नहीं थी। उनके अद्भुत साहस और कर्मठता का परिचय तब मिला, जब उनके रेल मंत्रित्व कालमे, रेलवे में हड़ताल हुई। यह नाजुक परिस्थिति मिश्रजी के लिए बहुत कड़ी परीक्षा थी जिसमें सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हे बहुत बड़ी चुनौती का समना करना पड़ा। शाम का समय होता तो रेल भवन स्थित कार्यालय से निकलकर, घर आते, फिर वहाँ से अशोक होटल के सामने नेहरू उद्यान में प्रतिदिन टहलते और वहाँ खिले हुए फूलों को बारम्बार देखते और एक भोले बच्चे की तरह मचल उठते थे।"

ललित बाबूक स्नेह आ चुम्बकीय व्यक्तित्व कोना दोसराके आकृष्ट क' लैत छल ताहि प्रसंग सुनील दत्तहिक अनुभव सुनू—

"वह मुझे कितना मानते थे और स्नेह देते थे, इसे बताने के लिए कई बातें हैं। जब मिश्र जी ने अपने लड़के की शादी में आमंत्रित किया तो मैं सब काम से समय निकाल पटना पहुँचा। वहाँ पाया कि पटना के अतिरिक्त बाहर के मुख्य अतिथियों में, एक जनरल मानिक शा थे और दूसरा मैं। वैसे, उनके और भी आत्मीय थे लेकिन उन्होंने मुझे विशेष रूप से स्वागत पूर्वक बुलाया। मेरे हृदय में उनके प्रति रहा प्रेम और भी बढ़ गया। मुझे लगता था कि मैं, अपने ही घर में किसी शादी के अवसर पर आया हूँ और मिश्र जी मंत्री नहीं बल्कि मेरे पिता की तरह हैं। उस विवाहोत्सव का मैंने खूब आनन्द लूटा, जो मेरी स्मृतियों में आज भी एक दिलचस्प कहानी बनकर रह गयी है।

"ललित बाबू भी मुझसे वैसे ही बहुत स्नेह करते। बचपन में, मैंने अपना पिता खो दिया था और पितृस्नेह से बंचित रह गया था। लेकिन उस पितृ स्नेह की अनुभूति मिश्र जी से मिला। मैं इसे, अपना सौभाग्य समझता हूँ।"

सुनील दत्त सन विख्यात प्रौढ़ विचारक व्यक्तिक ई धारणा अछि ललित बाबूक प्रति। ओ निरभिमान छलाह। हुनक व्यवहार बच्चा सन निश्छल आ सरल होइत छल।

ललित बाबूक सम्पर्कमे आब'बला प्रत्येक व्यक्तिके लगैक जे आ सभसँ पैघ हित-अपेक्षित हुनके छथिन—ओ हुनक छथिन आ सत्ते, ओ समान रूपेँ सभक छलथिन। निकट स्वजनक सुख-दुख तँ ओ देखवे करथिन, नहि जानि समस्त भारत आ बाहरोक कतेक अनचिन्हारकेँ ओ अपन बनओलनि। हुनका-लोकनिक सुख-दुखमे भागी भेलथिन—ई छल हुनक व्यक्तित्वक महिमा। ओ राजनीतिक जीवनमे निरन्तर सीढ़ी चढ़ैत गेलाह, किन्तु व्यक्तिगत आ सार्वजनिक जीवनमे हुनक व्यवहारमे कहियो परिवर्तन नहि भेल, प्रभुताक मद हुनकामे कहियो नहि आयल, सभक लेल हुनक प्रेम आ स्नेह अपरिमित आ अपरिवर्तनीय छल। मानवताक ओ पुजारी छलाह। पदसँ ओ पैघ नहि भेलाह, पद हुनकासँ मर्यादित भेल।

ललित बाबूक सहृदयता, उदारता आ दानशीलताक सम्बन्धमे रेलवे सेवा आयोगक अध्यक्ष श्री केदारनाथ ठाकुर लिखैत छथि—

"ललित बाबू इतने सहृदय, उदार और दानशील प्रकृति के महापुरुष थे कि शब्दों में उनकी इस प्रवृत्ति को पूर्णरूपेण बांधना सर्वथा असंभव ही महसूस होता है। एक बार जब कांग्रेस अध्यक्ष श्री प्रजापति मिश्र गम्भीर रूपसे अस्वस्थ हो गये थे तब ललित बाबू चुपके से उनके यहाँ जाकर चिकित्सा ऐवं दवा-दारू के लिए यथेष्ट आर्थिक सहायता दे आये। उस समय ललित बाबू सिर्फ संसद-सदस्य थे। ललित बाबू अपने साथियों और मित्रों को दुखी देखकर उनकी पूरी सहायता के लिए व्यग्र हो जाते थे और हर तरह से सहायता करते थे। जिस किसी की भी वे सहायता करते थे, बिलकुल गुप्त रूप से। यदि उन्हें पता चल जाता कि कोई बड़ा समर्थ व्यक्ति कष्टमें पड़ गया है तो वे चुपचाप उसकी सहायता कर आते थे।"

ललित बाबू दानवीर छलाह। जे केओ जे किछु हुनकासँ मँगलक, पओलक। हुनका लग छोट-पैघ याचकक भीड़ लागल रहैत छल। विवाह,

उपनयन आ श्राद्धादिमे गछति माँग'बालाक कोनो कमी नहि। ललित बाबू ककरहु फिरय नहि दैत छलथिन। हुनकर निवास स्थानपर, चाहे ओ दिल्ली हो किंवा बलुआ, सैकड़ो याचक पहुँचि जाइत छल। परन्तु ललित बाबूक एक विशेषता ई छलनि जे ओ दोसर ककरहु नहि बूझ' दैत छलथिन। एहि सम्बन्धमे 'हिन्दुस्तान टाइम्स'क प्रकाशक डा० गौरीशंकर राजहंस लिखैत छथि—

"ललित बाबू के पिता पं० रविनन्दन मिश्र का आकस्मिक देहान्त १९५० ई० में हो गया था। पाँच भाइयों में ललित बाबू सबसे बड़े थे और श्री जगन्नाथ मिश्र (बिहार के वर्तमान मुख्यमंत्री) सबसे छोटे, जो उन दिनों स्कूल में पढ़ रहे थे। भाइयों ने घर का पूर्ण दायित्व ललित बाबू पर छोड़ दिया और साथ ही यह भी कहा कि पिता जी की सम्पत्ति को वे जिस तरह भी चाहें, देशपर खर्च कर सकते हैं। ललित बाबू के पिता जी प्राय: ४,००० एकड़ जमीन छोड़ गये थे, जिसकी कीमत अब १०,००० रु० प्रति एकड़ है। बिहार में और बिहार के बाहर भी ललित बाबू को जाननेवाले लोग यह भी जानते हैं कि इसी जमीन को बेच-बेचकर ललित बाबू कांग्रेस के लिए दोनों हाथों रुपया लु ाते थे। उनके भाइयों की इसमें पूर्ण सहमति थी। आज भी दिल्ली में इस बात के साक्षी लोग मौजूद हैं कि ललित बाबू के छोटे भाई श्री श्याम नारायण मिश्र कभी धान बेचकर, कभी जूट बेचकर और कभी जमीन बेचकर नोटों के बंडल ललित बाबू को देते और ललित बाबू कर्ण की तरह उसे जरूरतमन्द साथियों को देते।"

आश्चर्यक बात तँ ई जे विरोधी दलक नेता सभ सेहो हुनका ओहि ठामसँ कहियो विमुख भ' नहि फिरलाह। कतेक विद्यार्थी, कतेक पंडित आ गुणीजन आ अन्यान्यो ललित बाबूसँ उपकृत भेलाह, तकर सूची के बना सकत? हुनका ओहि ठाम साधु-सन्त लोकनिक आयब-जायब लगले रहैत छलनि आ ओ सभक समुचित आदर-सत्कार करैत छलथिन। हुनक निवास स्थानपर पूजा-पाठ आ धार्मिक अनुष्ठान होइते रहैत छल। ई गुण हुनक अनुज डा० जगन्नाथ मिश्र (मुख्य मन्त्री)मे सेहो अछि। देवाइ-धर्माइमे हिनकहु बड़ निष्ठा छनि। बरु एना कहबाक चाही जे ई गुण हुनकर पारिवारिक परम्परामे अवैत अछि।

ललित बाबूकेँ सनातन धर्ममे पूर्ण निष्ठा छलनि। ईश्वरक सत्तामे हुनक अखंड आस्था छल। धर्मक आन्तरिके नहि, धर्मक बाह्य विधि-विधानहुँमे हुनका आस्था छलनि। जतय कतहुँ ओ जाथि, ओहि परिसरक मन्दिरमे

जायब हुनक कार्यक्रमगे सम्मिलित रहैत छल। ज्योतिषी-तांत्रिक सभपर हुनका विश्वास छलनि। जे कोनो साधु-सन्त हुनकासँ याचना करैत छलथिन, हुनक ओ सहायता करैत छलथिन। मन्दिर सभमे जखन जाथि तँ घंटाक घंटा पूजा करैत रहैत छलाह। नेपालमे कैक टा मन्दिर अछि जतय ओ पूजाक निमित्त समय-समयपर पहुंचबे टा करथि। एक बेर ओ बाबा बैद्यनाथक मन्दिरसँ पूजा क' क' बहरयलाह तँ लोक सभ कहलकनि जे अधिक काल धरि मन्दिरमे पूजा करब बड़ कष्टप्रद होइत छैक। ललित बाबू शीघ्रे मन्दिरमे पंखा लगबा देलथिन। दरभंगा जखन कखनहु ओ गेलाह तँ कंकालीक मन्दिरमे दर्शनार्थ अवश्य जाथि। मन्दिरमे पूजा करब, चरणामृत लेब, प्रसाद लेब आ किछु चढ़ौआ चढ़ायब हुनक संस्कार भ' गेल छल। ई संस्कार हुनका प्रारंभहिसँ छलनि आ राजनीतिक जीवनक व्यस्तता रहितहुँ ओ एकरा कहिओ नहि छोड़लनि अपितु, हुनक ई आस्था दिनानुदिन बढ़ले गेल।

ललित बाबूकेँ साहित्य आ कलामे अभिरुचि छलनि। मधुबनी चित्र-कलाक लेल ओ जे कयलनि से बिहारक बच्चा-बच्चा जनैत अछि। कलाकार, साहित्यकार, चित्रकार, संगीतज्ञ जे केओ ललित बाबू लग पहुँचलाह हुनका ओ प्रोत्साहित करैत छलथिन। दरभंगामे हमरा बहुत गोटा कहलनि जे ललित बाबूक साहाय्यसँ ओ अपन ग्रन्थक प्रकाशन करओलनि। परन्तु ललित बाबू कहिओ ककरहु ई नहि कहलथिन जे अमुक कलाकार अथवा लेखककेँ ओ की सहायता कयलथिन। मैथिल संस्कृतिक ओ महान अनुरागी छलाह। चेतना समिति, पटनाक लेल हुनका बहुत अनुराग छल। ओ चेतना समितिक लेल बहुत किछु कर' चाहैत छलाह। हम १९७० ई०मे मैथिली साहित्य परिषद्क अधिवेशनमे हुनका पूर्णिया अयबाक हेतु आमंत्रित कयने छलहुँ। तखन ओ केन्द्र सरकारमे मन्त्री छलाह। बहुत उत्साहपूर्वक ओ परिषद्क कार्यक्रममे भाग लेलनि। स्व० डा० लक्ष्मीनारायण सिंह 'सुधांशु' सन हिन्दीक विद्वान सेहो ओहि मंचपर उपस्थित छलाह। भाषा आ साहित्यपर ललित बाबूक विचार सुनि 'सुधांशु' जी गद्गद छलाह। ललित बाबूक एक लेख 'गेहूँ और गुलाब—स्मृतियाँ जवाहर लाल की' 'कादम्बिनी'क मइ, ७३क अंकमे प्रकाशित भेल छल। हुनक दोसर लेख 'महात्मा गांधी और उनके बाद—अब इन्दिरा गांधी' जे केओ पढ़थि हुनका इएह बुझि पड़तनि जे ललित बाबू यदि साहित्यिक क्षेत्रमे जइतथि तँ ओहूमे अपन विशिष्ट स्थान बना लितथि। किन्तु अपन साहित्यिकताकेँ ओ दोसर रूप देलथिन। साहित्यिक आ कलाकारक ओ संरक्षक

छलाह । एहि सम्बन्धमे 'कादम्बिनी'क सम्पादक श्री राजेन्द्र अवस्थीक विचार देखू—

"कम लोग जानते हैं, ललित बाबू लेखक भी रहे हैं और यदि राजनीति से समय निकालकर कुछ लिखते तो शायद उनका लेखन अपने क्षेत्रमे विशिष्ट स्थान रखता । एक बार मैंने आग्रह किया था, 'कादम्बिनी' के लिए वे कुछ लिखें । मेरे साथ मेरे मित्र डा० गौरीशंकर राजहंस भी थे । ललित बाबू थोड़ी देर सोचते रहे - फिर बोले, "क्या लिखा जा सकता है ?" यह कहते हुए वास्तवमे वे कुछ तलाश रहे थे । फिर बोले, "तो अभी लिख लीजिए ।" तुरन्त उन्होंने जो लेख लिखवाया वह उदाहरण है उनके लेखन-कौशल का । वह लेख बाद में 'कादम्बिनी'मे प्रकाशित हुआ था । इस पर अनेक प्रतिक्रियाएँ आयी थीं और पाठकों ने जवाहर लालजी के सम्बन्धमे उनके विचारों तथा धारणाओं का स्वागत किया था ।"

ललित बाबू स्थितप्रज्ञ छलाह । ओ कहिओ घबड़ाइत नहि छलाह । कैहनो विषम परिस्थितिमे ओ अपन संतुलन बनओने रहैत छलाह । जीवनक अंतिम दू-तीन वर्षमे तँ हुनकर विरोधीलोकनि हुनका खूब परेशान कयलनि । कहियो लाइसेन्स काण्ड, कहियो रेल हड़ताल आ कहियो पार्लियामेन्टमे हंगामा । दिल्लीसँ बिहार धरि कतेको कुचक्र हुनका विरोधमे चलैल छल । हुनका विरुद्ध अनर्गल आक्षेप, निराधार भ्रष्टाचारक आरोप आ हुनक चरित्र-हननक प्रयासक एक नहि अनेक दृष्टान्त अछि । किछु लोकके हुनका प्रति एतेक द्वेष आ डाह छल जे डेग-डेगपर ओ ललित बाबूके नीचा देखयबाक प्रयासमे रत छलाह । एहनो विषम परिस्थितिमे ओ साहसपूर्वक अपन राज-नीतिक ओ समाज-सेवाक कार्यमे संलग्न रहैत छलाह । प्रतिदिन हुनकर विरोधमे षडयन्त्रक रचना होइत छल परंच ओ अपन उदारता, साहसिकता, निर्भीकता आ कर्मठताकेँ मृत्युपर्यन्त नहि छोड़लनि । 'हिन्दुस्तान टाइम्स'क प्रकाशक डा० गौरीशंकर राजहंस लिखैत छथि—

"कभी-कभी मैं उनसे कौतूहलवश पूछ लेता कि इतने सारे तनावों को आप कैसे बर्दाश्त कर लेते हैं । इस पर वह जवाब देते कि जिस ईश्वर ने मुझे देश व समाज के लिए काम करने को भेजा है, वही ईश्वर मुझे सब कुछ सहने की शक्ति देता है ।"

समस्तीपुर बम विस्फोटमे घायल भेलाक बाद ललित बाबू जे प्रथम प्रश्न पुछने छलथिन से छल डा० जगन्नाथ मिश्रक विषयमे । जीवन-मृत्युक बीच संग्राम होइत छल, परन्तु ओहू समयमे अग्रजक जे कर्त्तव्य अनुजक प्रति होइत छैक से हुनका नहि बिसरलनि । 'दशा-दिशा'क सम्पादक श्री शिवशंकर सिंह एहि प्रसंगमे लिखैत छथि—"बम विस्फोटमे बुरी तरह घायल हो जाने के बाद ललित बाबू ने जो पहला सवाल पूछा, वह था—"जगन्नाथ (डा० जगन्नाथ मिश्र) तो ठीक है न ?" ई एहि बातक द्योतक अछि जे केहनो विषम परिस्थितिमे ओ विचलित नहि होइत छलाह आ कर्त्तव्य-बोध हुनक संग नहि छोड़ैत छलनि ।

ललित बाबूक लक्ष्यक प्रति निष्ठा आ तकर प्राप्तिक हेतु हुनकर प्रयास, सतर्कता आ दृढ़ता सराहनीय छल । ओ एक कर्मठ व्यक्ति छलाह, अध्यवसायी छलाह आ हुनकामे अनवरत परिश्रम करबाक क्षमता छलनि । एक बेर जवाहर लाल नेहरू हुनका संकेत कयलथिन जे अहाँ नोकरी करबाक हेतु विदेश नहि जा देशमे रहि देश-सेवाक काज करू । ओहि दिनसँ जेना ई गुरुवाक्य हो, एकरा मानि ललित बाबू देशक सेवाक काजमे जुटि गेलाह आ अन्तिम दिन धरि ओ ओहिमे लागल रहलाह । जवाहर लाल जीक स्वर्गीय भेला उत्तर श्रीमती इन्दिरा गांधीक प्रति ओ आजीवन वफादार बनल रहलाह । हुनक कार्यक्रम व्यस्त रहैत छल । एहि व्यस्तताक कारणे रातिमे ओ बेरीसँ सुतैत छलाह । राजनीति आ राजकाजमे ओ तेना डूबल रहैत छलाह जे पारिवारिक जीवनक आनन्द उठयबाक हेतु एको क्षण हुनका दुर्लभ भ' जाइत छलनि । ई श्रेय तँ हुनक त्यागमयी पत्निएकेँ छनि जे परिवार-पालनक कार्यसँ ललित बाबूकेँ ओ मुक्त कयने रहथिन । हमरा ललित बाबू स्वयं कहने छथि जे जकरासँ उल्लासपूर्वक गप्प कर' चाहैत छी तकरासँ से नहि भ' पबैत अछि । एतेक धरि जे अपन धिओ-पुतासँ कैक दिन धरि भेंट नहि भ' पबैत अछि । १९७० मे हम 'ऑल इंडिया इकनोमिक कनफरेन्स'मे भाग लेबाक हेतु दिल्ली गेल छलहुँ । दिल्ली पहुँचवाक बाद तेसर दिन हुनकासँ टेलिफोनपर सम्पर्क भ' सकल । ओ हमरा पुछलनि जे हम कहिया दिल्ली अयलहुँ ? जखन हम हुनका कहलिअनि जे हम परसुए दिल्ली अयलहुँ तँ ओ बड़ नाराज भेलाह । हम हुनका बुझओलिअनि जे चेष्टा कयलहुँ पर हम सम्पर्क नहि स्थापित क' सकलहुँ तँ खिन्न मोने ओ हमरा क्षमा कयलनि । ओ ई सोचिओ नहि सकैत छलाह जे एतेक विलम्बसँ हम हुनकासँ सम्पर्क स्थापित करब । ओहि राति ओ हमरा

रातुक भोजनपर आमन्त्रित कयलनि । हमरा संगे डा० नर्मदेश्वर झा (कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय) सेहो छलाह । ३१ दिसम्बरक दिन छल। रातिमे ८ बजे भोजनक हेतु हमरालोकनि हुनक डेरा, ९, अकबर रोड, पहुँचलहुँ । सवारीक व्यवस्था ओएह क' देने छलाह । भोजन कयलाक उपरान्त १२ बजे राति तक व्यक्तिगत गप-शप चलैत रहल । ओ हमरा सन बाल-संगीकें पाबि आनन्द-विभोर छलाह। १२ बजेक बाद हुनका नव वर्षक बधाइ देबाक हेतु लोक पहुँचय लागल । हमरा स्मरण अछि श्री कुलदीप नैयर, हुनक पत्नी, श्री बंशी लाल आदि आयल छलाह। हुनकालोकनिसँ ओ परिचय करओलनि । एकक बाद एक लोक अबिते रहल । लगभग एक बजे रातिमे हमरालोकनि हुनकासँ बिदा लेलहुँ । ओ कहलनि जे आइ राति भरि जगले रहय पड़त । दिल्लीमे ओ जखन रहैत छलाह, हुनकर ९, अकबर रोडवाला डेरापर मेला लागल रहैत छल । सबसँ भेंट करथिन, जकरा जे काज होइक से बुझथिन आ क' देथिन। बहुतो गोटा तँ हुनका लग बेटीक विवाह, बेटाक उपनयन आ नोकरी-चाकरीक हेतु साहाय्यार्थ जाइत छलाह । ललित बाबू हुनकालोकनिक भोजन-आवासक व्यवस्था तँ करिते छलाह संगहि बटखर्चाक सेहो प्रबन्ध करथि । साहाय्य देब तँ हुनक स्वभावमे छल । कोना एतबा गोटासँ ओ प्रतिदिन भेंट करथि, कोना फेर हुनकालोकनिक समस्याक समाधानो करथि से हुनकहिसँ बनि पड़ैत छल । ओ अद्भुत व्यक्ति छलाह, कर्मयोगी छलाह। अनासक्त भावें 'वसुधैव कुटुम्बकम्'क नीतिकें अपनबैत अपन कर्मपर आरूढ़ रहैत छलाह ।

विद्यार्थिए जीवनमे ओ राजनीतिमे पदार्पण कयलनि आ तहियेसँ अनवरत बढ़ैत रहलाह। स्वतन्त्रता-संग्राममे वीर सेनानीक रूपमे काज कयलनि । देशकें विदेशी सत्तासँ मुक्त करओलनि आ तत्पश्चात् नवीन भारतक निर्माणमे लागि गेलाह । हम पूर्वहिं कहि आयल छी जे कोना ओ कोशी बान्ह बन्हओलनि, कोशी नहरि बनवओलनि आ कोना संसदमे प्रवेश क' विभिन्न मंत्रालयमे दक्षतापूर्वक कार्य क' देशक नव-निर्माणक कार्यकें आगाँ बढ़ओलनि । विद्यार्थी जीवनसँ मृत्यु पर्यन्त ओ कहियो चैन नहि कयलनि । सतत कार्यरत रहलाह आ अन्तिमो कालमे निर्माण कार्य करिते प्राणत्याग कयलनि । एहन के कर्मठताक जीवनयापन कयने अछि ? देशक भावी पीढ़ीक लेल ओ मार्ग दर्शकक रूपमे प्रेरणाक स्रोत रहलाह । संसद-सदस्य श्री राजदेव सिंह हुनका विषयमे कहने छथि—

"बिहारमें बड़े-बड़े नेता हो गए हैं। भारतरत्न राजेन्द्र बाबू से बड़ा नेता और कौन होगा ? वह बिहार की ही देन थे। किन्तु राजेन्द्र बाबू बिहार को वह नहीं दे पाये जो ललित बाबू ने दिया—तरह-तरह के उद्योग-धन्धे, कोने-कोने में रेल लाइनें और कोशी परियोजना आदि। ललित बाबू ने बिहार को क्या नहीं दिया ? और बिहार के लिए ही एक नयी रेल लाइन का उद्‌घाटन करते समय उन्होंने प्राणों की आहुति भी दे दी। यह आहुति, यह बलिदान देना हर किसी के लिए सम्भव नहीं होता हर किसी के भाग्य में नहीं होता। ललित बाबूके भाग्य और मानव के रूप में उनकी ऊँचाई का मापदण्ड इससे बढ़कर और क्या हो सकता है ?

ललित बाबू वस्तुतः जन-नायक छलाह। ओ सर्वतोमुखी प्रतिभा ल' क' एहि धराधामपर अवतीर्ण भेल छलाह आ ओहि प्रतिभाक उपयोग ओ कर्मठता-पूर्वक राष्ट्रक आ देशक सेवाक हेतु कयलनि।

७. महाप्रयाण

२ जनवरी, १९७५ क' ललित बाबूकेँ समस्तीपुर स्टेशनपर छोटी लाइनकेँ बड़ी लाइनमे परिवर्तित करबाक उद्‌घाटन समारोहक अवसरपर संध्याकाल पहुँचबाक छलनि। अपराह्नमे ओ हवाइ जहाजसँ दरभंगा उतरलाह। हम ओहि समयमे दरभंगेमे मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक रूपमे छलहुँ। हमहूँ हुनक स्वागतार्थ हवाइ अड्डा गेल छलहुँ। दिन झाँपल छल। सूर्य भगवानक दर्शन नहि होइत छल। किछु कुहेस सेहो छल। मौसम अनुकूल नहि रहबाक कारणे प्लेनकेँ अयबामे बहुत विलम्ब भेलैक। तथापि हजारो लोक ललित बाबूक स्वागतार्थ हवाइ अड्डामे डटल रहल। दिन साफ नहि छल। एहन बूझि पड़ैक जेना किछु अशुभ घटना होमयबाला अछि। अन्ततोगत्वा हवाइ जहाज आयल। ललित बाबू एक-एक व्यक्तिसँ भेँट कयलनि। हमरा देखिते ओ भरि पाँज क' पकड़ि लेलनि। के जनैत छल जे ई अंतिम आलिंगन छल। ओतय कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक सभाभवनमे ललित बाबूक अभिनन्दनक हेतु सभाक आयोजन छल। ललित बाबू एहि सभामे (जे दरभंगामे हुनक अन्तिम सभा छल) मिथिला, बिहार आ देशक विकासक हेतु विभिन्न योजनाक विषयमे बजलाह। हमहुँ ओहि सभामे उपस्थित छलहुँ। हमरा एहने बुझना गेल जे मिथिलाक विकासक हेतु जे काल्हि होयतैक से आइए अथवा एखनहि कयल जाय, तेहन ललित बाबूक विचार छलनि। लोक पूर्ण आश्वस्त छल जे आब दरभंगामे रेलवेक क्षेत्रीय कार्यालय आओत, बड़ी लाइन आओत, मिथिलाक चित्रकलासँ ओहिमे लागल लोक सभक आर्थिक विकास होयत, मिथिलांचलमे उद्योग-धंधाक स्थापना होयत आदि। बहुत कम कालमे ललित बाबू सभाक कार्य सम्पन्न कयलनि। लोक सम्मोहित छल। ओ जेम्हरे जाथि हजारो हजार लोक हुनक पाछाँ चलथि। एहि सभाक बादे हुनका रेलसँ समस्तीपुरक समारोहमे भाग लेबाक हेतु जयबाक छलनि। ओ दरभंगा स्टेशन पर स्पेशल ट्रेनमे बैसलाह। कोन मुहूर्त छल ई से नहि जानि जाहिमे ओ दरभंगासँ प्रस्थान कयलनि जे फेर घूरिक'

दरभंगा नहि अयलाह। संध्याकाल समस्तीपुरक सभामे भाषण कयलनि। एहि भाषणमे देशमे रेलवेक विकासक सम्बन्धमे बजलाह। पुनः समस्तीपुर मुजफ्फरपुर तकक ५३ किलोमीटर लम्बा रेल पथक विशेषताक सम्बन्धमे कहलथिन। पुनः राष्ट्रीय विकासक सम्बन्धमे बजलाह—

"मैं केवल इतना ही कहना चाहता हूँ कि ठोकर मारने से धूल उड़ सकती है, लेकिन खेती नहीं हो सकती। खेत में पैदावार बढ़ाने के लिए या कारखानों में उत्पादन की रफ्तार तेज करने के लिए लगातार एकजुट होकर काम करना होगा। मँहगाई और बेरोजगारी इसलिए है चूँकि उत्पादनमे कमी आ गई है। हड़ताल से या प्रदर्शन से या घेराव से न तो कारखानों में उत्पादन बढ़ेगा, न खेती होगी और यदि उत्पादन और खेती नहीं होगी तो मँहगाई और बेरोजगारी भी दिनपर दिन बढ़ती जायेगी।"

एकर किछुए काल बाद ओ घटना घटल जाहिसँ माँ मैथिली चीत्कार क' उठलीह। मंचहिपर बम विस्फोट भेल। ई घटना छओ बजे संध्याकाल भेलैक। ललित बाबू, हुनक अनुज एवं तत्कालीन सिंचाइ एवं विद्युत मंत्री डा० जगन्नाथ मिश्र (सम्प्रति मुख्यमंत्री, बिहार) सेहो घायल भ' गेलाह। हिनका लोकनिक अतिरिक्त किछु विधायक, रेल कर्मचारी आ पचीसो अन्यान्यो लोक आहत भेलाह। दरभंगाक तत्कालीन डी० आइ० जी० सेहो गम्भीर रूपसँ आहत भेलाह।

दू जनवरी, १९७५क ओहि कालरात्रिमे विशेष रेलगाड़ीसँ घायल ललित बाबूकेँ उपचारार्थ दानापुर अस्पताल पहुँचाओल गेल। लोककेँ ई नहि छलैक जे ललित बाबूकेँ संगीन चोट छनि जाहिसँ हुनक देहान्त भ' जायत। मुदा घाव 'सतही' नहि छल। ई प्राणलेवा छल। समाज आ देशक शत्रु अपन कारनामामे सफल भेल। दोसर दिन लगभग नओ बजे ललित बाबू गाम-घर, परिवार आ देश सभकेँ छोड़ि महाप्रयाण कयलनि।

ललित बाबूक मृत्युक खबरि गाम-गाममे विद्युत् गतिसँ पसरि गेल। मिथिला आ देशपर वज्रपात भ' गेल। मिथिलाक कतोक घरमे एहि असंभावित समाचारसँ चूल्हि नहि जरल। ककरो विश्वास नहि होइ जे ललित नहि रहलाह परन्तु वास्तविकताकेँ तँ स्वीकार करहिँ पड़ैत छैक। सभ सरकारी भवन पर झंडा आधा झुका देल गेल। तीन दिनक राजकीय शोक मनयबाक घोषणा कयल गेल। सम्पूर्ण बिहार आ देशमे शोक-लहरि पसरि गेल। मृत्युक

उपरान्त हुनक शव सदाकत आश्रममे आनल गेल। अन्तिम दर्शनार्थ हजारो व्यक्तिक भीड़ छल। हमहूँ दरभंगासँ अन्तिम दर्शनक हेतु पहुँचलहुँ। लोक बिलखि-बिलखि कानि रहल छल। बिहारक तत्कालीन राज्यपाल श्री भंडारे, तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर, विधायकगण, सांसदगण, नागरिकगण, विरोधी दलक नेतागण, सरकारी कर्मचारी सभ अंतिम दर्शनक हेतु सदाकत आश्रममे उपस्थित छलाह। कतेको माल्यार्पण हुनक शवपर कयल गेल। अपराह्नमे हुनक शव पटना जंक्शन पहुँचाओल गेल, जतयसँ रातिमे विशेष रेलगाड़ी हुनक शव ल' क' बलुआ बजारक हेतु प्रस्थान कयलक। जखन गाड़ी खुजलैक तखनुक दृश्य अभूतपूर्व छल। केओ हुनका शव लगसँ हटय नहि चाहैत छल।

सभसँ दुखक विषय ई छल जे हुनक धर्मपत्नी आ बच्चा सभ अन्तिम समयमे हुनका लग उपस्थित नहि रहथि। कोना रहितथि ? के ई बात जनैत छल ? संध्याकाल ३ जनवरीकेँ हुनक स्त्री वायुयानसँ दिल्लीसँ पटना आबि सोझे पटना जंक्सन पहुँचलीह। अन्तिम दर्शन करितहिँ ओ बेहोश भ' गेलीह आ बड़ कठिनतासँ हुनका ओहि ठामसँ अलग कयल जा सकल। जीवनसंगी आ जीवनसंगिनीक अद्भुत वियोग छल।

ललित बाबूक इच्छानुसार हुनक अन्तिम संस्कार बलुआ बजार (अपन पैतृक निवासस्थान)मे होयबाक छल। हुनक शव ४ जनवरीकेँ ओतय पहुँचि गेल। रेलवे स्टेशनसँ बलुआ बजार धरि लाखो नर-नारी हुनक अन्तिम दर्शन कयलक। ओहि दिन हुनक अंत्येष्टि क्रिया दिनमे अढाइ बजे ओहि स्थानपर कयल गेल जे ललित बाबू पहिनहि अपन भाय लोकनिकेँ बता देने छलथिन। राजकीय सम्मानक संग वैदिक रीतिसँ हजारो शोकाकुल नर-नारी, भारतक प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरागांधी, तत्कालीन स्वराष्ट्रमंत्री श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी, निर्विभागीय मंत्री श्री उमाशंकर दीक्षित, कांग्रेस अध्यक्ष श्री देवकान्त बरुआ, बिहारक मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर, अन्यान्य मंत्रिगण, परिवारक सदस्य, बन्धु-बान्धव आ समाजक लोकक उपस्थितिमे पोखरिक कातमे अन्त्येष्टि सम्पन्न भेल। हुनक ज्येष्ठ पुत्र श्री विजयकुमार मिश्र मुखाग्नि देलथिन। ईहो दृश्य अभूतपूर्व छल। बलुआ बजार गाममे मेला लागि गेल छल। भीड़ ततेक जे पुलिसकेँ नियन्त्रण करबामे कठिनाइ होइक। अंतिम संस्कार सम्पन्न होयबासँ पूर्व सेनाक एक टुकड़ी हवामे गोली दागि क' दिवंगत नेताकेँ अंतिम सलामी

देलक आ हथियार उनटा लेलक। श्रीमती इंदिरा गांधी चितापर चाननक लकड़ी चढ़ओलनि। आ तत्पश्चात् विशिष्ट व्यक्ति सभ आ परिवारक सदस्य लोकनि चाननक लकड़ी चितापर चढ़ओलनि। राष्ट्रपतिक निजी सचिव हुनका दिससँ चितापर फूलमाला आ लकड़ी अर्पित कयलनि। आब देश-विदेशक नेतालोकनिक शोक-सन्देश आबय लागल। श्रीमती गांधी अपन शोक सन्देशमे विघटनकारी तत्वकेँ ललित बाबूक मृत्युक लेल उत्तरदायी बतओलनि। राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद कहलथिन—"नृशंस हिंसा ने एक अनन्त संभावनाओं वाले व्यक्तित्व को एकाएक समाप्त कर दिया।" राज्यपाल श्री आर० डी० भंडारे, मुख्यमंत्री श्री अब्दुल गफूर, विधान सभाध्यक्ष पं० हरिनाथ मिश्र आदि अपन-अपन शोकोद्‌गार व्यक्त कयलनि।

ललित बाबूक प्रयाणपर कविक एहि पंक्ति सभकेँ देखल जाय —

मिथिलावासी भेल हतप्रभ।
विकल लोक, शून आशा नभ।
दारुण दुखसँ तन-मन जर्जर।
हा ! हा ! ललित पुकारि रहल छथि।
माँ मैथिलि चीत्कारि रहल छथि।

(श्री भागवत मिश्र 'वियोगी')

ललित बाबू हमरा लोकनिक बीच नहि रहलाह। मात्र ५३ वर्षक अवस्थामे ओ वैकुण्ठवासी भ' गेलाह। कतेक लोककेँ आशा छलैक हुनकासँ, कतेक संभावनायुक्त पुरुष छलाह ओ, परन्तु कालक क्रूर हाथ हुनका हमरा-लोकनिसँ छीनि लेलक।

ललित बाबू तँ चल गेलाह परन्तु जाहि विघटनकारी तत्वक हाथेँ ओ गेलाह से समाजकेँ किछु सोचबाक लेल बाध्य करैत अछि। ७ जनवरी, १९७६ क' दिल्लीमे ललित बाबूक निधनपर एक शोक-सभामे श्रीमती इंदिरा गांधी बजलीह — "एहि देशमे किछु लोक आन्दोलन क' रहल छथि। एहि आन्दोलनक उद्देश्य की अछि ? आइ जखन सम्पूर्ण देश आर्थिक कठिनाइसँ पीड़ित अछि, ओलोकनि एकर सर्वनाश क' रहल छथि। जखन एहन स्थिति अछि तखन ओलोकनि चुनावक ढाँचामे परिवर्तन करबाक माँग क' रहल छथि। ई आवश्यक भ' सकैत अछि। परन्तु की इएह समय एहि माँगक लेल उपयुक्त अछि ? लोककेँ भोजन-सामग्रीक अभाव छैक किन्तु ओ सभ

कहैत छथि जे पहिने ई निर्णय क' लेबाक चाही जे चुनायक संचालन कोना कयल जाय। ओ समस्या (अन्नक) ताबत स्थगित कयल जा सकैत अछि। विद्यार्थीगण बेरोजगार छथि। कारण विकास सन्तोषजनक नहि अछि। विकास न्यून उत्पादनक कारणे सन्तोषजनक नहि अछि। ओ लोकनि शिक्षा पद्धतिकें बदलबापर जोर द' रहल छथि जेना हमरालोकनि एहि बातकें बुझिते ने होइऐक। यद्यपि ई शोक-सभा अछि परन्तु तैओ हम उपर्युक्त विषय सभ दिस अहाँ सभक ध्यान आकृष्ट कयल अछि। इएह समय अछि जखन हमरा लोकनिकें ई सोचबाक चाही जे ललित बाबू किएक शहीद भ' गेलाह। एतबेसँ काज नहि चलत जे हमरालोकनि बैसिक' शोक प्रदर्शित करी। हमरा लोकनि दुखी छी परन्तु हमरा सभकें क्रोध सेहो भ' गेल अछि। ई समय अछि जखन हमरालोकनिकें संकल्पपूर्वक अपन काज करबाक अछि जाहिसँ ललित बाबू अथवा आओरो अन्य लोकक बलिदान व्यर्थ ने चल जाय। ई अत्यन्त दुखक बात थिक जे देशमे जखन एहन घटना सभ भ' रहल अछि तखन झूठ अफवाहक प्रचार कयल जा रहल अछि। बहुत गोटाकें एहि प्रचारसँ मोनमे होमय लगैत छनि जे एहिमे किछु तँ सत्य अवश्य होयत परन्तु सत्यकें झूठ आ झूठकें सत्य मात्र ओकरा बेर-बेर दोहरा क' नहि बनाओल जा सकैत अछि।"

ओ कहलनि जे हम लाइसेन्स काण्डमे किएक दृढ़ रखि अपनओलहुँ? हम जनैत छलहुँ जे एहिमे कोनो गलती नहि छलैक। हम एहि विषयपर जतबा सम्भव छलैक विचार कयने छलहुँ। हम नहि कहि सकैत छी जे कानूनी निष्कर्ष एहिमे की होयतैक। परन्तु जतबा दूर हम एकरापर विचार क' सकलिऐक, हमरा इएह बुझना गेल जे एहिमे कोनो गलती नहि छलैक। परन्तु बनक आगि जकाँ आन्दोलन शुरू क' देल गेल आ ई नगरक चर्चाक विषय बनि गेल। एहिसँ इएह सिद्ध होइत अछि जे एहि देशक अथवा आनो देशक लोककें आसानीसँ मार्गच्युत नहि कयल जा सकैत अछि।'

ललित बाबूक जीवन-कालहिमे किछु राजनीतिक दलक हताश नेता लोकनि कोनो कुचक्रसँ बाज नहि अयलाह। आब ई बुझना जाइत अछि जे एहि हताश नेतालोकनिक आक्रोशक शिकार भेलाह ललित बाबू। ललित बाबूक मृत्युक दू-तीन वर्ष पूर्व दोषारोपणक जेना बाढ़ि आबि गेल छल। जकरा चलैत आँखि रहितहु सत्यक साक्षात्कार नहि भ' पाबि रहल छल। बिहारसँ दिल्ली धरि हुनका विरुद्ध विष-वमन होइत रहल, गलत आक्षेप होइत रहल आ आरोपपर आरोप गढ़ल गेल। ललित बाबू आब हमरालोकनिक बीच

नहि रहलाह परन्तु ई आवश्यक बुझना जाइत अछि जे हमरालोकनि सोची कि ओ एहि आरोप सभक योग्य छलाह ? ललित बाबूक प्रति किएक विरोधी पक्षक किछु नेतालोकनिकें एतबा डाह छलनि ? ललित बाबूक चरित्र हननक हेतु ओलोकनि किएक एतेक सक्रिय छलाह ? एकर उत्तर जनबाक हेतु राजनीतिक स्थितिक इतिहासक विहंगमावलोकन करब आवश्यक। १९५२सँ १९६७ धरि कांग्रेसक संगे विभिन्न राजनीतिक दल सेहो अपन-अपन स्थान सुदृढ़ करबाक प्रयास कयलनि। परन्तु हिनकालोकनिकें इच्छित सफलता नहि प्राप्त भेलनि। फलस्वरूप एहि राजनीतिक दल सभक किछु नेतागणक निराशा आओर तामसिक आक्रोशक शिकार ई भ' गेलाह। ई तँ सर्वविदित अछि जे संयुक्त सोसलिस्ट पार्टीक नेतागण बराबरि हीन भावनासँ पीड़ित रहलाह अछि। नेहरू परिवारक प्रति हुनकालोकनिक आक्रोशक कारण निकालब कठिन बात अछि। ललित बाबूक अधिकांश विरोधी सोसलिस्ट पार्टीक नेतागण छलाह। ललित बाबूक निर्वाचनमे सेहो इएह लोकनि हुनकर जोरदार विरोध कयने छलथिन आ प्रशासनमे सेहो इएहलोकनि जोरदार ढंगे ललित बाबूक विरोध करैत रहलाह।

कांग्रेस संगठनक विभाजनक पश्चात् ललित बाबू ओहि नेतृत्वक संग देलनि जे प्रगतिशील, क्रांतिकारी, समाजवादी आ धर्मनिरपेक्ष विचारधाराक प्रतीक छल। इएह कारण छल जे ओ समर्पित भावसँ श्रीमती गांधीक संग देलथिन। एहि कारणे संयुक्त सोसलिस्ट पार्टी, जनसंघ आ कांग्रेसक नेतागण बौखला उठल छलाह। एतबे नहि ललित बाबूक अपन जे कांग्रेस दल छलनि तकरो किछु नेता हुनक उदार व्यक्तित्वक कारणे राजनीतिमे जे हुनक स्थान बनल जाइत छलनि से देखि द्वेषक तापमे जरय लगलाह। वास्तविकता ई छल जे ई विद्वेषी नेतालोकनि श्रीमती गान्धीक आदर्श विजयसँ तिलमिला गेल छलाह।

१९७१ ई० मे मध्यावधि चुनावक बाद श्रीमती गान्धीक नेतृत्वमे पुनः कांग्रेस सशक्त भ' उठल। विरोधी दलक हाथमे जे किछु दिनक लेल सत्ता आयल छल से समाप्त भ' गेल। देशक दलित वर्ग, मजदूर वर्ग, किसान वर्ग सभ अपन समृद्धिक भविष्य श्रीमती इन्दिरा गांधीमे देखय लागल। श्रीमती गान्धीपर प्रत्यक्ष प्रहारक फल होइत जनताक आक्रोश अथवा कोपभाजन होयब तेँ ओलोकनि हुनक अनुयायी आ आधारस्तम्भपर आघात करब प्रारंभ

कयलनि। ई सर्वविदित अछि जे विहारमे कांग्रेसक उत्थानक श्रेय ललित बाबूकें छनि। ललित बाबू जातिवादक देवालकें ढाहि देलनि आ विहारक प्रत्येक वर्गक आ जातिक लोकक ओ विश्वास प्राप्त कयलनि। डॉ० वचनदेव कुमारक एहि प्रसंग निम्नलिखित उद्धारणकें देखल जाय—

"पिछड़े हुए लोगों और अल्पसंख्यकों को संगठन या शासन में जो महत्व या पद प्राप्त हुआ है वह नहीं होता, यदि बिहार का नेतृत्व श्री ललित नारायण मिश्र के हाथों में न होता। श्री मिश्र के व्यक्तित्वमे बिहार विभिन्न वर्गों, समुदायों और जातियों की महत्वाकांक्षा जीवित हो उठी और यह देखकर विरोधी राजनीतिक दलों को लगा उनके पाँव तले से धरती खिसकती जा रही है। इसलिए विरोधी दलों की निराशा, कुंठा और आक्रोश स्वाभाविक है।"

ललित बाबूक जीवन-कालहिमे प्रो० वचनदेव कुमारक ई मत छल। ललित बाबू जखन विहारक राजनीतिक लगाम अपना हाथमे लेलनि तें बिहार विधान सभामे विरोधी दलक शक्तिमे बहुत ह्रास भ' गेल तें ओ सभ प्रत्यक्ष रूपें ललित बाबूकें एकर कारण बूझय लगलाह। ललित बाबूक विरुद्ध वीरपुर, दुमका आदि स्थानमे जाहि तरहक प्रदर्शन कयल गेल ओ स्पष्ट सिद्ध करैत अछि जे विरोधी दलक नेता सिद्धान्त आ आदर्शक आधारपर ललित बाबूक सामना नहि क' आनो तरहें हुनका पदच्युत करवाक इच्छा रखैत छल। ललित बाबूपर आरोप लगाओल गेल जे ओ खेतिहर मजदूर आ हरिजन सभक जमीन हथिया लेने छथि। एहि हेतु राष्ट्रपतिकें ज्ञापन देल गेल। परन्तु आश्चर्यक बात ई अछि जे जाँच-पड़तालक क्रममे कोनो हरिजन ललित बाबूपर ई आरोप नहि अनलक। ललित बाबू कांग्रेसमे आबिक' जगह-जमीन अथवा आन कोनो सम्पत्ति नहि बढओलनि। प्रत्युत पितासँ जे हुनका जमीन भेटल छलनि तकर अधिकांश भाग वेचिक' ओ समाजक कार्यमे लगओलनि। एहि आदमीक प्रति ई कहब जे ओ हरिजनक जमीन ल' लेलनि कतवा दूर धरि सत्य अछि से अनुमान कयल जा सकैछ।

कोशीपर बान्ह बन्हवा आ नहरिक निर्माण करा ललित बाबू कोशी क्षेत्रक वन्ध्या भूमिकें उपजाउ बना देलनि। जतय कौड़ीक मोल जमीन बिकाइत छल ततय हजारो रुपैया बीधा जमीनक दाम भ' गेल। की कोनो कोशी क्षेत्रक लोक ललित बाबूक चरित्र-हननक प्रयासमे संग द' सकैत अछि?

जाहि 'कोशीक बाबू'क सत्प्रयासे आ कठिन तपस्याक कारणे कोशीक प्रकोपसँ कोशी अंचलक क्षेत्रक लोककेँ त्राण भेटलैक ताहि ललित बाबूक विषयमे जे केओ मनगढ़न्त बात करत तकरा ओ सभ नहि मानि सकैत अछि। इएह कारण छल जे हुनक अर्थी देखबाक हेतु फारबिसगंजसँ बलुआ बजार धरि बीस मीलक रास्तामे सड़कक दुनू कात असंख्य नर-नारी अंतिम दर्शनक हेतु ठाढ़ छल।

ब्लिट्जक सम्पादक श्री आर० के० करंजियाकेँ ललित बाबू कहने छलथिन—"हमारी राजनीतिक प्रणाली एकदम सड़ी हुई है। इसे बदलना ही होगा। नहीं तो हम सब खत्म हो जायेंगे।" श्री करंजिया कहैत छथि—"जाहिर है कि उन्हें (ललित बाबू) अपनी मौत की चेतावनियाँ मिल चुकी थीं। लेकिन वह निर्भय होकर उसका सामना करने लिए आगे बढ़ रहा था। ज्योतिषमें उसे अटूट आस्था थी। उसके ज्योतिषी हरसुख पंडित ने निश्चय ही उसे आगाह किया होगा। मैं अन्दाजा लगा सकता हूँ कि उसे ललित ने कहा होगा कि कायर अपनी मौत से पहले अनेक बार मरते हैं और वीर मौत नहीं जानते—जबतक मौत आ ही न जाये। हत्या होने के एक महीने से ज्यादा अर्से पहले उसने रहस्य खोल दिया था। ललित ने मुझसे कहा था—"मैं इन आदमखोरों से परेशान आ चुका हूँ। वे जल्दी मेरी जान ले लेंगे।" श्री करंजिया एहि अपराधक पाछाँ ककर हाथ म' संकेत छल तकर अनुमान करैत कहैत छथि—"मिश्रविरोधी मुहिम संयम या गरिमा की तमाम सीमाएँ लांघ चुका था। हो सकता है इसीसे सह पाकर पागलों ने यह जघन्य अपराध किया।'''' '''लेकिन विरोधपक्ष घृणा और हिंसा के उस वातावरण को पैदा करने की परोक्ष जिम्मेदारी से बच नहीं सकता जो एक अकेले मंत्री के खिलाफ उछाला गया था। उनके राजनीतिक दुश्मन और सभी लोग यह मानेंगे कि व्यक्तिगत तौर पर ललित नारायण मिश्र भ्रष्ट नहीं थे। वह जितना भी पैसा जमा करते थे, पार्टी के खजांची को सौंप देते थे।"

चरित्र-हत्याक आन्दोलन अपन देशमे नव बात नहि थिक। वी० के० कृष्णमेनन, टी० टी० कृष्णमाचारी आदि अनेक देशभक्तक चरित्र-हत्याक प्रयास कयल गेल। आ हुनक विरोधी अपन प्रयासमे सफल भेल। उपर्युक्त दिग्गज लोकनिक चरित्र-हत्या परोक्ष रूपमे जवाहर लाल नेहरूक चरित्र-हत्याक प्रयास छल। ठीक ओहिना ललित बाबूकेँ निशाना बनायब परोक्ष

रूपमे इंदिरा गाँधीपर साधल गेल निशाना छल। ललित बाबूक निधनपर आयोजित दिल्लीक एक शोक-सभामे प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी कहने छलीह—

"मैं जानती हूँ, सारा विश्व जानता है कि लक्ष्य कौन था।"

एहिसँ स्पष्ट भ' जाइत अछि जे ललित बाबूक हत्याक पाछाँ की उद्देश्य छल। ललित बाबूक हत्याक हेतु जे बम बिस्फोट भेल ताहि सम्बन्धमे श्री शिव-सागर मिश्र, निदेशक, राजभाषा, रेल मंत्रालय कहैत छथि—

"मैं पाँच छह रोज पहले समस्तीपुरमे था। वहाँ मुझे मालूम हुआ कि इस समारोह के विरुद्ध विरोधी दल के लोगों की कई बैठकें हो चुकी है। उनलोगों ने समरोह में विघ्न डालने का निश्चय कर लिया है। विघ्न का रूप क्या होगा यह मुझे मालूम नहीं हो सका था।"

प्रतिक्रियावादी आ फासिस्ट सभकें ललित बाबूक प्रति एक आओर कारणे आक्रोश छलनि। हुनकालोकनिकें देखबामे अयलनि जे ललित बाबूक विवेक-शील नेतृत्व आ संगठन-क्षमताक कारणे बिहारमे कांग्रेस पुनः सुदृढ़ भ' गेल आ आपसी मतभेद सेहो बहुत दूर धरि समाप्त भ' गेल। हुनके प्रेरणासँ बिहारक जनतांत्रिक जनता फासिस्ट आन्दोलनक समुचित उत्तर देने छल। एहि प्रसंगमे बिहारक खाद्य, आपूर्त्ति आ संसदीय कार्यमंत्री श्री रामाश्रय प्रसाद सिंहक विचार द्रष्टव्य अछि—

"यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बिहार में फासिस्टों के इरादे क्या थे। हर कोई जानता है कि किस तरह से उन्होंने छात्रों और युवकों को गुमराह करने का प्रयास किया, किस तरह उन्होंने राज्य में हिंसा को बढ़ावा दिया और किस तरह से उन्होंने जोर जबरदस्ती दबाव और हिंसा का सहारा लेकर प्रजातांत्रिक मूल्यों की हत्या करने की कोशिश की। बाहर यह आन्दोलन चलता था और दूसरी ओर महीनों तक संसदीय कार्रवाई को ठप करने का सामूहिक प्रयास होता था। ललित नारायण मिश्र, प्रधानमंत्री, और कांग्रेस सबके प्रति दुर्भावना का वातावरण तैयार

करने का अभियान चलाया जा रहा था। यह अभियान ललित बाबू की हत्या के बाद भी बन्द नहीं हुआ, केवल इसका रूप थोड़ा बदल गया। सेना और पुलिस जैसे संगठनों को वफादारी और देशभक्ति जैसी पवित्र भावनाओं के विरुद्ध भड़काना इस बात का स्पष्ट प्रमाण था कि भारत की जनता में और हमारे जनतन्त्र में उनकी कोई आस्था नहीं है।"

उपर्युक्त विवरण सभसँ स्पष्ट भ' जायत जे ललित बाबूक हत्याक पाछाँ कोन साजिश आ कुचक्र सभ काज क' रहल छल।

८. ललित बिनु मिथिला

३ जनवरी, १९७५ कें मिथिलापर वज्रपात भेल जखन समस्तीपुरक सभामे वम विस्फोटक कारणे ललित वाबू एहि धराधामकें छोड़ि विदा भेलाह। हुनक निधनसँ समस्त देश शोक-विह्वल भ' उठल, जकर वर्णन पूर्वहिँ कयने छी। मिथिला अपन सपूतकें गमाक' क्रन्दन क' उठल। प्रत्येक परिवारकें इएह वोध भेलैक जे ओकरे घरक दीप मिझा गेलैक, ओकरे परिवारक मुखियाक मृत्यु भ' गेलैक। ललित वाबूक निधनक दुइए चारि दिन बाद हम झंझारपुर लौकहा जे नव लाइन वनैत छलैक, ओहि दने जाइत छलहुँ। मजदूर सभ ओहिपर काज करैत छल। हमरा लोकनिकें देखि पुछलक जे ललित वाबू त' विदा भ' गेलथिन, अव हमारा लोकनिकें रोजी-रोटी के देत ? ई कहि ठोहि पारि क' कानय लागल। ओकरा सभकें ई विश्वास नहि होइत छलैक जे ललित वाबूकें छोड़ि आओरो केओ ओकरा सभक मसीहाक रूपमे ठाढ़ भ' सकैत अछि। सम्पूर्ण मिथिलामे जनमानसपर ई प्रभाव आओर दोसर व्यक्तिक नहि भेलनि।

स्व० ललित वाबू एहि देशक महान् नेता छलाह। हुनक व्यक्तित्वक प्रभाव देश-विदेश सर्वत्र छल। मिथिलाक एहि वरदपुत्रक मिथिलांचलक कण-कणसँ आजीवन प्रगाढ़ सम्बन्ध रहल। अतीतमे याज्ञवल्क्य, वाचस्पति, मंडन, उदयन आदिपर जेना मिथिलाकें गर्व रहलैक, ओही प्रकारें आधुनिक कालमे ललित वाबू मिथिलाक गर्व आ गौरव छलाह। ललित वाबूक जीवनक अन्तिम चरणमे मिथिला ललितमय भ' उठल छल। ओ जाति आ वर्गसँ ऊपर छलाह, सभक प्रिय छलाह आ निर्विवाद रूपें मिथिलांचलक नेता छलाह। गाम-गाममे ललित वाबूक जीवनकालहिँमे हुनक यशोगाथाक गान होइत छल। हिनका होइत छलनि जे अपन जीवनकालहिँमे मिथिलाकें सर्वसम्पन्न क' दी। मिथिलाकें दिल्लीसँ कोनो लगाव तक नहि छलैक। मिथिलाकें दिल्ली आ देशक आन भागसँ जोड़वाक श्रेय ललिते वाबूकें छनि। देश-विदेशमे मिथिला चित्रकलाक प्रचार क' ललित बाबू ओहि वर्गक वीच अमर भ' गेलाह जे

गरीब-दुखी स्त्रीगण युग-युगसँ एहि कलाक रक्षा करैत रहथि। परन्तु ललित बाबूक प्रयाससँ ई कला अर्थकारी भ' गेल। ललित बाबूक बिना की ई सम्भव होइतैक ?

ललित बाबू मात्र मिथिलेक नहि छलाह, मात्र मिथिलेक उद्धारक हेतु ओ कार्य नहि कयलनि, ओ सम्पूर्ण देशक छलाह आ सम्पूर्ण देशक आर्थिक आ सांस्कृतिक विकासक हेतु ओ प्रयत्नशील रहलाह। जीलाह तँ देशक लेल, मरलाह तँ देशक लेल काज करैत। मिथिला आ मैथिलीकेँ ई गर्व छैक जे ओ देशके एहन वरद पुत्र समर्पित कयलक।

ललित बाबू चल गेलाह। आब ई बुझबामे नहि अबैत छैक जे हुनक अनुपस्थितिमे मिथिलामे जे नाना प्रकारक समस्या छैक तकर समाधान के करत। आर्थिक दृष्टिएँ भारत-वर्षकसभसँ पछुआयल क्षेत्र अछि मिथिलांचल। प्राकृतिक दृष्टिएँ ई भूभाग सम्पन्न अछि, उपजाउ भूमि, आ प्रचुर जल, तथापि कृषिमे सेहो ई अत्यन्त पछुआयल अछि। व्यवसाय तँ मिथिलांचलमे नगण्ये अछि। तीन कोटि मैथिल संतान युग-युगसँ उपेक्षित आ प्रताड़ित रहल अछि। ललित बाबू सम्पूर्ण मिथिलाक आशाक केन्द्रबिन्दु छलाह। हुनका जीवितावस्थामे मैथिल बहुत आशान्वित छलाह। हुनका गेलाक बाद पुनः ओ सभ निराशावादिताक अथाह सागरमे डुबकी लगाबय लगलाह। कविक शब्दमे ललित बिनु मिथिलाक स्थितिकेँ देखू—

दिन बिनु सुरुज, राति बिनु चान
ललित बिनु मिथिला एक समान

नयन बिनु ज्योति अधर बिनु हास
फल बिनु गाछ, पुहुप बिनु वास

जल बिनु सरिता, तन बिनु प्राण
ललित बिनु मिथिला एक समान

विनु बादरि जनु साओन सून
श्याम बिना जनु गोकुल सून
धरम बिनु धाम, अवध बिनु राम
ललित बिनु मिथिला एक समान

पथ बिनु पथिक, पथिक बिनु आँखि
खोंता बिनु चिड़ै, चिड़ै बिनु पाँखि

धरा बिनु गगन, धनुष बिनु बाण
ललित बिनु मिथिला एक समान
करइत कर्म विदेह भेला ओ
अग-जग जानय अमर भेला ओ
पूजा बिनु ध्यान, श्रवण बिनु कान
गुरु बिनु ज्ञान
ललित बिनु मिथिला एक समान

हंस विना जनु मान सरोवर
रंग विना जनु लीखल कोवर
शुभ विनु पान, खोंइछ विनु धान
ललित बिनु मिथिला एक समान

—श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर

कवि जे चित्र प्रस्तुत कयलनि अछि ताहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे मिथिलाक जनमानस ललित बाबूकेँ कोन दृष्टिसँ देखैत छल।

ललित बाबू कोशीक विभीषिकासँ मिथिलाकेँ मुक्त करओलनि। मिथिलांचलक यातायातमे नव रेल लाइन सब बना क' कमे दिनमे क्रान्तिकारी विकास कयलनि। मिथिला विश्वविद्यालयक स्थापना कराक' उच्च शिक्षाक क्षेत्रमे मिथिलाक हेतु अभूतपूर्व काज कयलनि। परन्तु की एतबे काजसँ मिथिलाक सभ समस्याक निराकरण भ' गेल? ललित बाबू तँ मिथिलाक समस्या सभक समाधानक परम्परा प्रारम्भ कयने छलाह। मिथिलाक लोक आश्वस्त भेल जाइत छलाह जे मिथिला आर्थिक आओर सांस्कृतिक विकासक क्षेत्रमे आब ककरहुसँ पाछाँ नहि रहत। परन्तु के जनैत छल जे क्रूर काल वक्र दृष्टिएँ मिथिलाकेँ ताकि रहल अछि। समस्तीपुरक बम विस्फोट ललित बाबूकेँ हमरा लोकनिसँ छीनि लेलक। दुखद प्रसंग ई अछि जे जाहि क्षेत्रक विकासक हेतु ललित बाबू सम्पूर्ण जीवन लागल रहलाह ओही क्षेत्रमे अर्थात् मिथिलाक दुआरिअहिपर ओ हत्याराक क्रूर षडयंत्रक शिकार भेलाह। मिथिलावासीकेँ किछु दिन धरि एहन लगैत रहनि जे आब ललित बाबूक विना मिथिलाकेँ के देखत? परन्तु वाह रे ललित बाबूक सूझ-बूझ। ओ अपन जीवनकालहिमे अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रकेँ राजनीतिमे अयबाक हेतु अभिप्रेरित कयलनि। आइ सम्पूर्ण मिथिलावासीक आशाक एक मात्र केन्द्र छथि डा० जगन्नाथ मिश्र जी। आइ हुनके ललित बाबूक उत्तराधि-

कारी मानि मिथिलावासी जीबि रहल अछि। जगन्नाथ जी स्वयं ललित बाबूक राजनीतिमे सहायक बनबाक उद्देश्यसं एहि क्षेत्रमे पदार्पण कयलनि। डा० जगन्नाथ मिश्र जीक एक लेखसं निम्नलिखित उद्धरण एहि बातकें स्पष्ट करत—

''हम राजनीतिमे कोनो पदक लालसासं नहि अयलहुं। बड़का भैयाक हमरा प्रति अटूट प्रेम छलनि। ओहि प्रेमक ऋण चुकयबाक उद्देश्यसं हम राजनीतिमे अयलहुं। एना कहल जाय जे विहारक राजनीतिमे हुनक एक अनन्य सहायकक रूपमे हुनका सहयोग देबाक हेतु हम आयल छलहुं। हुनक शहादतक बाद हमरा एना लागय जे आब हमर राजनीतिमे रहबाक कोनो उपयोगिता नहि अछि। जखन भैया नहि रहलाह तं ककरा लेल हम राजनीतिमे रहू। किन्तु हमरा मनमें दू बात उठल। एक ई जे ललित बाबू प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधीक एक निष्ठावान एवं सर्वतोभावेन समर्पित सिपाही छलाह। ओ अपन सम्पूर्ण शक्ति इन्दिराजीक संकल्प सभकें पूरा करबामे एवं हुनक प्रतिष्ठा बढ़यबामे लगा देने छलाह। भैया चल गेलाह। हुनक हमरा प्रति जे स्नेह छलनि, ओकर प्रतिदान इएह अछि जे हम श्रीमती गांधीक कार्यकलापकें पूरा करबामे ललित बाबू जेकां सम्पूर्ण शक्तिसं योगदान करबाक चेष्टा करी।

''दोसर बात ई जे ललित बाबूक मोनमे बिहारक उपेक्षित एवं पीड़ित लोकक लेल बड़ दर्द छलनि। ओ चाहैत छलाह जे देशक मानचित्रपर बिहार चमकैत तारा बनि क' उभड़य। ओ चाहैत छलाह जे बिहारक निरीह आ गरीब लोकक बीच सुख आ शान्तिक स्वर्ग उतरय। हम सोचलहुं जे ललित बाबूक ओ सपना अपूर्ण रहि गेल अछि। हम बिहारक दीन-हीन, उपेक्षित-पीड़ित जनताक बीच सुख-सौभाग्य उतारबाक प्रति अपनाकें पूर्णतः समर्पित क' ओहि सपनाकें साकार करबाक यथासामर्थ्य प्रयास करब। हमर राजनीतिमे रहबाक आ मुख्यमंत्री बनबाक इएह उपयोगिता अछि।''

ललित बाबू वस्तुतः मिथिलाक जन-जीवनक उद्धारक हेतु अवतार लेने छलाह। एतबा ओ क' क' गेलाह जे मिथिलाक बहुमुखी समस्याक समाधान कोना भ' सकैत अछि तकर मार्ग देखओलनि। कम समयमे मिथिलाक हेतु

ओ जे क' सकैत छलाह् से कयलनि आओर अपन अनुज डा० जगन्नाथ मिश्रकेँ ओ अपन उत्तराधिकारीक रूपमे मिथिलाक, बिहारक आ देशक समस्याक समाधानक हेतु द' गेलाह्। आब सम्पूर्ण मिथिलाक आशा हुनकेमे केन्द्रीभूत अछि। माँ मैथिली हुनका चिरायु करथि।

एहि ठाम एक प्रसंगक चर्चा कयने बिना मन नहि मानैत अछि। ललित बाबूक देहावसानक उपरान्त सम्पूर्ण मिथिला शोक-विह्वल भ' उठल। एहि संदर्भमे ६ फरवरी, १९७५केँ गफूर मंत्रिमंडल मिथिलाक केन्द्रमे अवस्थित मिथिला विश्वविद्यालयक नामक संग ललित बाबूक नाम सेहो जोड़बाक ऐतिहासिक निर्णय लेलक आ मिथिला विश्वविद्यालयमे ललित बाबूक नाम जोड़ि मिथिलाक घावमे मलहम लगओलक। सरकारक एहि निर्णयक सर्वत्र स्वागत भेल। सभ एकर सराहना कयलक। ललित बाबूक प्रति सम्मान प्रदर्शित करबाक उद्देश्यसँ तत्कालीन सरकार मिथिला विश्वविद्यालयक संग 'ललित नारायण' शब्द जोड़लक। विधानमंडलक भीतर वा बहार कतहु केओ एहि पुनीत कार्यक ओहि समयमे विरोध नहि कयलक। स्व० ललित बाबूक उदात्त अवदानक प्रति बिहारवासीक कृतज्ञता ज्ञापित करबाक उद्देश्यसँ बिहार सरकार मिथिला विश्वविद्यालयक नामकरण 'ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय' कयने छल। ई निर्णय कोनो राजनीतिसँ प्रेरित नहि छल।

१९७७मे जे जनता सरकार बिहारमे बनल से जे एकटा प्रमुख काज मिथिलाक क्षेत्रमे कयलक से छल मिथिला विश्वविद्यालयसँ 'ललितनारायण' शब्दकेँ निकालि देब। जनता सरकारकेँ ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक 'ललितनारायण' शब्दपर ई आक्रोश किएक भेल ? महात्मा गांधी, डा० अम्बेदकर, पं० जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, श्री जय प्रकाश नारायण, डा० राम मनोहर लोहिया, आदिक नामसँ देशमे अनेक संस्था कार्यरत छल। कतहु कोनो भागमे ककरो नाम नहि हँटाओल गेल। मुइलोपर ललित बाबूपर ई आक्रोश किएक जे हुनकर नाम हँटा देल गेल ? मिथिलांचलक बुद्धिजीवी, विद्यार्थी, किसान, मजदूर, नागरिक तथा राजनीतिक दल सरकारक एहि निर्णयक विरोध कयलक। हम तखन ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति छलहुँ। एहि निर्णयक विरोधमे हम २७ सितम्बर, १९७७ क' पदत्याग कयलहुँ। बिहारक तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर सँ सरकारक एहि निर्णयक अनेक नेता विरोध प्रकट कयलनि। दरभंगामे आन्दोलन प्रारम्भ भेल आ विस्फोटक स्थिति भ' गेल। दरभंगामे सभ शिक्षण

संस्था अनिश्चित कालक लेल बन्द भ' गेल। विहारक भूतपूर्व मुख्यमंत्री सेहो एहि निर्णयक वापसीक माङ कयलनि। प्रदेश कांग्रेसक तत्कालीन अध्यक्ष श्री केदार पाण्डेय एहि निर्णयकें अनैतिक आ दुर्भाग्यपूर्ण वतओलनि। परन्तु एकर कोनो फल नहि भेल। १९७७ ई० मे ई मिथिलापर दोसर वज्रपात छल। १९८०मे जखन विहारमे पुन: कांग्रेस मंत्रिमंडलक गठन भेल तखन पुन: ललित वावूक नाम मिथिला विश्वविद्यालयक संग जोड़ल गेल। ललितवावू सम्भवत: एहन एके नेता छलाह जे जीवनकालोमे आ मुइलोपर अपन विरोधीक आक्रोशक शिकार भेलाह। मुदा एहि संसारमे वस्तुतः जीवित ओ अछि जकर कीर्ति छैक—'कीर्तिर्यस्य स जीवति'। ललितवावू मरिओ क' अमर छथि।

पिताक परोक्ष भेलापर लोकक ध्यान स्वभावतः पुत्रपर जाइत छैक, कारण जे भारतमे पुत्र पिताक अवतार मानल जाइत अछि—आत्मा वै जायते पुत्रः। आ तें लोक पुत्रहुँमे ओहि सभ गुणक आशा-आकांक्षा रखैत अछि जे पितामे विद्यमान छल। अतः स्व० ललित वावूक कथा ता धरि पूर्ण नहि होयत जा धरि हुनक पुत्रक विषयमे किछु चर्चा नहि कयल जाय।

आशाक अनुरूपे ललित वावूक जेठ वालक श्री विजय कुमार मिश्रमे अपन पिताक वहुत रास गुण स्पष्टतः लक्षित होइत अछि। पिते जकां इहो छात्रावस्थहिंसँ समाज सेवाक क्षेत्रमे अवतीर्ण भ' गेलाह। आरम्भमे किछु दिन शिपिंग कारपोरेशनमे काज कयलनि आ ओहि काजसँ विदेशो गेलाह। तकर वादो कैक वेर कतेक महत्वपूर्ण कार्यसँ विदेश गेल छथि। १९७६ ई० धरि ई सामाजिक क्षेत्रमे ततवा ख्याति प्राप्त क' लेलनि जे विहार हाउसिंग को-आपरेटिव फेडरेशनक अध्यक्षक पदपर निर्वाचित भ' गेलाह आ तहिआसँ एहि संस्थाक माध्यमे समाजक वहुत पैघ सेवा करैत रहलाह अछि। १९७७ ई०मे ई विहार विधान परिषदक सदस्य निर्वाचित भेलाह। सहकारिताक क्षेत्रमे ई अनुपम संघटन शक्तिक परिचय देलनि आ तकर फलस्वरूप आइ ई विहार हाउसिंग फेडरेशनक अध्यक्षक पद सम्हारैत विहार कन्ज्यूमर्स कोअपरेटिभ फेडरेशनक अध्यक्ष पदकें सेहो सुशोभित क' रहल छथि तथा बिस्कोमान (बिहार स्टेट कोअपरेटिभ मार्केटिंग यूनियन)क बोर्ड आफ डायरेक्टर्सक सदस्य सेहो छथि। एहि तरहें चि० श्री विजय वावू आइ विहार राज्यमे सहकारिताक क्षेत्रमे शीर्षस्थ नेताक रूपमे सर्वत्र समादृत छथि। आब तँ हिनक ख्याति अखिल भारतीय स्तरपर पहुँचि गेल अछि आ तकर फलस्वरूप ई १९८१-८२मे सेन्ट्रल कोआपरेटिभ हाउसिंग फेडरेशनक उपाध्यक्ष पदकें सुशोभित क' रहलाह अछि।

अपन पितहिँ जेकाँ हिनकहुँ अपन देश-कोरासँ, अपन लोक-वेदसँ, अपन भाषा ओ संस्कृतिसँ अपार अनुराग छनि। सम्प्रति ई मैथिलक सभसँ पैघ साहित्यिक ओ सामाजिक संस्था, चेतना समिति, पटनाक उपाध्यक्ष छथि ओ एहि संस्थाक सर्वविध कार्यमे, विशेषतः विद्यापति-भवनकेँ पूर्ण करबामे दत्त-चित छथि। मिथिला-मैथिल-मैथिलीकेँ हिनकासँ बहुत किछु आशा छैक, जहिना हिनक पितासँ छलैक।

जे केओ हिनका निकटसँ जनैत अछि तकरा हिनकामे एकटा स्वस्थ राजनैतिक चिन्तक, उत्साही समाजसेवी, कुशल संघटक ओ उदार एवं स्नेहा-प्लुत आत्माक स्पष्ट आभास भेटतैक। एखन तँ ई अपन यौवनकालमे पदार्पणे कयलनि अछि। भविष्यमे हिनकासँ मिथिलाकेँ, विहारकेँ ओ सम्पूर्ण देशकेँ बहुत किछु पयबाक आशा छैक।

स्व० ललित बाबूक अन्य पुत्र लोकनि सेहो अपन-अपन व्यवसायमे लागल छथि। सभ मेधावी, सुसंस्कृत आ सज्जन छथि। माँ मैथिलीसँ प्रार्थना जे इहो लोकनि अपन पिताक अनुरूप प्रतिष्ठा प्राप्त क' प्रमाणित करथि जे 'आत्मा वै जायते पुत्रः।'

परिशिष्ट—१

मिथिला-विभूति ललितनारायण मिश्रक किछु अमरवाणी

☐ हमर ई निश्चित धारणा अछि जे हिन्दीकेँ कोनो क्षेत्रीय भाषासँ टक्कर नहि छैक। क्षेत्रीय भाषा सभक विकासक बिना हिन्दीक विकास असम्भव अछि। भारतमे बङ्गला, तमिल, मलयालम, तेलुगु, आदि भाषामे उच्च कोटिक साहित्य लिखल गेल अछि आओर लिखल जा रहल अछि। हमरा लेखेँ भारतक सभ भाषा नमस्य थिक। हिन्दीक संग-संग क्षेत्रीयो भाषा सभक विकासार्थ प्रयत्न होयबाक चाही। जाहि-जाहि क्षेत्र देने हमरालोकनिक रेल जाइत अछि ताहि-ताहि क्षेत्रक भाषाक प्रयोग ओहिठामक रेलवे कार्यालय तथा स्टेशन सभपर अवश्य कयल जाय। भाषा प्रेम आ सद्भावक वाहन थिक, ढूसि लड़बाक वा झगड़ा लगयबाक साधन नहि थिक।

☐ अमर महाकाव्य 'रामायण'क प्रेरणा-बिन्दु बनबाक गौरव एहि मिथिला-भूमिकेँ प्राप्त छैक। विद्यापतिक भक्ति-भावना-भरल गीतक स्वर-लहरी आइयो मिथिलाक माटिमे सौरभ भरि रहल अछि।

☐ हम बिहारक थिकहुँ आ बिहार हमर थिक। हम ओकर उन्नतिक हेतु सभ किछु निछाउर क' सकैत छी! केओ हमरापर प्रसन्न रहओ वा अप्रसन्न। हम रही वा नहि रही, बिहार बढ़िक' रहत!

☐ हमर दरमाहा आ हमर खेत-पथार हुनका लोकनिक (परिवारक सदस्य लोकनिक) थिकनि। हुनकालोकनिक हेतु हमरा लग आओर किछु टा नहि अछि। हमरा हाथमे टाका-पैसा अबैत अछि अवश्य, मुदा ओ हमर नहि, संगठनक रहैत अछि। हम नहि चाहैत

छी जे संगठनक एको पीढ़ी हमरा घरमे बचल छो। ओ तँ हमरा हेतु विष होयत।

☐ कर्मचारी लोकनिसँ हमर लड़ाइ नहि अछि। हम तँ प्रजातन्त्रक हेतु लड़ि रहल छी। हमरा लड़ाइ अछि फासिस्टसँ। हम ओहि व्यक्तिमे छी जे एहि बातमे विश्वास रखैत छथि जे प्रजातन्त्र आओर ट्रेड यूनियन आन्दोलन संग-संग चलबाक चाही। यदि हम प्रजातन्त्र चाहैत छी तँ हमर ट्रेड यूनियन सेहो शक्तिशाली होयबाक चाही।

☐ एक उद्योग, एक यूनियन।

☐ हम एतबे टा कह' चाहै छी जे ठोकर मारने गरदा उड़ि सकैत अछि मुदा खेती नहि भ' सकैत अछि। खेतमे उपजा बढ़यबाक हेतु वा कारखानामे उत्पादनक गति तेज करबाक हेतु लगातार एकजुट भ' काज करय पड़त। महगी आ बेकारी एहि हेतु अछि किएक तँ उत्पादनमे कमी आबि गेल अछि। हड़तालसँ, वा प्रदर्शनसँ आ कि घेरावसँ ने कारखानामे उत्पादने बढ़त आ' ने खेतिए होयत। आओर यदि ने उत्पादन होअय आ' ने खेती होअय तँ महगी आ बेकारी दिन-दिन बढ़ितहिँ जायत।

☐ मनुक्खक असली जाँच विरोध आओर संकटक घड़ीमे होइत छैक। धरतीक छातीकेँ चीरि गहुँम अँकुरैत अछि, बढ़ैत अछि। काँटक अन्तरालहिमे गुलाबक फूल फुलाइत अछि, गमकैत अछि।

☐ कार्यकुशल तथा प्रभावकारी प्रशासनक हेतु सबसँ पहिल आवश्यकता अनुशासनक होइत अछि।

☐ भारत एक विकासशील देश अछि। देशक सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक अछि जे दिन-राति तन-मन-धनसँ कार्यरत रहल जाय। विकासक गतिकेँ बन्द होबय देबाक अर्थ होयत देशकेँ पाछू दिस ल' जायब आ' विकासक गतिकेँ रोकबाक अर्थ होयत— देशद्रोह !

☐ यदि देश गरीब अछि आ' देशक विकास रुकैत अछि तँ स्पष्ट अछि जे अहाँक घर सुखी-सम्पन्न नहि भ' सकैत अछि।

- अङ्रेज सरकार अपन सुविधाक हेतु रेल-लाइन बनऔलक। ओकरा एहि ठामक कच्चा माल उघि-उघिक' अपना घर ल' जयबाक छलैक, अपन सेना एक स्थानसँ दोसर स्थान पहुँचयबाक छलैक। परन्तु स्वाधीनताक बाद हमर नेतालोकनिकें ई चिन्ता छलनि जे कोन प्रकारें देशक किसान आओर मजदूरकें, विद्यार्थी आ बेरोजगारकें एक स्थानसँ दोसर स्थानक यात्रा करबामे नीकसँ नीक साधन सुलभ कराओल जाय। हुनकालोकनिकें चिन्ता छलनि जे कोन तरहें कारखानाक उत्पादन आ' खेतक उपजा एक ठामसँ दोसर ठाम सुविधापूर्वक पहुँचाओल जा सकय।

- वास्तवमे हुनक (जवाहरलालजीक) व्यक्तित्व आकर्षक छल। हुनकामे जेना कोनो जादू छल जे अलक्षित रूपें अपना दिस खीचि लैत छल। जवाहरलालजी कहैत कम छलाह, किन्तु हुनक बहुत बात कोनो अज्ञात आध्यात्मिक शक्ति-जेकाँ प्रभावित क' दैत छल। हम हुनक सहज व्यक्तित्वक शिकार अचानक भ' गेल छलहुँ।

———

ललितनारायण मिश्रक विषयमे कताक विशिष्ट व्यक्तिक उद्गार

(क) नेता-लोकनिक

श्री अब्दुल गफूर—भूतपूर्व मुख्य मंत्री, बिहार

ललित बाबूसँ बिहारकेँ बहुत रास आशा छलैक आओर हुनक सभ आशा आइ बिला गेल। ई सोचिक' हृदय आओर विकल भ' उठैत अछि जे ललित बाबू अपन महाबलिदानहुक समयमे उत्तर बिहारक अतिवांछित विकास-योजनाक शुभारम्भ क' रहल छलाह। ओ बिहारक एक महाविभूति छलाह आओर एहि पश्चात्पद प्रदेशक सार्वदैशिक विकास कोना होयत एकर चिन्ता हुनका सदा रहैत छलनि। हुनक सेवा देशक इतिहासमे धरोहर रहत।

श्रीमती अरुणा आसफ अली—

हुनका (ललित बाबू)सँ हमर संगति कोनो औपचारिक ढंगक नहि छल। ओ हमरा सदा जेठि बहिनि मानैत रहलाह आ' हमरासँ ओहने अन्तरंगता रखलनि जेना अपन पारिवारिक सदस्यसँ राखल जाइत छैक। कखनहुँ-कखनहुँ हम हुनका अप्रिय सलाह सेहो दैत छलिअनि, परन्तु हमरा जे गलत बूझि पड़ैत छल से जँ हम हुनका कहि दैत छलिअनि तँ तकरा ओ कहिओ अन्यथा नहि मानथि। ललितनारायण जी उदार हृदयक पुरुष छलाह। हुनक वास्तविक शक्ति हुनक समृद्धिमे नहि छलनि, जेना कि किछु गोटय बुझैं छथि। हुनका प्रति लोकके अनुराग एहि हेतुएँ छलैक जे हुनक द्वार सभक हेतु खुजल रहैत छल आ हुनकामे एक सन्मित्रक वास्तविक गुण छलनि।

ललित नारायण जीक हत्या एहि बातकेँ उघार क' देलक जे हमरा लोकनिक देशमे कोना हिंसात्मक ओ फासिस्ट राजनीतिक तांडव भ' रहल

अछि जकरा गत कतोक वर्षसँ किछु हताश आ विध्वंसक शक्ति चला रहल अछि। हुनक हत्याक बादसँ देशमे जे घटना सभ भ' रहल अछि से एहि बातक साक्षी अछि जे देशमे अस्तव्यस्तता उत्पन्न करबाक हेतु तथा हमरालोकनिक गणतान्त्रिक ढाँचाकेँ अवनमित करबाक हेतु योजनाबद्ध रूपमे कोनो कुचक्र चलि रहल अछि।

श्री कमलापति त्रिपाठी—भूतपूर्व रेल-मन्त्री, भारत सरकार

ललितबाबू सुविख्यात राजनीतिज्ञ आओर प्रशासक तँ छलाहे, किन्तु हुनकामे सभसँ पैघ विशेषता छल हुनक आत्मीयता। ओ जकराहिसँ भेँट करैत छलाह, हृदय खोलिक' करैत छलाह। हुनक व्यवहार एतेक स्नेह पूर्ण आ निश्छल होइत छल जे प्रत्येक व्यक्ति हुनक एक मधुर स्मृति ल' क' विदा होइत छल।

डा० जगन्नाथ मिश्र—मुख्य मन्त्री, बिहार

हमर मानस-पटलपर ललितबाबूक जे छवि अंकित होइत अछि जो रहैत अछि एक देवोपम पुरुषक, सदा-सर्वदा हमरा हेतु अनुकम्पा आओर आशीर्वादक वरद हस्त उठओने।

श्री नसीरुद्दीन हैदर खाँ—श्रम मन्त्री, बिहार

हम स्व० ललितबाबूक स्मृतिमे नतमस्तक होइत छी, जे एक महान् राजनयिक द्रष्टा छलाह आ सच्चरित्रता एवं सामाजिकताक साकार मूर्ति छलाह। जँ क्रूर नियति हुनका किछुओ दिन आओर छोड़ि देने रहितनि तँ ई बिहारकेँ भारतक नक्शामे एक स्पृहणीय स्थान बना देने रहितथि। हिनक राजनैतिक प्रतिभा तथा सर्वव्यापी प्रेम भारतीय जनताक हृदयकेँ जीति लेने छल। हुनक समस्त जीवन दीन-दुखी जनताक कल्याण सम्बन्धी समस्या सभक समाधान खोजि निकालबामे समर्पित रहल।

स्व० फखरुद्दीन अली अहमद—भूतपूर्व राष्ट्रपति

नृशंस हिंसा एक अनन्त सम्भावना वाला व्यक्तिकेँ एकाएक समाप्त क' देलक।

श्री बंशीलाल—भूतपूर्व रक्षा-मन्त्री

श्री ललितनारायण मिश्र एक वास्तविक समाज सेवी छलाह। ओ अपन सिद्धान्तक खूब दृढ़तासँ पालन करैत छलाह। अर्थशास्त्रक विद्यार्थी होयबाक

कारण ओ भारतीय अर्थ-व्यवस्थाक समस्या सभकेँ गम्भीरतासँ बुझैत छलाह आ समाजवादी ढंगसँ ओकरा सोझरयबाक उपाय हुनका परिलक्ष पड़ैत छलनि।

मोहम्मद शफी कुरैशी – भूतपूर्व रेल राज्यमन्त्री

ललितबाबूक अपन वैयक्तिक जीवन एकदम सन्त-महात्मा सन छल, किन्तु हुनक हृदय महान् समृद्ध छल। किछु गोटाकेँ ई दुर्धारणा होयतनि जे ललितबाबू धन सम्पत्ति वाला लोक छल होयताह। किन्तु हुनका तँ एकेटा खजाना छलनि—प्रेम आ मोहब्बतक खजाना, जकरा ओ दुनू हाथेँ हृदय खोलिक' बँटैत-बँटैत चल गेलाह, किन्तु हुनक ओ खजाना खाली नहि भेल।

श्री रमेश झा—कृषिमंत्री, बिहार

जीवनमे जे किछु ललित ओ ललाम अछि, ललितबाबू ओहि सभक मूर्तिमान स्वरूप छलाह तथा एहि अर्थमे हुनक नाम बहुत सार्थक छल। राजनीतिक ओ कर्ण छलाह आओर मित्रक कोन कथा, शत्रुओ कहिओ हुनक द्वारसँ खाली हाथ नहि घुरल।

श्री राधानन्दन झा—अध्यक्ष, बिहार विधान-सभा

राजनीतिक क्षितिजपर ललित बाबू मिथिला-मार्तण्डक रूपमे उदित भेल छलाह आओर हुनक रश्मि क्रमशः अखिल भारतीय स्तरपर विकीर्ण भ' गेल।

श्री सुनील दत्त—नेता, अभिनेता ओ साहित्यकार

अतीतक पृष्ठ उघारैत छी तँ ललितनारायण जी, जनिका राजनीतिक क्षेत्रक लोक बड़ स्नेह आ' आदरसँ ललितबाबू कहैत छलथिन, अपन प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं मस्ती-भरल ठहाकाक संग आँखिक समक्ष नाचि जाइत छथि। हुनक वार्तालापमे सादगी आ व्यवहारमे बड़ आत्मीयता छल। हुनक साक्षात होइतहिँ केओ व्यक्ति प्रभावित भ' उठैत छल। जे वचन ओ दैत छलाह तकर पालन ओ अवश्य करैत छलाह—इएह हुनक सबसँ पैघ विशेषता छल आओर एही कारणेँ, नेता होथु वा संसद-सदस्य, अध्यापक होथु वा समाजसेवी, प्रातःकालहिसँ हुनक अकबर रोड स्थित निवासपर आवय लगैत छलाह आ साँझ तक जमल रहैत छलाह।

श्री हरिनाथ मिश्र—भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार विधान-सभा, सम्प्रति केन्द्रीय राज्यमन्त्री

ललितबाबू अपन योग्यता एवं कर्मठताक बलें भारतीय राजनीतिमे एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त क' लेने छलाह। ओ एक लोकप्रिय नेता आओर प्रशासनक शक्तिशाली स्तम्भ छलाह।

(ख) साहित्यकार लोकनि

डा० राजकिशोर कक्कड़—सदस्य, रेल हिन्दी सलाहकार समिति

हुनक दुःखद अन्त ग्रीक दुखान्त नाटकक महानायकक रूपमे भेलनि, जनिक अन्त भय तथा करुणा भावक प्रेरक होइत छल आओर चरित्रक सज्जनता तथा मूलभूत सद्गुणे जनिक अन्तक कारण होइत छल। हुनको महाप्रयाण किछु एहने-सन छल। एहि युगक इतिहासमे हुनक बलिदानक निश्चित एक महत्त्वपूर्ण स्थान रहत।

श्री राजेन्द्र अवस्थी—सम्पादक, 'कादम्बिनी'

ललितबाबू एक योग्य प्रशासक छलाह। जाधरि ओ जिबैत रहलाह, बिहारक सकल राजनीति हुनके संकेतसँ संचालित होइत रहल। दिल्लीमे रहितहुँ बिहारक जनताकें ओ ककरो अनका जिम्मा नहि छोड़ि देलनि। राजधानीमे हुनक व्यस्तता हुनक मित्र एवं हितैषीलोकनि निकें ना जनैत छथि। कार्य करबाक हुनक क्षमताक साक्षी हुनक कार्यालयक कर्मचारी अछि। जे निर्णय लेबाक होइन, ओ तत्काल लेलनि।

डा० वचनदेव कुमार—हिन्दी विभागाध्यक्ष, राँची विश्वविद्यालय

ललितबाबू अयाची ब्राह्मण छलाह, किन्तु जे केओ हुनक सम्मुख याचना करय आयल, ओकरा निराशा नहि भेटलैक। हम परमात्मासँ याचना करैत छी जे ललितबाबूक व्यक्तित्वसँ विस्फुरित होअऽबाला दिव्यरश्मि हमर पथकें सदा आलोकित करैत रहय।

श्री शंकर दयाल सिंह—भूतपूर्व संसद सदस्य

सत्ये आइ ललितबाबू नहि रहलाह, किन्तु हुनक जीवन्तता, हुनक विशाल-हृदयता, हुनक मृदु स्वभाव एवं सभकें मदति करबाक हुनक अपन वृत्ति केओ बिसरि नहि सकैत अछि।

श्री शिवसागर मिश्र—निदेशक, राजभाषा एवं औद्योगिक प्रचार, रेल मन्त्रालय

ललितबाबू देवता नहि मानवोचित मूल्यसँ सम्पन्न पूर्ण मानव छलाह। सम्पर्क एवं साहससँ सम्पृक्त एक एहन आस्थावान् पुरुष छलाह, जनिक आस्थाक दीप आइ मृत्युक झंझावातकेँ पाबिओक' प्रदीप्त अछि।

श्री श्यामनन्दन किशोर—भूतपूर्व कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय

ललितबाबू जीलाह तँ अद्‌भुत, मुइलाह तँ अद्‌भुत। 'जीलाह तँ दानवीर जेकाँ, मुइलाह तँ दानवीर जेकाँ। केवल जीवनहिकेँ नहि, मृत्युकेँ सेहो ओ किछु द' गेलाह। ललितबाबूक जीवनक ग्राफमे उतार तँ छले नहि—प्रगतिक शिखरपर चढ़ैत-चढ़ैत ओ आकाशमे लीन भ' गेलाह।

(ग) पत्रकार-लोकनि

श्री अक्षय कुमार जैन—सम्पादक, नवभारत टाइम्स

श्री ललितनारायण मिश्रमे जतय मिथिलाक शान्ति आओर कोशीक उग्रता छल, ओतहि चाणक्यक राजनैतिक कुशलता सेहो विद्यमान छल। ओ जाहि कोनो काजमे हाथ लगओलनि, तकरा सफलताक चरम बिन्दुपर पहुँचा देलनि।

श्री आर० के० करंजिया—सम्पादक, ब्लिट्ज, बम्बइ

ललितबाबू अपन प्रगतिशील आस्था तथा वामपंथी राजनीतिक हेतु विख्यात छलाह। ओ सरकारक समाजवादी आदर्श तथा भारत सोवियत सहयोगक सभसँ बेसी समर्थक छलाह। जहिया ओ गृह-उपमन्त्री छलाह आ' खुफिया विभाग हुनक हाथमे छलनि, तहिया ब्रिटिश अमेरिकी सूत्र हुनका लोभयबाक प्रयास कयलक, किन्तु ओ तकरा ठोकरा देलनि।

(घ) शिक्षाविद् ओ विद्वानलोकनि

श्री निर्मल कुमार चौधरी—भूतपूर्व अध्यक्ष, बिहार वर्किंग जर्नलिस्ट यूनियन

Lalit Narayan Mishra may be dead, but he has left a legacy of noble and enduring spirit purified by hard and honest work as also sufferings beqeathing to his friends and followers as also his countrymen in calamity and distress, the undying

mexims of sweet morality which sustained him to stand up against all the travails and trauma of the life of a political leader ·

प्रो॰ अमृतधारी सिंह—मैनेजिंग डाइरेक्टर, हथुआ मेटल्स तथा डाइरेक्टर एच॰ ई॰ सी॰, राँची

Lalit was religious and spiritual to the core. Only a few days before he was to proceed to Samastipur, he mentioned to me at Delhi, "Babu Saheb, I am praying to the God to call me in His service. This world is not worth living." His eyes were full of tears. I told him to do his duty and not to bother for the result. He faced death as boldly as he faced life. His death made him immortal. He has become a liberated soul. May God bless him.

डा॰ जयमन्त मिश्र—कुलपति, का॰ द॰ संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

कुलीन वंशमे उत्पन्न ललितबाबू वस्तुत: आदर्श पुरुष छलाह। ओ जेहने धीर छलाह तेहने सुधी, जेहने मनीषी छलाह तेहने क्रियावान पुरुषार्थी। जे सत्संकल्प लैत छलाह से पूरा कैए क' छोड़ैत छलाह।

डा॰ रामकरण शर्मा – भूतपूर्व कुलपति, का॰ द॰ संस्कृत विश्वविद्यालय

माँ मैथिली एहन सुपुत्र (ललित बाबू)केँ उत्पन्न क' ने केवल मिथिला अपितु समस्त भारतकेँ गौरवान्वित कयलनि। हुनक सुकीर्तिलताक कथा वर्णनातीत अछि।

डा॰ शालिकनाथ मिश्र—कुलसचिव, पटना विश्वविद्यालय

ललित बाबूक जीवन जेहन ज्योतिर्मय छल, हुनक व्यक्तित्व-कृतित्व जेहन प्रेरक, प्रेरणापूरक छल, तेहने हुनक स्मृति-स्तम्भ आइ मिथिला-विश्वविद्यालयक संग नाम सम्बद्ध भ' युग-युगक हेतु उल्लेखित-आरोपित भेल अछि।

———

ललितनारायण मिश्रक जीवनक प्रमुख घटना-क्रम

१९२३ : २ फरवरी (वसन्त पंचमी) दिन जन्म : अपन मातृक कुमर बाजितपुर (जिला वैशाली)मे।

१९२८-४९ : शिक्षा : प्राथमिक—मातृकमे। माध्यमिक—विलियम हाइ स्कूल, सुपौल (जिला सहरसा)मे। उच्च शिक्षा—चन्द्रधारी मिथिला कलेज, दरभंगा : टी० एन० बी० कालेज, भागलपुर, तथा पटना विश्वविद्यालय, पटना।

१९४१ : बिहार प्रान्तीय कांग्रेसक संगठन कयलनि।

१९४१-४२ : कारावासक दंड भोगलनि।

१९४२ : स्वतन्त्रता-संग्राममे पयरमे गोली लगलनि।

१९४८-४९ : पटनामे बिहारक पहिल 'इकोनामिक कन्फरेन्स' आयोजित कयलनि।

१९४८-४९ : पटना विश्वविद्यालयक सीनेटक सदस्य भेलाह।

१९५० : प्रथम-प्रथम अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य-समितिक सदस्य निर्वाचित भेलाह।

१९५२ : लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह।

१९५४ : तत्कालीन प्रधान मन्त्री पं० जवाहरलाल नेहरू तथा बिहारक मुख्य मन्त्री डा० श्रीकृष्णसिंहकें कोशी क्षेत्रक निरीक्षण करओलनि।

१९५४-५७ : भारत-सेवक-समाजक जन-सहयोग कार्यक प्रभारी रहलाह।

१९५५-५६ : प्राक्कलन-समितिक सदस्य बनाओल गेलाह।

१९५६-५७ : लघु बचतक राष्ट्रीय परामर्श-समितिक सदस्यता प्रदान कयल गेलनि।

१९५५ : कोशी योजनाक श्रीगणेश करओलनि ।

१९५७ : दोसर बेर लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह, तथा केन्द्रीय योजना, श्रम एवं नियोजनक संसदीय सचिव नियुक्त भेलाह ।

१९६० : श्रम, योजना एवं नियोजन विभागक उपमंत्री बनाओल गेलाह ।

□ जेनेवामे आयोजित 'अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संगठन'क ४२म अधिवेशनमे भाग लेलनि ।

□ कोइला एवं लौह-उद्योगक विषयमे औद्योगिक सम्बन्धक अध्ययन हेतु अमेरिकाक यात्रा कयलनि ।

१९६२-६४ : नेशनल प्रोजेक्ट कंस्ट्रक्शन कारपोरेशन लिमिटेडक अध्यक्ष रहलाह ।

□ भारत सेवक समाजक सचिव रहलाह ।

□ भारतीय लौह कामगर फेडरेशनक सचिव बनाओल गेलाह ।

□ 'कांग्रेस फोरम' पत्रिकाक सम्पादक रहलाह ।

□ केन्द्रीय गृह मन्त्रालयमे उपमंत्री नियुक्त गेलाह ।

□ राज्य सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।

१९६६ : राज्य-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह । वित्त-मन्त्रालयक उपमन्त्री बनाओल गेलाह । कोलम्बो प्लान कान्फरेन्समे भाग लेबाक हेतु करांची गेलाह ।

१९६७ : अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-संघटनक प्रशासी निकायक अधिवेशनमे भाग लेबाक हेतु पुनः जेनेवा-यात्रा कयलनि ।

□ १३ मार्चके केन्द्रीय श्रम-मन्त्रालयमे राज्यमन्त्री बनाओल गेलाह ।

□ १५ नवम्बरके रक्षा-उत्पादन मन्त्रालयमे अयलाह ।

१९७० : भारत सरकारक विदेश-व्यापार-मन्त्री भेलाह ।

१९७१ : दरभंगा क्षेत्रसँ लोक-सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह ।

१९७२ : 'एसिया ७२'क नामसँ एसिया औद्योगिक मेलाक आयोजन कयलनि ।

□ अखिल भारतीय कांग्रेस कार्य-समितिक सदस्य निर्विरोध निर्वाचित भेलाह।

१९७३-७४ : ५ फरवरी ७३ क' कैबिनेट स्तरक रेल मन्त्री बनाओल गेलाह।

□ एशिया, यूरोप तथा अमेरिकाक विभिन्न देशक यात्रा कयलनि।

□ सतहत्तरि विकासशील देशक संयुक्त बैसकमे भाग लेबाक हेतु लीमा तथा पेरू गेलाह।

□ स्वदेशहितार्थ सोवियत यूनियन, रूस, युगोस्लाविया, रूमानिया, हंगरी, स्विटजरलैंड, अमेरिका, हांगकांग, बेल्जियम आदि अनेक देशक यात्रा कयलनि।

१९७५ : ३ जनवरीकें महाप्रयाण कयलनि।

मिथिला-विभूति ललितनारायण मिश्रक सम्बन्धमे प्रकाशित साहित्यक सूची

१. **ललित-चित्रावली**—५५म जयन्ती १९७७क अवसरपर कमलायन प्रकाशन, चाणक्यपुरी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित। आकार २२×२८ सेन्टीमीटर; पृ० ८८; चित्रसँ ९३। दिल्ली १९७७; मूल्य २५ रु०।

२. **युगपुरुष : ललित बाबू**—सम्पादक धीरेन्द्र-महेन्द्र; प्रकाशक ललित नारायण मिश्र स्मारक समिति, सहरसा; प्रथम संस्करण १९७७ ई०; आकार १४×२२ सेन्टीमीटर; पृ० १०+६२; चित्र ४; मूल्य २ रु०। गद्य-पद्यमे शोकोद्गार ओ संस्मरण।

३. **नीलकंठ ललित नारायण मिश्र**—सम्पादक शिवशंकर सिंह; प्रगतिशील प्रकाशन, अशोक राजपथ, पटना-६; आकार १४×२२ सेन्टीमीटर, प्रथम संस्करण, १९८१; पृ० ८०; मूल्य १५ रु०।

४. **ललित स्मृतिग्रन्थ**—सम्पादक श्री पुरुषोत्तम झा आदि। प्रकाशक मिथिला विकास संघ, सुन्दरपुर, दरभंगा, १९७७; आकार १४× २४ सेन्टीमीटर; पृ० १०+८०+८ (=९८); चित्र ८; मूल्य १५ रु०।

५. **स्मारिका : ६०वीं जयन्ती समारोह**—प्रकाशक भारतीय कला मंच, पटना १९८२; आकार १९×२५ सेन्टीमीटर; पृ० ८+५६+४० (=१०४); चित्र २८; मूल्य—(?)।

६. **दशा-दिशा : ललित जयन्ती अंक**—प्रधान सम्पादक शिवशंकर सिंह, सम्पादक रमेश गौड़; प्रकाशक शैलेन्द्र कुमार चौधरी, प्रगतिशील प्रेस, अशोक राजपथ, पटना-६; प्रकाशन वर्ष—(?); आकार १९×२५ सेन्टीमीटर; पृ० ६६+३६; चित्र १७; मूल्य (?)।

७. भारतीय रेल : ललित नारायण स्मृति अंक—वर्ष १६, अंक ६; जनवरी १९७६। सम्पादक महेन्द्रनाथ बेरी, अध्यक्ष, रेलवे बोर्ड आदि। प्रकाशक संयुक्त निदेशक, जनसम्पर्क, रेलवे बोर्ड, रायसीना रोड, नई दिल्ली। आकार २२ × २८ सेन्टीमीटर; पृष्ठ ८०; चित्र ४४; मूल्य २ रु०।

८. मिथिलापर पुनः वज्रपात—पैम्फलेट, मुद्रक कोशी प्रेस, वीरपुर (सहरसा)। ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसँ ललितबाबूक नाम हटयबाक सम्बन्धमे देशक कोन-कोनमे व्यक्त आक्रोशक चयनिका। १९७७। आकार १४ × २२ सेन्टीमीटर; पृ० ३२।

९. Lalit Narayan Mishra Commemoration Volume. of the Journal of the Bihar Research Society, Patna (1977-1978) Chief Editor—Prof. Upendra Thakur. Editor-in-charge—Dr. K. K. Mandal. Published by the Bihar Research Society, Patna. Size—18 × 24 cms pp. 888 + XVI, Illustrations—18 plts. Price—Rs. 150. Year of Publication 1983.

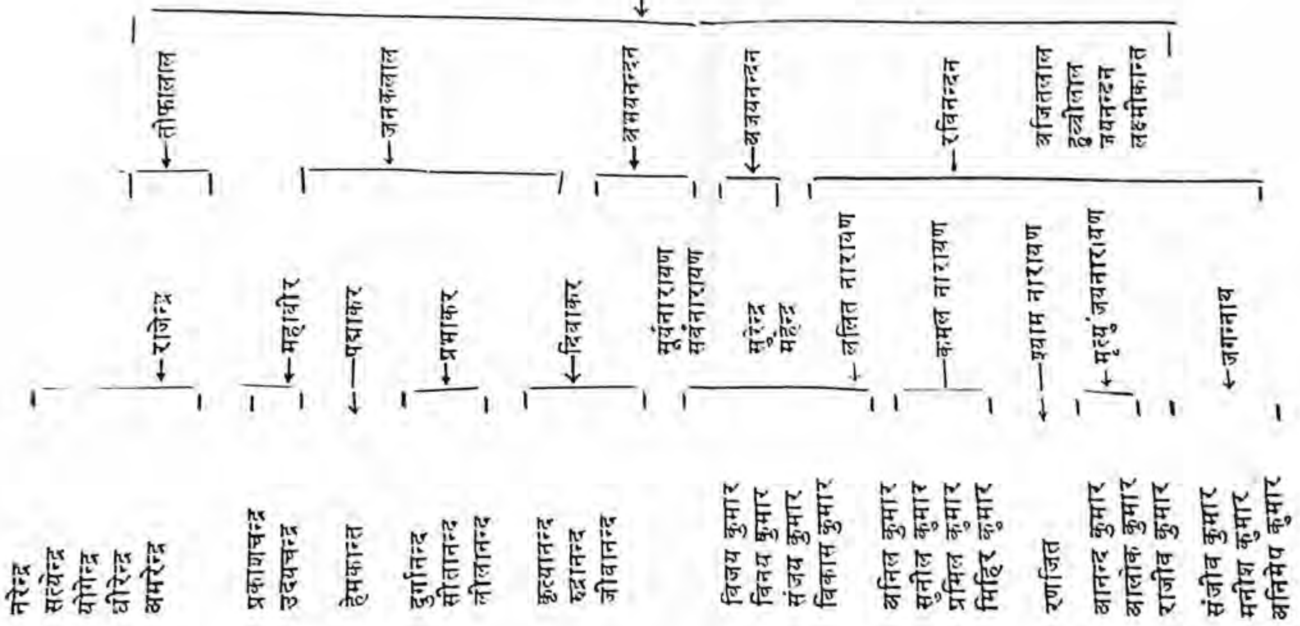
——

परिशिष्ट—५

ललितनारायण मिश्रक कुलवृक्ष

हलायुध (बीजी पुरुष, मूल सिहासम) > महोदधि > जाएक > महाधुर > गाऊ > वागीश्वर > म० म० रत्नेश्वर > म० म० सुरेश्वर (मूल सोदरपुर) > म० म० विश्वनाथ > म० म० रविनाथ > म० म० जीवनाथ > थेघ > राघव > पशुपति > हरिहर > बदली > गोविन्द > चेतन हीभरन > शूलपाणि > रमानाथ।

ज्ञातव्य जे जीवनाथ मिश्र ओ अयाची प्रसिद्ध भवनाथ मिश्र, (म म० शंकर मिश्रक पिता) सोदर छलाह। जीवनाथ मिश्रक सन्ततिमे ललित बाबू अबैत छथि। एतहिसँ सोदरपुर मूल दू शाखामे विभक्त भेल—सोदरपुर दिगोन ओ सोदरपुर सरिसव।



परिशिष्ट—६

ललितनारायण मिश्रक नामसँ गौरवान्वित कतोक संस्था, नगर ओ मन्दिर

१ ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।

२. ललित नारायण मिश्र इन्स्टिच्यूट आफ बिजिनेस मैनेजमेंट, मुजफ्फरपुर।

३. ललितनारायण मिश्र इन्स्टिच्यूट आफ इकनामिक डेभलपमेंट एंड, सोशल चेंज, पटना।

४. ललितनारायण मिश्र महाविद्यालय, झंझारपुर, जिला मधुबनी।

५. ललितनारायण मिश्र स्मारक महाविद्यालय, ललितनगर (वीरपुर), जिला सहरसा।

६. ललितनारायण मिश्र इन्स्टिच्यूट आफ मेडिकल साइन्स, अगमकुआँ पटना (आब नालन्दा चिकित्सा महाविद्यालय, पटनाकें अन्तरित)।

७. ललितनारायण-चिकित्सालय, बसानपट्टी, सहरसा।

८. ललितेश्वरनाथ शिवमन्दिर, खड्गपुर झील, मुंगेर।

९. ललितेश्वर महादेव-मन्दिर, अन्धरा-ठाढ़ी, मधुबनी।

१०. ललितनारायण चिकित्सालय, ललितनगर (वीरपुर), सहरसा।

११. ललितनारायण होम फॉर होमलेस, ललितनगर (वीरपुर) सहरसा।

१२. ललित ग्राम रेलवे स्टेशन।

१३. ललित-समाधि, बलुआ बजार।

१४. ललित नारायण मिश्र स्मारक सरस्वती मन्दिर, बलुआ बजार, सहरसा।

१५. ललित नारायण मिश्र विद्या मन्दिर, बलुआ बजार।

१६. ललितेश्वर शिवमन्दिर, ललित बाबूक समाधि पर, बलुआ बजार।

१७. ललित नगर (वीरपुरक नव नाम)।

१८. मिथिला ललित संग्रहालय सह-शोध-संस्थान, सौराठ।

१९. ललित नगर भवन, त्रिभुवन पार्क, दानापुर, पटना।

२०. ललित स्टेडियम, सहरसा।

२१. ललित लक्ष्मीपुर हाल्ट, राजनगर एवं खजौलीक बीचमे, मधुबनी।

२२. ललित नारायण कन्या उच्च विद्यालय, गनपतगंज, सहरसा।

२३. ललित नारायण कन्या उच्च विद्यालय त्रिवेनीगंज, सहरसा।

२४. ललित नारायण विज्ञान महाविद्यालय, त्रिवेनीगंज, सहरसा।

२५. ललित नारायण द्वार, पिपरा बाजार, सहरसा।

२६ ललित नारायण द्वार, उदाकिसुनगंज, मधेपुरा।

२७. ललित नारायण कला मंच, उदाकिसुनगंज, मधेपुरा।

२८. ललित नारायण नगर भवन, सहरसा।

